बालभारती हीरक महोत्सव

हमारे आस-पास का संसार

भाग २

तीसरी कक्षा

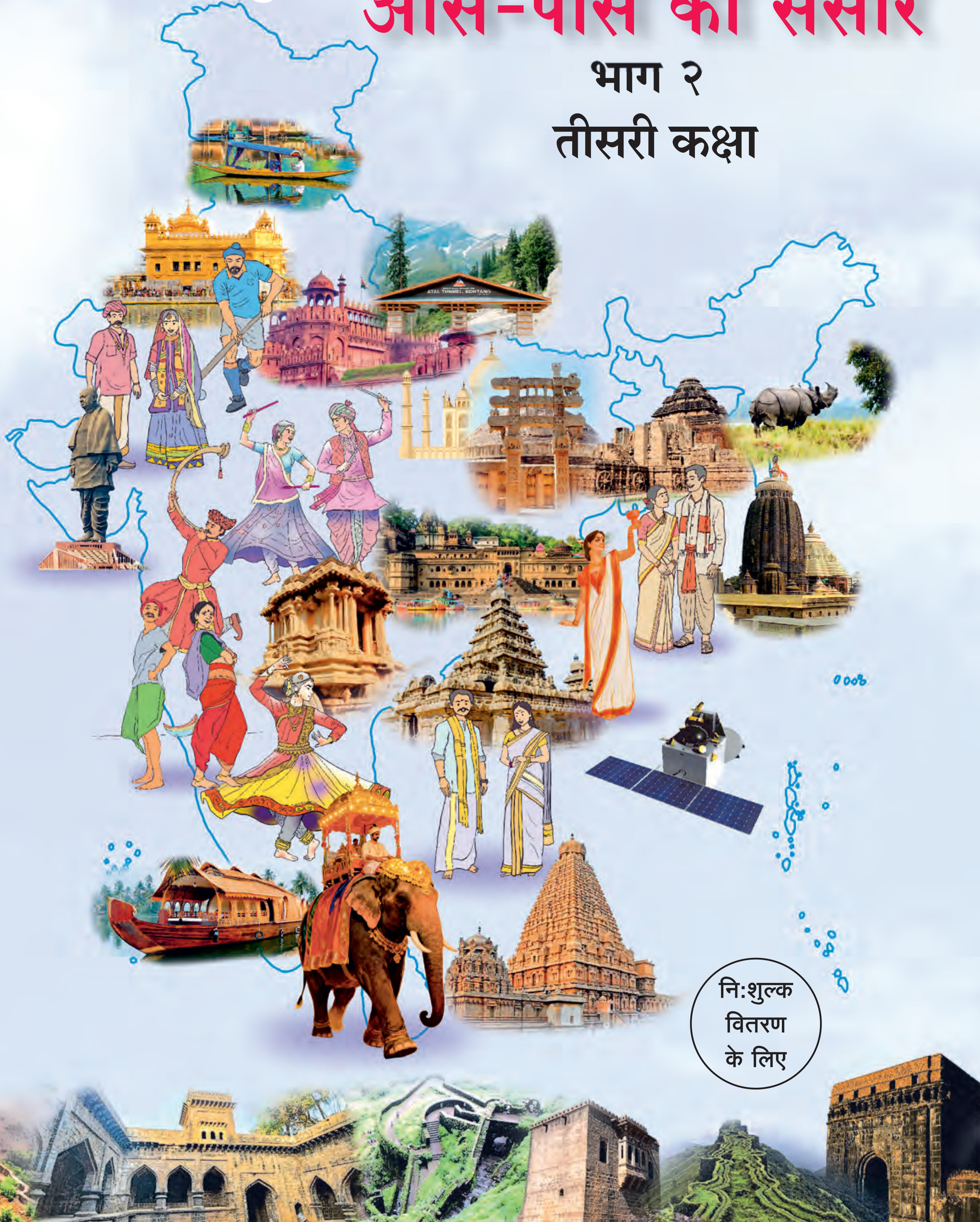

निःशुल्क वितरण के लिए

टेली मानस हेल्पलाइन

Tele MANAS (Tele Mental Health Assistance and Networking Across States)

(१४४१६/१८००-८९-१४४१६)

राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम के अंतर्गत केंद्र द्वारा प्रायोजित योजना 'टेली मानस' महाराष्ट्र राज्य में अक्तूबर २०२२ से कार्यान्वित की गई है। 'टेली मानस' कार्यक्रम के अंतर्गत हेल्पलाइन नंबर १४४१६ द्वारा निःशुल्क एकात्मिक और सर्वसमावेशक मानसिक स्वास्थ्य सेवा २४x७ प्रदान की जाती है। इसमें विविध मानसिक समस्याओं के लिए विशेषज्ञों द्वारा उपचार और समुपदेशन किया जाता है। 'टेली मानस' हेल्पलाइन पर आपके द्वारा दी गई जानकारी को पूर्णतः गोपनीय रखा जाता है। इस कारण विद्यार्थी अपनी समस्याएँ हेल्प लाइन नंबर पर कॉल करके निःसंकोच बताएँ। तथा मन में उत्पन्न किसी भी शंका के संबंध में पूछकर उसके निराकरण और अपनी समस्या से संबंधित मार्गदर्शन प्राप्त करें और अन्य लोगों को भी इस सुविधा का लाभ उठाने हेतु प्रोत्साहित करें।

मनोदर्पण

शिक्षा मंत्रालय द्वारा राष्ट्रीय शैक्षणिक संशोधन व प्रशिक्षण परिषद के अंतर्गत जुलाई २०२० से मनोदर्पण (८४४८४४०६३२) हेल्पलाइन की निःशुल्क दूरध्वनि सेवा आरंभ की गई है। यह सुविधा विद्यार्थियों, अभिभावकों एवं शिक्षकों के लिए मनोवैज्ञानिक मार्गदर्शन तथा सहायता प्रदान करने हेतु प्रतिदिन प्रातः ८ बजे से संध्या ८ बजे की कालावधि में उपलब्ध कराई गई है। विद्यार्थी, अभिभावक एवं शिक्षक हेल्पलाइन पर संपर्क करके मार्गदर्शन एवं समुपदेशन प्राप्त कर सकते हैं।

प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक राज्य शैक्षणिक संशोधन व प्रशिक्षण परिषद, महाराष्ट्र, पुणे निर्मित पाठ्यचर्या एवं पाठ्यक्रम के अनुसार तैयार करके उनके द्‌वारा पाठ्यपुस्तक की जाँच की गई है। शासन निर्णय क्रमांक : अभ्यास–२११६/(प्र.क्र.४३/१६) एसडी–४ दिनांक २५.०४.२०१६ के अनुसार समन्वय समिति का गठन किया गया। दि. ०१.०४.२०२६ को हुई इस समिति की बैठक में यह पाठ्यपुस्तक निर्धारित करने हेतु मान्यता प्रदान की गई है।

हमारे आस–पास का संसार

भाग २

तीसरी कक्षा

समग्र शिक्षा

महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे – ४११ ००४

चौखट में दिए गए Q.R.Code को स्मार्ट फोन द्‌वारा स्कैन करने पर तुम्हें डिजिटल पाठ्यपुस्तक एवं पाठ्यपुस्तक में दिए घटकों से संबंधित दृक, श्राव्य एवं दृकश्राव्य रूप में अध्ययन–अध्यापन सामग्री भी उपलब्ध होगी।

प्रथमावृत्ति : २०२६

© महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे ४११ ००४.
इस पुस्तक का सर्वाधिकार महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के अधीन सुरक्षित है। इस पुस्तक का कोई भी भाग महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के संचालक की लिखित अनुमति के बिना प्रकाशित नहीं किया जा सकता।

इतिहास समिति

डॉ. गणेश राऊत (अध्यक्ष)
डॉ. मंजिरी भालेराव (सदस्य)
श्री बापूसाहेब शिंदे (सदस्य)
श्री वैजनाथ काळे (सदस्य)
श्री सुभाष राठोड (सदस्य)
सौ. उषा खोपडे (सदस्य)
श्री विजयकुमार इंगवले (सदस्य)
श्रीमती पल्लवी घरणीकर (सदस्य)
श्री रामकुमार राय (सदस्य)
श्री नागेश शिंगणे (सदस्य)
श्री रविंद्र भापकर (सदस्य)
श्री संतोष तळेकर (सदस्य)
श्री नितीन बडे (सदस्य)
श्री राजन गरुड (सदस्य)
श्री निलेश पोरे (सदस्य)
श्री सुनिल मेश्राम (सदस्य)
श्री हनुमंत जाधव (सदस्य)
कु प्राजक्ता अंबुलकर (सदस्य)
श्री दत्तात्रय चौधरी (सदस्य)
डॉ सदानंद डोंगरे (सदस्य)
श्री रामदास ठाकर (सदस्य)
श्रीमती मनिषा सोनवणे (सदस्य)
डॉ. सोमनाथ रोडे (निमंत्रित)
श्री मोगल जाधव (निमंत्रित)
श्री अरूण जाधव (अभ्यासक्रम समन्वयक)
श्री रामेश्वर लोटके (अभ्यासक्रम समन्वयक)
सौ. वर्षा सरोदे (सदस्य सचिव)

गाभा समिति सदस्य

डॉ. महेश्वर कळलावे
श्री मोहन शेटे
श्री प्रशांत दिवेकर
श्रीमती प्रतिमा गुप्ते

समीक्षक

डॉ. सदानंद मोरे (गुणवत्ता परीक्षक)
डॉ. निता बोकील (गुणवत्ता परीक्षक)
ॲड. श्रीकांत दळवी (विधि तज्ञ)
डॉ. शर्मिष्ठा ओक (CWSN तज्ज्ञ)

लेखक

श्रीमती इंद्रायणी चव्हाण
डॉ. गायत्री लेले

संयोजन

श्रीमती वर्षा सरोदे
(प्र. विशेषाधिकारी)
इतिहास व नागरिकशास्त्र, पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे

नागरिक शास्त्र समिति

डॉ. संज्योत आपटे (अध्यक्ष)
प्रा. राजेंद्र भोईवार (सदस्य)
श्री इरफान सय्यद (सदस्य)
डॉ. नागनाथ येवले (सदस्य)
श्री विक्रम अडसूळ (सदस्य)
श्री राजेंद्र टेकाडे (सदस्य)
श्रीमती रोहिणी गव्हाणे (सदस्य)
डॉ. अशोक बांगर (सदस्य)
श्रीमती भारती औटी (सदस्य)
श्री श्यामकांत रुले (सदस्य)
श्री चांदखान पठाण (सदस्य)
श्री नागनाथ विभूते (सदस्य)
श्री आकाश झाडे (सदस्य)
श्री विनोद अवरादी (सदस्य)
श्री श्रीनिवास मोरे (सदस्य)
श्रीमती स्पृहा इंदू (सदस्य)
श्री अनिल राजगुरू (सदस्य)
श्री प्रमोद वाघमोडे (सदस्य)
डॉ. परिमल सुधाकर (निमंत्रित)
डॉ. विराज महाजन (निमंत्रित)
डॉ. अजिंक्य गायकवाड (निमंत्रित)
प्रा. वीणा केंची (सदस्य)
श्रीमती वर्षाराणी भोपळे (अभ्यासक्रम समन्वयक)
सौ. वर्षा सरोदे (सदस्य सचिव)

हिंदी भाषांतर संयोजन

डॉ. अलका पोतदार
विशेषाधिकारी हिंदी भाषा (वि.का)

भाषांतरकार : प्रा. शशि निघोजकर
समीक्षण : प्रा. मैनोदीन मुल्ला

मुखपृष्ठ एवं चित्रकार : श्री देवदत्त बलकवडे
अक्षरांकन : मुद्रा विभाग, पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे
कागज : ७० जी.एस.एम.क्रीमवोव
मुद्रणादेश :
मुद्रक :

निर्मिति

श्रीमती मिताली शितप
प्र. मुख्य निर्मिति अधिकारी

श्री शशांक कणिकदळे
निर्मिति अधिकारी

प्रकाशक

श्री हेमंत बाबर
प्र. नियंत्रक
पाठ्यपुस्तक निर्मिती मंडळ, प्रभादेवी, मुंबई - २५

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक **संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य** बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**
विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म
और उपासना की **स्वतंत्रता,**
प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,
तथा उन सब में

व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता
और अखंडता सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) **को एतद् द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं ।**

भारत का संविधान

भाग ४ क

मूल कर्तव्य

अनुच्छेद ५१ क

मूल कर्तव्य- भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह -

(क) संविधान का पालन करें और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करें;
(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करें;
(ग) भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करें और उसे अक्षुण्ण रखें;
(घ) देश की रक्षा करें और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करें;
(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करें जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर अधारित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करें जो स्त्रियों के सम्मान के विरुद्ध है;
(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्त्व समझे और उसका परिरक्षण करें;
(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करें और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखें;
(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करें;
(झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखें और हिंसा से दूर रहें;
(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करे जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू लें;
(ट) यदि माता-पिता या संरक्षक है, छह वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयुवाले अपने, यथास्थिति , बालक या प्रतिपाल्य के लिए शिक्षा के अवसर प्रदान करें ।

राष्ट्रगान

जनगणमन - अधिनायक जय हे
भारत - भाग्यविधाता ।
पंजाब, सिंधु, गुजरात, मराठा,
द्राविड, उत्कल, बंग,
विंध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा,
उच्छल जलधितरंग,
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिस मागे,
गाहे तव जयगाथा,
जनगण मंगलदायक जय हे,
भारत - भाग्यविधाता ।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय, जय हे ।।

प्रतिज्ञा

भारत मेरा देश है । सभी भारतीय मेरे भाई-बहन हैं ।

मुझे अपने देश से प्यार है । अपने देश की समृद्ध तथा विविधताओं से विभूषित परंपराओं पर मुझे गर्व है ।

मैं हमेशा प्रयत्न करूँगा/करूँगी कि उन परंपराओं का सफल अनुयायी बनने की क्षमता मुझे प्राप्त हो ।

मैं अपने माता-पिता, गुरुजनों और बड़ों का सम्मान करूँगा/करूँगी और हर एक से सौजन्यपूर्ण व्यवहार करूँगा/करूँगी ।

मैं प्रतिज्ञा करता/करती हूँ कि मैं अपने देश और अपने देशवासियों के प्रति निष्ठा रखूँगा/रखूँगी । उनकी भलाई और समृद्धि में ही मेरा सुख निहित है ।

राज्यगीत

जय जय महाराष्ट्र माझा, गर्जा महाराष्ट्र माझा
जय जय महाराष्ट्र माझा, गर्जा महाराष्ट्र माझा ।।धृ।।

भिती न आम्हा तुझी मुळी ही गडगडणाऱ्या नभा
अस्मानाच्या सुलतानीला जबाब देती जिभा
सह्याद्रीचा सिंह गर्जतो शिव शंभू राजा
दरी दरीतून नाद गुंजला महाराष्ट्र माझा
जय जय महाराष्ट्र माझा, गर्जा महाराष्ट्र माझा ।।१।।

काळ्या छातीवरी कोरली, अभिमानाची लेणी
पोलादी मनगटे खेळती, खेळ जीवघेणी
दारिद्र्याच्या उन्हात शिजला
निढळाच्या घामाने भिजला
देश गौरवासाठी झिजला
दिल्लीचे ही तख्त राखितो, महाराष्ट्र माझा
जय जय महाराष्ट्र माझा, गर्जा महाराष्ट्र माझा
जय जय महाराष्ट्र माझा ।।२।।

प्रस्तावना

प्रिय विद्यार्थियो,

इक्कीसवीं शताब्दी की प्रथम राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० के आधार पर महाराष्ट्र राज्य द्वारा तैयार किए गए पाठ्यक्रम के अनुसार इतिहास और नागरिक शास्त्र विषयों की पहचान करा देने वाली 'हमारे आस-पास का संसार भाग-२' पाठ्यपुस्तक आपके हाथों में सौंपते हुए हमें अत्यंत हर्ष हो रहा है। इस विषय का अध्ययन तुम पहली बार तीसरी कक्षा से करने जा रहे हो। इस विषय के अध्ययन द्वारा तुम्हारा तुम्हारे परिसर की विभिन्न बातों से नये रूप में परिचय होगा।

इस पाठ्यपुस्तक की पाठ्यसामग्री का आरंभ हमारे परिवार से होता है। तुम रिश्तेदार, सगे-संबंधी, अपने पड़ोसी और उसके बाद अपनी प्रिय पाठशाला के विषय में अधिक जानकारी प्राप्त करोगे। तुम्हारे परिसर में लगने वाले बाजार (हाट) के विषय में तुम जानकारी प्राप्त करने वाले हो। साथ ही; हमारी आवश्यकताओं-समस्याओं को समझोगे। जल का महत्त्व, बचत, परिसर में पाई जाने वाली ऐतिहासिक वास्तुएँ, परिवहन-संचार की सुविधाएँ, प्रकृति का रक्षण और संवर्धन की जानकारी भी तुम्हें प्राप्त होगी। हम भारत में रहते हैं; अतः यहाँ की परंपराओं, विविधताओं, समाज के महान व्यक्तियों, समाज सुधारकों के विषय में भी शिक्षा प्राप्त करेंगे।

पाठ्यपुस्तक की इस भूमिका को चित्ररूप में व्यक्त करने वाले मुखपृष्ठ पर भारत की विविधताओं को दर्शाने के लिए भारत के स्थूल मानचित्र का उपयोग किया गया है।

पाठ्यपुस्तक में दी गई विभिन्न कृतियों को करते समय तुम्हें विशेष आनंद प्राप्त होगा। इस पुस्तक में चर्चा, लेखन, चित्र निरीक्षण, समझेंगे, विचारों को समझना, अपने विचारों को रखना जैसी विविध कृतियों द्वारा सहज-सरल पद्धति से तुम इस विषय का परिचय प्राप्त करोगे। पाठ्यपुस्तक में आकर्षक चित्रों का समावेश किया गया है। इन चित्रों द्वारा भी पाठ्यसामग्री को समझने में सहायता प्राप्त होगी। इस पुस्तक में हँसते-खेलते हुए शिक्षण पर बल दिया गया है। तुम सभी का इस नये विषय के संसार में बहुत-बहुत स्वागत और तीसरी कक्षा के अध्ययन हेतु शुभकामनाएँ।

इतिहास और नागरिक शास्त्र समिति, लेखक, चित्रकार एवं छायाचित्रकार ने बहुत आस्था एवं परिश्रमपूर्वक यह पुस्तक तैयार की है। 'मंडळ' इन सभी को मनःपूर्वक धन्यवाद देता है।

पाठ्यपुस्तक की पाठ्यसामग्री और उद्देश्य के विषय में अभिभावक, विद्यार्थी एवं शिक्षक यदि कोई समस्या अनुभव करें तो पाठ्यपुस्तक मंडल को अवश्य सूचित करें।

पुणे

दिनांक : १९ एप्रिल २०२६

भारतीय सौर दिनांक : वैशाख शु. २, शके १९४८, अक्षय तृतीया

(अनुराधा ओक)
संचालक
महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे.

हमारे आस–पास का संसार भाग २

अ. क्र.	पाठ का नाम	पाठ्यक्रम क्षमताएँ	अध्ययन निष्पत्तियाँ	पृष्ठ क्रमांक
पाठ्यक्रम के उद्देश्य : CG–१ विद्यार्थियों के आस–पास के प्राकृतिक और सामाजिक–सांस्कृतिक वातावरण को खोजना और उस वातावरण में विद्यार्थियों को समायोजित कर रखना।				
१	**हमारा परिवार**	C – १.२ पारिवारिक और सामाजिक परस्पर संबंध (मनुष्य प्राणी/ प्रकृति) और परंपराओं (कला/पर्व–उत्सव) का वर्णन करता है।	• परिवार के विभिन्न प्रकार और स्वरूप को स्पष्ट कर रिश्ते–संबंध बताता है। i) पारिवारिक रिश्ते–संबंध स्पष्ट करता है। ii) परिवार के प्रकार और स्वरूप स्पष्ट करता है।	 १,२,३,५,६ २,३,४,५,६
२	**परिवार वंशवृक्ष**	C – १.५ स्थानीय संसाधनों का उपयोग कर स्वयं वस्तुओं का निर्माण (वंशवृक्ष, लिफाफे, कागजी प्राणी) अपने घर अथवा कक्षा की सजावट के लिए करता है।	• स्वयं के परिवार के वंशवृक्ष को स्पष्ट करता है।	७,८,९,१०
३	**मेरी पाठशाला**	C – १.४ स्थानीय संस्थाओं (परिवार, पाठशाला, बैंक, डाकघर, मार्केट और ग्रामपंचायत) के कार्यों को विभिन्न स्वरूप में (कहानी, चित्र, सारिणीयुक्त जानकारी, प्रतिवेदन) बताता है, विश्लेषण करता है और उनकी भूमिकाओं का विश्लेषण करता है।	• स्थानीय संस्थाओं के कार्य बताकर उनकी भूमिकाओं का विश्लेषण करता है। i) पाठशाला के कार्यों को स्पष्ट कर उनकी भूमिकाओं का विश्लेषण करता है।	११,१२,१३,१४, १५,१६,१७ ११,१२,१३,१४, १५,१६,१७
४	**बाजार (हाट)**	C – १.४ स्थानीय संस्थाओं (परिवार, पाठशाला, बैंक, डाकघर मार्केट और ग्रामपंचायत) के कार्य विभिन्न स्वरूप में (कहानी, चित्र, सारिणीयुक्त जानकारी, प्रतिवेदन) स्पष्ट करता है और उनकी भूमिकाओं का विश्लेषण करता है।	• बाजार (मार्केट) के कार्यों को स्पष्ट कर उनकी भूमिकाओं का विश्लेषण करता है।	१८,१९,२०,२१, २२,२३,२४,२५
पाठ्यक्रम के उद्देश्य : CG – १.६ विभिन्न स्रोतों द्वारा प्राप्त जानकारी का उपयोग अपने आस–पास के परिसर में पाए जाने वाले प्रश्नों के उत्तर खोजने के लिए करना। CG – ४ सामाजिक और प्राकृतिक परिसर के विषय में संवेदनशीलता विकसित करना। CG – ९ भारत के गौरवशाली इतिहास के महान व्यक्तियों के (विशेष रूप से महाराष्ट्र के संदर्भ में) जीवन कार्यों के बारे में अभिरुचि उत्पन्न करना। राष्ट्र निर्माण में उनके द्वारा दिए गए योगदान और सामाजिक परिवर्तन की भूमिका को स्पष्ट करना।				
५	**हमारी आवश्यकताएँ और समस्याएँ**	C – ४.३ आस–पास के वातावरण में पाए जाने वाले प्राकृतिक संसाधन के उपयोग का वर्णन करता है। C – ४.६ विभिन्न परिसर में लोगों की आवश्यकताओं को पहचानता है। जैसे–संसाधनों की उपलब्धता की शर्तें, समान अवसर, कार्य का विभाजन और आवास आदि C – ६.१ स्वतंत्र रूप में अथवा समूहों में विशिष्ट प्रश्नों की सामान्य रूप में पूछताछ करता है। C – ९.२ बुद्धिमानी, धैर्य और विवेक के कारण संकटों पर विजय पाई जा सकती है, इसे महान व्यक्तियों के चरित्रों द्वारा आत्मसात करता है।	• आस–पास के वातावरण में पाए जाने वाले प्राकृतिक संसाधन के उपयोग के विषय में जानकारी बताता है। • मानव की मौलिक आवश्यकताओं की सूची बनाकर उनका महत्त्व बताता है। • उपलब्ध संसाधन और कौशल के अनुसार लोगों में कार्यों का विभाजन होता है, यह बताता है।• परिसर के लोगों की समस्याओं और आवश्यकताओं को उचित प्रश्नों के माध्यम से समझता है और की जाने वाली उपाय योजनाएँ सुझाता है। • दिव्यांगों लिए सार्वजनिक स्थानों पर उपलब्ध कराई गईं सुविधाओं की जानकारी प्रश्नों के माध्यम से प्राप्त करता है। i) परिसर के लोगों की आवश्यकताओं और समस्याओं की सूची बनाकर उनका वर्गीकरण करता है। • बुद्धिमानी, धैर्य और विवेक के कारण संकटों पर विजय पाई जा सकती है, इस विषय में उदाहरण प्रस्तुत करता है।	२६,२७,२८, २९, ३० २६,२७,२८, २९, ३०,३३,३४ ३१,३२,३३,३४, ३५,३६ ३१,३२,३३,३४, ३५,३६ १३,१४,३२,३३, ३४,३५,३६,८३ २६,२८,२९ ३४,३६

६	**जल साक्षरता**	C – ९.३ महान व्यक्तियों के चरित्र द्वारा समता, त्याग, पर्यावरण रक्षण, जल साक्षरता आदि बातों का बोध प्राप्त करता है और उसके अनुसार आचरण करता है	• जल साक्षरता संकल्पना को समझता है और जल साक्षरता के संबंध में महान व्यक्तियों द्वारा किए गए कार्यों को समझता है और आचरण में उतारता है।	३७,३८,३९,४०, ४१,४२,४३
पाठ्यक्रम के उद्देश्य : CG–४ सामाजिक और प्राकृतिक परिसर के बारे में संवेदनशीलता विकसित करना। CG–२ परिसर में पाया जाने वाला परस्पर संबंध निरीक्षण और अनुभव द्वारा समझकर 'वसुधैव कुटुंबकम' संकल्पना का बोध करना। CG–६ विभिन्न स्रोतों द्वारा प्राप्त की गई जानकारी का उपयोग आस–पास के परिसर में उत्पन्न होने वाले प्रश्नों के उत्तर खोजने के लिए करना। CG–८ मानव उत्क्रांति के चरण और प्रत्येक चरण के सांस्कृतिक और सामाजिक परिवर्तनों का आकलन करना।				
७	**भारतीय परंपराएँ और सांस्कृतिक विविधता**	C – २.२ अपने आस–पास के प्राकृतिक पर्यावरण और सांस्कृतिक प्रथाओं के बीच के संबंधों (कार्य के प्रकार, भोजन, त्योहार, परंपराएँ) को स्पष्ट करता है। C ४.२ अपने आस–पास के परिसर की सांस्कृतिक विविधताओं (भोजन, वेशभूषा, खेल, विविध ऋतुएँ, बुआई और कटाई से संबंधित पर्व–उत्सव) का निरीक्षण कर वर्णन करता है। C ६.२ निरीक्षणों और निष्कर्षों का सर्जनात्मक माध्यमों द्वारा (चित्रों, आकृतियों, कविता, नाटक, खेल, मौखिक अथवा लिखित अभिव्यक्ति) प्रस्तुति करता है। C ८.२ भूतकाल और वर्तमान समय में प्रचलित रीति–रिवाजों, परंपराओं, तकनीकों में आए परिवर्तनों की जानकारी प्राप्त करता है और स्पष्ट करता है।	• फसलों की ऋतुएँ और उनके अनुसार आने वाले पर्व–त्योहारों की जानकारी देता है। • परिसर के प्राकृतिक पर्यावरण और सांस्कृतिक परंपरा के बीच सहसंबंध बताता है। • परिसर के पर्यावरणीय घटकों की जानकारी देता है। • सांस्कृतिक प्रथाओं/परंपराओं का आस–पास के पर्यावरण के साथ सहसंबंध स्थापित करता है। • परिसर के लोगों के भोजन और वेशभूषा में पाई जाने वाली विविधता के बारे में बताता है। • परिसर में खेले जाने वाले खेलों की जानकारी बताता है। • पारंपारिक खेलों का निरीक्षण और निष्कर्षों का प्रस्तुतीकरण करता है। • पारंपारिक लोक कलाओं का निरीक्षण और निष्कर्ष को प्रस्तुत करता है। • भूतकाल और वर्तमान समय में प्रचलित रीति–रिवाजों और परंपराओं की जानकारी स्पष्ट करता है।	४४,४५,५१ ४६,४८ ४६,४७,४९ ४६,४९,५०,५१ ४८,४९,५० ४४,४५,४७,५० ४७,४९,५०,५१
८	**संचार**	C 2.3 परिसर में होने वाले/ हुए परिवर्तनों, पारिवारिक और सामाजिक परिवर्तनों के विषय में परिवार के बड़े–बुजुर्गों की बताई बातों के आधार पर (व्यवसायों में हुए परिवर्तन, भोजन की आदतें, संसाधन, संचार, समारोह) संबंध स्थापित करता है।	• पारंपरिक एवं आधुनिक संचार साधनों की संकल्पना को स्पष्ट करता है। i) संचार की संकल्पना बताकर प्रकार करता है। ii) पारंपरिक एवं आधुनिक संचार साधनों के बारे में बताता है। iii) समय के अनुसार संचार साधनों में हुए परिवर्तनों की जानकारी देता है।	५२,५३,५५,५७ ५३,५४,५५,५६, ५७,५८ ५३,५४,५५,५६, ५७,५८ ५३,५४,५५,५६, ५७, ५८
पाठ्यक्रम के उद्देश्य : CG ९ भारत के गौरवशाली इतिहास के महान व्यक्तियों (विशेषत: महाराष्ट्र के संदर्भ में) के जीवन कार्यों के प्रति अभिरुचि उत्पन्न करना। राष्ट्र निर्माण में उनके योगदान और सामाजिक परिवर्तन की भूमिका को स्पष्ट करना।				
९	**ऐतिहासिक वास्तुएँ**	C ९.५ स्थानीय परिसर में घटित ऐतिहासिक घटनाओं, प्रसंगों, स्थलों, स्मारकों के बारे में जानकारी एकत्रित करता है।	• स्थानीय परिसर की ऐतिहासिक वास्तुओं, स्थलों और स्मारकों पर प्रत्यक्ष जाकर उनसे संबंधित ऐतिहासिक घटनाओं/प्रसंगों की जानकारी एकत्रित करके उनका वर्णन करता है।	५५,५९,६०, ६१, ६२,६३,६४

पाठ्यक्रम के उद्‌देश्य : CG–९ भारत के गौरवशाली इतिहास के महान व्यक्तियों (विशेषत: महाराष्ट्र के संदर्भ में) के जीवन कार्यों के प्रति अभिरुचि उत्पन्न करना/राष्ट्र निर्माण में उनके योगदान और सामाजिक परिवर्तन की भूमिका को स्पष्ट करना।				
१०	**कहानी : वीरता और क्रांति की**	C– ९.४ सामाजिक समता, बंधुता और समरसता जैसे मूल्यों को स्थापित करने हेतु संतों और समाज सुधारकों द्‌वारा किए गए प्रयासों से प्रेरणा प्राप्त करता है और इन मूल्यों का अंगीकार करने का प्रयत्न करता है। C ९.६ भारत को स्वतंत्रता की प्राप्ति कराने वाले महान व्यक्तियों और क्रांतिकारियों की वीरता भरी कहानियाँ बताता है और भूमिका का पालन करता है। C ९.२ बुद्‌धिमानी, धैर्य और विवेक द्‌वारा संकट पर विजय पाई जा सकती है, इसे महान व्यक्तियों के चरित्र से आत्मसात करता है। C ९.१ इतिहास के महान व्यक्तियों जैसे – छत्रपति शिवाजी महाराज के व्यक्तित्व की विभिन्न प्रेरणादायी घटनाएँ बताता है और विश्लेषण करता है।	• सामाजिक, समता, बंधुता मूल्यों को स्थापित करने के प्रयास करने वाले महान व्यक्तियों और समाज सुधारकों की जानकारी बताकर प्रेरणादायी घटनाओं से स्फूर्ति प्राप्त कर आचरण करता है। • हमारे परिसर के महान व्यक्तियों, स्वतंत्रता सेनानियों और क्रांतिकारियों की वीरता भरी कहानियाँ बताकर उनके द्‌वारा स्वतंत्रता युद्‌ध में दिए गए योगदान की जानकारी देता है। • बुद्‌धिमानी, धैर्य और विवेक द्‌वारा जीवन की समस्याओं पर विजय प्राप्त करता है। • महान व्यक्तियों के जीवन की प्रेरणादायी घटनाओं का वर्णन करता है।	६५,६६,६७,६४ ६५,६६,६७,६८ ६६,६७,६८ ६५,६७,६८,६९
११	**पर्यावरण की रक्षा : मेरी जिम्मेदारी**	C– १०.५ स्वच्छता अभियान, वृक्षारोपण और अन्य सामाजिक कार्यों में हिस्सा लेता है और स्वयं की जिम्मेदारी पहचानता है।	• परिसर के स्वच्छता अभियान में हिस्सा लेकर उसका महत्त्व बताता है। • वृक्षारोपण उपक्रम में सहभागी होकर वृक्ष संवर्धन उपक्रम का वर्णन करता है।	७०,७१,७२ ७०,७१,७२,७३, ७४,७५
पाठ्यक्रम के उद्‌देश्य : CG ९ भारत के गौरवशाली महान व्यक्तियों (विशेषत: महाराष्ट्र के संदर्भ में) के जीवनकार्यों के प्रति अभिरुचि निर्माण करना और राष्ट्र निर्माण में दिए गए उनके योगदान और सामाजिक परिवर्तन की भूमिका स्पष्ट करना। CG १० संवैधानिक जिम्मेदारी का बोध निर्माण करना और लोकतंत्र की संकल्पना को समझना।				
१२	**राष्ट्रीय एकात्मता**	C १०.३ केंद्रीय घटकों की संकल्पना को समझता है और भारत की राष्ट्रीय एकात्मता में वृद्‌धि लाने की दृष्टि से केंद्रीय घटकों का अन्वयार्थ लगाता है और विश्लेषण करता है।	• केंद्रीय घटक में उल्लिखित राष्ट्रीय एकात्मता का महत्त्व पहचानता है।	७६,७७,७८, ७९
१३	**चलो, सुनेंगे, बोलेंगे और समझेंगे।**	C ९.२ बुद्‌धिमानी, धैर्य और विवेक द्‌वारा संकट पर विजय पाई जा सकती है, इसे महान व्यक्तियों के चरित्र से आत्मसात करता है। C १०.६ हमारे विचार और मत खुले रूप में व्यक्त कर दूसरों के मतों का आदर करता है और सभी के साथ एक समान आचरण करता है।	• बुद्‌धिमानी, धैर्य और विवेक द्‌वारा संकट पर विजय पाई जा सकती है, इसके उदाहरण बताता है। • विभिन्न विषयों पर अपने विचार प्रस्तुत कर दूसरों के मतों/विचारों का आदर करता है।	८०,८१,८२,८३, ८४ ८०,८१,८२,८३, ८४

मानचित्र के विषय में टिप्पणी : प्रस्तुत पाठ्‌यपुस्तक में जिन मानचित्रों का उपयोग किया गया है; वे शैक्षिक उद्‌देश्य के लिए बनाए गए हैं। उन मानचित्रों के राजनीतिक और भौगोलिक प्रमाण के रूप में ग्राह्‌य न मानें। यदि उन मानचित्रों में कोई त्रुटि हो तो वे तकनीकी सीमा के कारण हो सकती हैं।

शिक्षकों द्‌वारा पुस्तक को उपयोग में लाते समय

- राष्ट्रीय शिक्षा नीति का प्रमुख उद्‌देश्य राज्य के सभी विद्‌यार्थियों की अध्ययन निष्पत्ति में सुधार लाना है। अतः पाठ्‌यपुस्तक में आरंभिक पृष्ठों पर लिखित अध्ययन निष्पत्तियों को सभी अध्यापक अध्यापन करते समय उद्‌देश्यपूर्वक ध्यान में रखें; यह आवश्यक है।
- प्रत्येक पाठ का अध्यापन नियोजन करते समय अध्ययन निष्पत्ति के अनुसार पाठ में अंतर्भूत अध्ययन-अनुभव और विविध कृतियों की योजना करें।
- पाठों में बहुविद्‌याशाखीय दृष्टिकोण को ध्यान में रखकर विभिन्न अध्ययन अनुभूतियाँ योजित की गई हैं; इसका समग्र विचार करें। विविध विषयों की सहायता से विद्‌यार्थियों का एकात्मिक प्रणाली द्‌वारा सहजता से अध्ययन होगा, यह बोध करा दें।
- विविध कृतियों द्‌वारा विषयों का बोध वृद्‌धिंगत किया जा सकेगा। विद्‌यार्थियों को विभिन्न अनुभूतियाँ कराते समय भारतीय ज्ञानप्रणाली, पंचकोश के बारे में भी जानकारी प्राप्त होगी, इसकी सावधानी रखना आवश्यक है।
- परिसर के विभिन्न घटकों का संरक्षण, संवर्धन, भारतीय संस्कृति, परंपराओं और विविधताओं की पहचान कराना आवश्यक है। पाठ्‌यपुस्तक में निहित यह भूमिका चित्ररूप में व्यक्त करने वाले मुखपृष्ठ पर भारत की विविधता दर्शाने के लिए भारत के स्थूल मानचित्र का उपयोग किया गया है। देश की प्रगति के लिए एकात्मता को बलशाली बनाना अत्यंत महत्त्वपूर्ण है, यह बोध अध्ययन अनुभूतियों की रचना करते समय आवश्यक है।
- पुस्तक में स्थानीय परिसर की ऐतिहासिक वास्तुओं और महान व्यक्तियों आदि की जानकारी पृष्ठों की संख्या सीमित होने के कारण देना संभव नहीं होता है। अतः अध्ययन में स्थानीय परिसर के विभिन्न उदाहरणों का समावेश कराएँ । उपक्रमों और कृतियों में स्थानीय बातों का समावेश करना आवश्यक है।
- हमारी आवश्यकताओं, उन्हें पूर्ण करते समय उत्पन्न होने वाली समस्याओं तथा पर्यावरण की रक्षा, जलसाक्षरता जैसे महत्त्वपूर्ण विषयों का भी सरल भाषा में और विविध अनुभूतियों के आधार पर बोध निर्माण करना आवश्यक है।
- अपने परिसर की ऐतिहासिक वास्तुओं की पहचान और उनके संरक्षण का महत्त्व विद्‌यार्थियों को समझा दें।
- पाठ्‌यसामग्री का बोझ न बढ़े, इसके लिए पाठ्‌यपुस्तक में प्रत्येक मुद्‌दे की जानकारी विस्तार में उदाहरणों और स्पष्टीकरण सहित पाठ में देना संभव नहीं होता है। अतः अध्ययन के पूर्व शिक्षकों ने विद्‌यार्थियों की दृष्टि से विविध संदर्भों के आधार पर पाठ्‌यसामग्री अधिक सरल होने की दृष्टि से आवश्यक जानकारी संबंधित स्थानों पर देना आवश्यक है।
- शिक्षकों को चाहिए कि वे उन स्थानों की सैर कराएँ। इसके द्‌वारा विद्‌यार्थियों को प्रत्यक्ष अनुभव दिलाएँ। जैसे-बाल आनंद मेला, वास्तुओं की सैर कराना, विभिन्न संग्रहालयों की सैर कराना, परिसर की सैर कराना आदि।
- विद्‌यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के लिए उपयुक्त विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन करें।
- शिक्षकों के लिए इस पृष्ठ पर विशेष आवश्यकतावाले विद्‌यार्थियों के बारे में अध्ययन-अध्यापन प्रक्रिया करते समय सांकेतिक चिह्नों की भाषा (Sign Language) तथा अन्य सहायक अध्यापन वैज्ञानिक पद्‌धतियों का उपयोग करें। विशेष आवश्यकतावाले विद्‌यार्थियों को जिस पद्‌धति से संभव हो; उस पद्‌धति से अभिव्यक्त होने का अवसर दें।

विषय सूची

पाठों के नाम	पृष्ठ क्र.
१. हमारा परिवार	१
२. परिवार की वंशावली	७
३. मेरी पाठशाला	११
४. बाजार (हाट)	१८
५. हमारी आवश्यकताएँ और समस्याएँ	२६
६. जल साक्षरता	३७
७. भारतीय परंपराएँ और सांस्कृतिक विविधताएँ	४४
८. संचार	५२
९. ऐतिहासिक वास्तुएँ	५९
१०. कहानी : वीरता और क्रांति की	६५
११. पर्यावरण की रक्षा : मेरी जिम्मेदारी	७०
१२. राष्ट्रीय एकात्मता	७६
१३. चलो, सुनेंगे, बोलेंगे और समझेंगे	८०

१. हमारा परिवार

मीना के परिवार में बड़ी चहल-पहल थी। दो दिन के बाद उसके अभि भैया का विवाह होने जा रहा था। इसलिए घर में उत्साह और हर्ष का वातावरण था। परिवार में भाभी आ रही हैं, इस बात से मीना बहुत ही आनंदित थी। इस विवाह में सम्मिलित होने के लिए चाचा-चाची, चचेरा भाई, मामा-मामी और ममेरी बहन, मौसी और मौसेरा भाई, मौसेरी बहन, बुआ, फुफेरी बहन आदि रिश्तेदार इकट्ठे हुए थे। मामा-मामी अपने चार वर्ष के पोते को भी साथ ले आए थे। सभी लोग उस पोते के साथ खेलने में मग्न रहते थे। उसका ध्यान भी रखते थे।

मीना के नाना जी-नानी जी और मीना के दादा जी-दादी जी मीना का बहुत लाड़-प्यार करते थे। मीना और उसके भाई बड़ों की सहायता करने में लगे हुए थे। नाना-नानी और दादा-दादी सभी कार्यों की देख-रेख करते थे। अतिथियों का स्वागत-सत्कार करते थे। सभी रिश्तेदार सभी के साथ मिल-जुलकर हँस-खेलकर कार्य किए जा रहे थे।

पहचानो तो!

रिश्ते पहचानो – पिता जी का भाई, माँ की बहन, बुआ की बेटी, मौसी का बेटा

बताओ तो!

- तुम अपने माता-पिता के किन कार्यों में सहायता करते हो?
- उन कार्यों में तुम्हारी पसंद के कार्य कौन-से हैं?

मीना के परिवार में उसके माता-पिता, चाचा-चाची, दादा-दादी और भाई-बहन इकट्ठे रहते हैं। सीमा दीदी मीना की सगी बहन हैं। अभि भैया मीना और सीमा दीदी का चचेरा भाई है क्योंकि वह मीना के चाचा-चाची का बेटा है अर्थात मीना और सीमा दीदी अभि भैया की चचेरी बहनें हैं।

निम्न सारिणी के आधार पर हम अपने परिवार की सारिणी तैयार करेंगे!

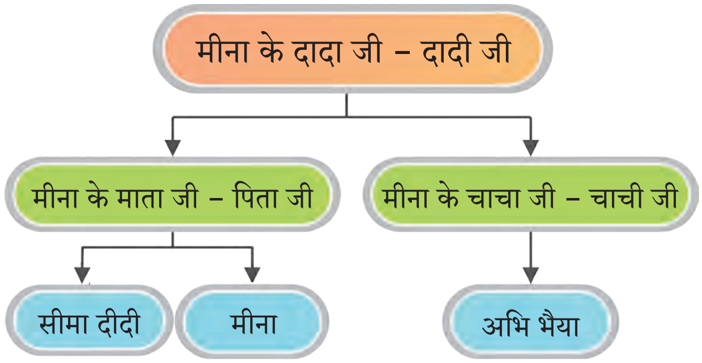

परिवार का अर्थ एक-दूसरे के साथ रिश्ता रखने वाले मनुष्यों का समूह है। इस समूह के वर्ग इस प्रकार हैं।

बड़ा परिवार

बड़ा परिवार : जिस परिवार में माता-पिता, दादी-दादा, चाची-चाचा और चचेरे भाई-बहन एकत्रित रहते हैं, उसे बड़ा परिवार कहते हैं। इस परिवार को 'संयुक्त अथवा मिला-जुला परिवार' भी कहते हैं।

छोटा परिवार

छोटा परिवार : जिस परिवार में माता-पिता और उनके बच्चे इकट्ठे रहते हैं। उसे छोटा परिवार कहते हैं।

विस्तारित परिवार

विस्तारित परिवार : हमारे माता जी और पिता जी के रिश्तेदारों के एकत्रित समूह को 'हमारा विस्तारित परिवार' कहते हैं। विस्तारित परिवार के सदस्य एक ही घर में एकत्रित नहीं रहते हैं परंतु समय आने पर अथवा किसी आवश्यक घटना घटने पर एक-दूसरे की सहायता-सहयोग करते हैं, एक-दूसरे का ध्यान रखते हैं और एक-दूसरे के सुख-दुख में सम्मिलित होते हैं।

एकल अभिभावकत्व परिवार

एकल अभिभावकत्व परिवार : कुछ परिवारों में माता अथवा पिता, इनमें से कोई एक ही अभिभावक संतानों की देखभाल करता है। उनका भरण-पोषण करता है। ऐसे परिवार को 'एकल अभिभावकत्व परिवार' कहते हैं।

चर्चा करो :

- मीना का परिवार किस वर्ग के अंतर्गत आता है?
- तुम्हारा परिवार किस वर्ग के अंतर्गत आता है?

सीमा दीदी की सहेलियाँ सुश्मिता और यास्मिन ने मिलकर द्‌वार के आगे सुंदर रंगोली बनाई। अभि भैया के मित्र डेविड और गुरुदीप ने फूलों के तोरणों से घर सजाया।

सहायता के लिए मीना के पड़ोसी भी चले आए। किसी के परिवार में कोई समारोह हो तो सभी मिल-जुलकर उसे संपन्न करते हैं। आवश्यकता होने पर एक-दूसरे की सहायता भी करते हैं। पिछले वर्ष मीना के दादा जी बीमार थे। उस समय मीना के पड़ोसियों ने बहुत मदद की थी। छुट्‌टी के दिनों में शाम के समय अड़ोस-पड़ोस के छोटे बच्चे मीना के घर के आँगन में इकट्‌ठे होते हैं। मीना की दादी जी उन्हें सुंदर कहानियाँ सुनाती हैं।

बताओ तो!

तुम अपने पड़ोसियों के साथ कौन-कौन-से पर्व-त्योहार मनाते हो?

क्या तुम जानते हो?

हम स्वयं, हमारा परिवार, मित्र-सहेलियाँ, सहयोगी और पड़ोसी आदि समाज के अंग (घटक) हैं। विविध परिवारों को मिलकर समाज का निर्माण होता है।

मीना के घर में एक कुत्ता और एक बिल्ली भी थे। घर में इतने लोगों को देखकर मोती कुत्ता बहुत आनंदित हुआ था। वह दुम हिलाता हुआ पूरे घर में घूमता रहा। भोजन के बाद सभी भाई-बहन साँप-सीढ़ी का खेल खेलने के लिए बैठे। उस समय मोती भी वहाँ आकर बैठ गया लेकिन मनी-म्याँऊ हमेशा की तरह दूध पीकर कोने में गाढ़ी नींद सो गई।

साँप-सीढ़ी का खेल खेलते हुए

घर के आँगन के एक कोने में मिट्टी के दो बर्तन रखे हुए हैं। उन बर्तनों में मीना प्रतिदिन पंछियों के लिए दाना-पानी रखती है।

- हमारे परिसर के वृक्ष, पशु-पक्षी हमारे जीवन के महत्त्वपूर्ण घटक होते हैं।
- हम पेड़ लगाते हैं, विभिन्न प्राणियों और पक्षियों का ध्यान रखते हैं।
- हम विविध तीज-त्योहारों के माध्यम से एकत्रित आते हैं और आनंद उठाते हैं।

थोड़ा लिखेंगे :

कार्य	घर में यह काम कौन करता है?
रसोई बनाना।	
घर की साफ-सफाई करना।	
कपड़े धोना।	
बाजार में खरीदारी करना।	
बड़े-बुजर्ग और बीमार व्यक्तियों की देख-भाल करना।	

चित्र में दिखाई देने वाले व्यक्ति क्या कार्य कर रहे हैं, वह चौखट में लिखो :

परिवार छोटा हो अथवा बड़ा; परिवार के लोग मिल-जुलकर रहते हैं। एक-दूसरे की चिंता करते हैं। एक-दूसरे की सहायता करते हैं। काम बाँट लेते हैं। उनके बीच एक-दूसरे के लिए स्नेह और आदर की भावना होती है। परिवार का वातावरण सुरक्षित रहता है। विभिन्न संस्कृति का पालन करने वाले अनेक परिवार मिलकर समाज का निर्माण होता है। ऐसे आनंदमय परिवार मिलकर ही स्वस्थ समाज बनता है।

करके देखो :

* अपने विस्तारित परिवार के सदस्यों की सूची बनाओ।
* पड़ोसी परिवार के लोगों की जानकारी प्राप्त करो।

स्वाध्याय

प्र.१ कौन, वह लिखो :

(अ) मामा-मामी के साथ आया हुआ ---------------------------

(आ) सभी कार्यों की देख-भाल करने वाले ---------------------------

(इ) बड़े-बुजुर्गों की सहायता करने वाले ---------------------------

(ई) मीना का चचेरा भाई ---------------------------

प्र.२ कौन-कौन रहते हैं, वह लिखो :

छोटा परिवार

एकल अभिभावकत्व परिवार

बड़ा परिवार

प्र.३ तुम्हारे परिवार के निम्नलिखित सदस्य क्या करते हैं, वह लिखो :

(अ) माता जी ....

(आ) पिता जी ....

(इ) दादी जी ....

(ई) दादा जी ....

(उ) मैं ....

(ऊ) मेरे भाई-बहन ....

प्र.४ निम्नलिखित कथनों को सुधारकर लिखो :

(अ) सीमा दीदी मीना की चचेरी बहन हैं।

....

(आ) विस्तारित परिवार में केवल पिता जी के रिश्तेदार होते हैं।

....

(इ) पालतू प्राणी परिवार के सदस्य नहीं होते हैं।

....

प्र.५ दो-से-तीन वाक्यों में उत्तर लिखो :

(अ) अभि भैया के विवाह में किसने-कौन-सी तैयारी की ?

(आ) परिवार में हमारी कौन-कौन-सी आवश्यकताएँ पूर्ण होती हैं।

(इ) तुम्हारा पसंदीदा पालतू प्राणी कौन है ? उसकी देख-भाल तुम कैसे करते हो ?

उपक्रम

- तुम अपने परिवार के रिश्तेदारों के फोटो प्राप्त करो और कॉपी में चिपकाओ। उनके नीचे फोटोवाले व्यक्तियों के साथ तुम्हारा रिश्ता लिखो।
- अपने परिसर के पालतू प्राणियों और पक्षियों की सूची बनाओ।

***

२. परिवार की वंशावली

अलमारी को व्यवस्थित करते समय वर्षा को अपने माता-पिता के विवाह का अलबम मिला। अलबम को उलटने-पुलटने के बाद उस समय के व्यक्ति दिखाई देख रहे थे, जो आज थोड़ा-सा अलग दिखाई दे रहे थे। उस अलबम में माता-पिता के साथ पूरे परिवार का एक फोटो था। इस फोटो के बारे में वर्षा ने अपनी माँ से पूछा। अब माँ ने बताना आरंभ किया। वह बोलने लगीं, "वर्षा, यह हमारे पूरे परिवार का एकत्रित फोटो है। पहचानो तो! देखें.. इस फोटो में तुम किस-किसको पहचानती हो।" वर्षा ने फोटो को ध्यान से देखा और परिचित व्यक्तियों तथा रिश्तेदारों के नाम बताए परंतु वह कुछ व्यक्तियों को पहचान नहीं पाई।

'माँ.. इस फोटो में वे कौन हैं?" वर्षा ने पूछा, "वर्षा, यह तुम्हारे पिता जी की दादी जी हैं।" वर्षा को अपने पिता जी की दादी जी अर्थात अपनी परदादी को देखकर आनंद हुआ। इससे वह अपने माता-पिता, माता-पिता के माता-पिता अर्थात अपने दादी जी और दादा जी और दादा जी की माता जी जैसे रिश्तेदारों के फोटो देख सकी। इस फोटो में उसकी अपने पिता जी, दादा जी और परदादा जी अर्थात तीन पीढ़ियों से पहचान हो गई। पीढ़ी का अर्थ प्रत्येक परिवार के पहलेवाले व्यक्ति। अब यही देखो ना! वर्षा, उसके माता-पिता, दादा-दादी और उनके भी माता-पिता के माध्यम से वर्षा अपने परिवार की 'वंशावली' बना सकी।

मैं तुम्हारे पिता जी की माँ हूँ तो तुम्हारी कौन हूँ?

मैं तुम्हारे पिता जी का बेटा हूँ तो मैं तुम्हारा कौन हूँ?

मैं तुम्हारी माँ की माँ हूँ तो मैं तुम्हारी कौन हूँ?

मैं तुम्हारी माँ का पिता हूँ तो मैं तुम्हारा कौन हूँ?

बताओ तो मैं कौन हूँ?

मैं तुम्हारे पिता का पिता हूँ तो मैं तुम्हारा कौन हूँ?

मैं तुम्हारे पिता का भाई हूँ तो मैं तुम्हारा कौन हूँ?

मैं तुम्हारे पिता जी की बेटी हूँ तो मैं तुम्हारी कौन हूँ?

मैं तुम्हारे पिता जी बहन हूँ तो मैं तुम्हारी कौन हूँ?

वंशावली

परिवार के सदस्यों की पीढ़ियों के अनुसार जो रचना की जाती है अर्थात वंशावली कहते हैं। इस वंशावली में माता-पिता, दादा-दादी, परदादा-परदादी जैसी पीढ़ियों के नाम होते हैं।

वंशावली हमारे परिवार का संक्षिप्त इतिहास होता है। हम अपने परिवार के इतिहास को वंशावली के माध्यम से समझ सकते हैं। हमारे परिवार के पूर्वज कौन थे, इसे ज्ञात कर सकते हैं। हमारी वंशावली में परिवार के व्यक्तियों के नाम और उपनाम (कुलनाम) मालूम कर सकते हैं।

वंशावली किसे कहते हैं; इसे निम्न आकृति द्वारा समझेंगे :

समझेंगे :

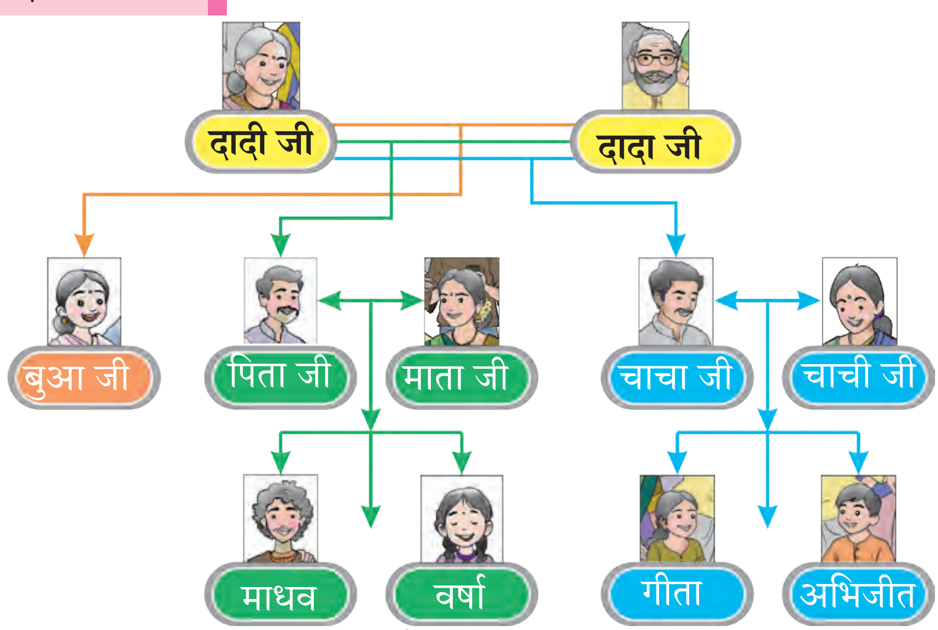

वर्षा का वंशवृक्ष

वंशावली का अध्ययन क्यों किया जाता है?

* **परिवार का इतिहास जानने के लिए :** परिवार का इतिहास और परिवार के पूर्वजों की जानकारी प्राप्त करने के लिए हम वंशावली का अध्ययन करते हैं।
* **रिश्ते-नातों का संबंध समझने के लिए :** परिवार के सदस्यों के रिश्ते-नातों का संबंध और उनके एक-दूसरे के साथ रिश्ते-संबंध वंशावली के माध्यम से समझते हैं।
* **वंश की जानकारी प्राप्त करने के लिए :** यह प्रणाली किसी व्यक्ति अथवा परिवार की मौलिक पहचान खोजने में सहायता प्रदान करती है।

वंशावली किस प्रकार तैयार की जाती है?

परिवार की वंशावली का अंकन एक विशाल वृक्ष के अर्थात परिवारवृक्ष के रूप में किया जाता है। प्रत्येक नई पीढ़ी का जन्म होना मतलब वंशवृक्ष का विस्तार होना है। वंशवृक्ष के कारण परिवार के सभी सदस्यों को अपने पूर्वजों की जानकारी प्राप्त होती है। वंशावली द्वारा नई पीढ़ी को पुरानी पीढ़ी का परिचय प्राप्त होता है।

स्वाध्याय

प्र.१ उचित जोड़ियाँ मिलाओ :

अ गुट	उत्तर	ब गुट
१. माँ का भाई	-------------	(अ) बुआ जी
२. पिता जी की बहन	-------------	(आ) चाचा जी
३. माँ की बहन	-------------	(इ) मामा जी
४. पिता जी का भाई	-------------	(ई) मौसी जी

प्र.२ निम्नलिखित कथन सत्य अथवा असत्य, वह लिखो और असत्य कथनों को सुधारकर लिखो :

(अ) पीढ़ी का अर्थ परिवार का पहले वाला / पूर्व व्यक्ति। [ ]

(आ) पिता जी के सभी रिश्तेदारों के उपनाम (कुलनाम) एक समान नहीं होते हैं। [ ]

(इ) वंशावली के अध्ययन के आधार पर परिवार का इतिहास समझ नहीं पाते। [ ]

***

प्र.३ पहचानो और लिखो :

कभी झगड़ा करता है, कभी हँसाता है, खेलते समय मुझे रुलाता है, उसे माँ के हाथ का बना व्यंजन मिलता है; वह मेरा है ------------	प्रेम का पेड़, ममता की छाँव, उसके बिना मुझे चैन नहीं मिलता, मेरी माई हैं वह मतलब मेरी ------------	पिता जी की बहन; मेरा करतीं लाड़-प्यार, मेरे लिए लातीं मिठाई और खिलौने, वह हैं मेरी ------------	माँ के भैया कहते; घूमने जाएँगे, हँसाते हैं, खिलाते हैं, मिठाई लाकर देते हैं। वह हैं मेरे ------------

प्र.४ तुमसे जिनके रिश्ते हैं, वे लिखो :

माँ के रिश्तेदार : --

पिता जी के रिश्तेदार : --

प्र.५ निम्नलिखित प्रश्नों के दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखो :

(अ) परिवार की वंशावली द्वारा तुम्हें कौन-कौन-सी जानकारी प्राप्त होती है?

(आ) वंशावली कैसे तैयार की जाती है?

उपक्रम

- अपने अभिभावकों के साथ चर्चा करके पिता जी की वंशावली के सदस्यों के फोटो एकत्रित करो और वंशवृक्ष तैयार करो।
- अपनी माँ के रिश्तेदारों के उपनामों (कुलनाम) की सूची अपने अभिभावकों की सहायता से बनाओ।

***

३. मेरी पाठशाला

पाठशाला जाते हम

लिखेंगे, पढ़ेंगे, सीखेंगे,
खेलेंगे, कूदेंगे, आगे बढ़ेंगे ।
और बुद्‌धिमान बनेंगे हम,
पाठशाला जाते हम ॥

गाएँगे गीत, नाटक खेलेंगे,
चित्र बनाएँगे, नाचेंगे,
होशियार बनेंगे हम,
पाठशाला जाते हम ॥

मित्रों से मस्ती करेंगे,
बड़े होकर नाम करेंगे,
देश का भविष्य है हम,
पाठशाला जाते हम ॥

मन से भाती मुझे, मेरी यह शाला ।
ज्यों ममता लुटाती, मैया अपने लल्ला ॥

पाठशाला का खेल मैदान रंग-बिरंगे पताकों से सजाया गया था। पाठशाला की वार्षिक खेल प्रतियोगिताएँ चल रही थीं। विद्यार्थियों का शोर-गुल हो रहा था। दौड़ प्रतियोगिता में रोहित प्रथम स्थान पर आया था। रोहित के प्रतिद्वंद्वी मिहिर ने रोहित का अभिनंदन किया। उसके पश्चात कबड्डी के मैच प्रारंभ हुए। इस मैच में नीता की टीम मैदान पर उतरी थी। विद्यार्थी शोर-गुल करते और चिल्ला-चिल्लाकर लड़कियों की टीम का उत्साह बढ़ा रहे थे।

लड़कियों का कबड्डी का खेल

बताओ तो!

* पाठशाला के खेल मैदान पर तुम कौन-कौन-से खेल खेलते हो ?

पाठशाला किसे कहते हैं ?

पाठशाला उस स्थान को कहते हैं; जहाँ हम पढ़ाई करने जाते हैं। जहाँ हम नियमों का पालन करना सीखते हैं।

पाठशाला में समय पर आना, पाठशाला का गणवेश पहनना, शालेय परिपाठ के लिए पंक्ति में खड़ा होना। इन गतिविधियों द्वारा हम अनुशासन का पालन करना सीखते हैं। पाठशाला में अलग-अलग परिवारों से लड़के-लड़कियाँ पढ़ने के लिए आते हैं। उनके साथ हमारा मित्रता का रिश्ता होता है। हम अपने मित्र-सहेलियों के साथ मिल-जुलकर रहते हैं। एक-दूसरे की सहायता करते हैं। एक-दूसरे का ध्यान रखते हैं।

शिक्षकों के प्रति आदर करना सीखते हैं। पाठशाला के शिक्षक हमें अलग- अलग विषय पढ़ाते हैं। उनके और हमारे बीच शिक्षक-विद्यार्थी का संबंध होता है। समाज में हमारा आचरण कैसा हो, यह हम पाठशाला में सीखते हैं। इस पूरी शिक्षा के माध्यम से हम एक अच्छे नागरिक बनते हैं। हमारे जीवन में परिवार की तरह पाठशाला का भी महत्त्व होता है।

क्या तुम जानते हो ?

पाठशाला का गणवेश धारण करने से विद्यार्थियों में समानता, अनुशासन और एकता की भावना निर्माण होती है। शालेय गणवेश के कारण उनमें पाठशाला के प्रति अपनापन की भावना निर्माण होती है। शालेय गणवेश उस पाठशाला की पहचान होता है।

नीचे दिए गए चित्रों में पाठशाला के लिए आवश्यक साधन दिखाई देते हैं। उन्हें पहचानो और चित्रों के नीचे उनके नाम लिखो :

- **भौतिक घटक :** पाठशाला का भवन, श्याम पट्ट, खड़ियाँ, डस्टर, बेंचें, घंटा, पुस्तकें, कॉपियाँ, पेंसिलें, रबड़, सीसी टीवी- कैमरा, शिकायत बक्सा, प्रयोगशाला, मैदान, संरक्षक दीवार, पेयजल की सुविधा, मार्कर, व्हाइट बोर्ड, स्मार्ट बोर्ड, पाटी, रैंप, ग्रंथालय, पीछे वाली बाग, संगणक कक्ष, प्रथमोपचार पेटी, लड़के-लड़कियों के लिए स्वतंत्र स्वच्छता गृह, हैंडवॉश स्टेशन, स्कूल बस आदि।

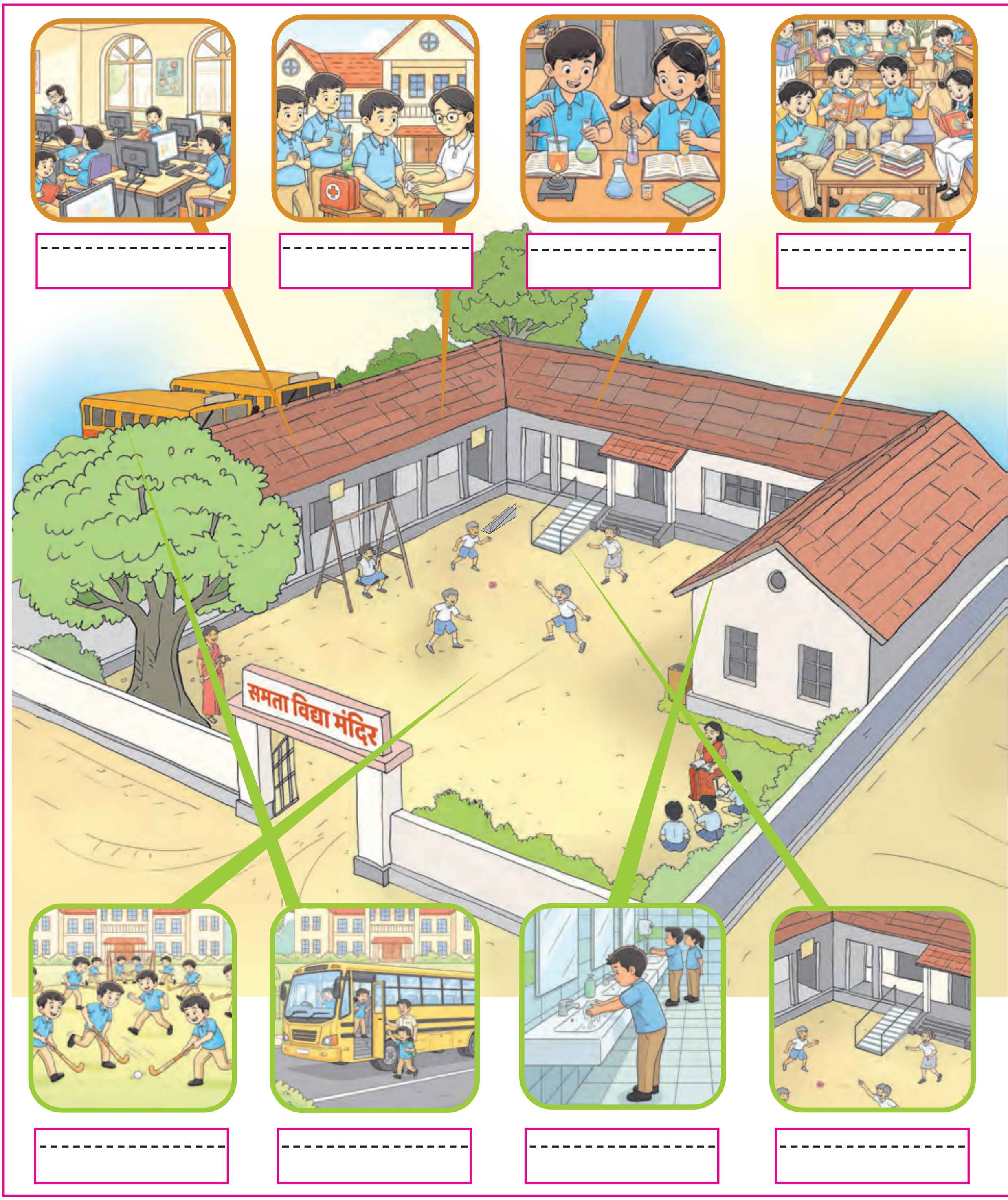

क्या तुम जानते हो ?

पाठशाला की सीढ़ियों के बगल में उतार अथवा ढलान होती है। इस उतार को 'रैंप' कहते हैं। रैंप के कारण दिव्यांगों को पहियेवाली कुर्सी से पाठशाला में आना-जाना संभव होता है।

- **मानवी घटक :** विद्यार्थी, अभिभावक, शिक्षक, प्रधानाध्यापक, कार्यालयीन कर्मचारी, साफ-सफाई कर्मचारी, शालेय पोषण भोजन का बावर्ची और सहायक आदि।

विराज की पाठशाला में शालेय मंत्रिमंडल के चुनाव थे। शालेय मंत्रिमंडल में मुख्यमंत्री, अनुशासन मंत्री, स्वच्छता मंत्री, अध्ययन मंत्री, सांस्कृतिक मंत्री और खेलकूद मंत्री का चुनाव होने जा रहा था। इसके लिए सभी विद्यार्थियों ने मतदान (वोटिंग) किया। विराज का सांस्कृतिक मंत्री के रूप में चुनाव हुआ। अतः अब उसपर पाठशाला में संपन्न किए जाने वाले सांस्कृतिक समारोहों की जिम्मेदारी होगी।

शालेय मंत्रिमंडल का चुनाव

कृति - पाठशाला में स्वच्छता सप्ताह मनाया जाने वाला है। तुम अपनी कक्षा के तीन गुट बनाकर कार्यों का विभाजन निम्नलिखित सारिणी में करो :

गुट 'अ'	गुट 'ब'	गुट 'क'
----------------------------	----------------------------	----------------------------
----------------------------	----------------------------	----------------------------

- पाठशाला में विद्यार्थी पाठशाला के विभिन्न कार्य करने की जिम्मेदारी स्वीकार करते हैं।
- पाठशाला हमें ज्ञान प्रदान करता है। समस्या हल करना सिखाता है। इकट्ठे आकर काम करना सिखाता है। अत: समाज की दृष्टि से पाठशाला अत्यंत उपयुक्त संस्थान है।
- पाठशाला में प्रत्येक विद्यार्थी को बोलने की, अपने विचार प्रस्तुत करने की और दूसरों के विचार सुनने की आदत लगती है। पाठशाला में हम लोकतंत्र के मूल्य आत्मसात करते हैं।

  इसी रूप में हमारे देश का प्रशासन चलता है। इसी को 'लोकतंत्र' कहते हैं।

बताओ तो

* पाठशाला का कौन-सा स्थान तुम्हें सबसे अच्छा लगता है ? क्यों ?
* यदि तुम्हें एक दिन शिक्षक बना दें तो तुम क्या तैयारी करोगे ?

करके देखो :

निरंजन ने मानचित्र का ढाँचा बनाया है।

तुम अपने घर से पाठशाला के मानचित्र का ऐसा ही ढाँचा बनाओ।

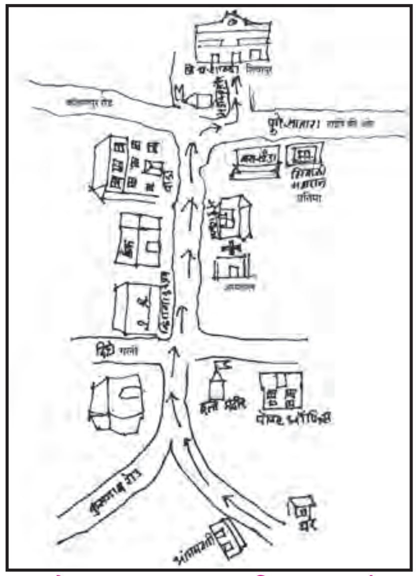

घर से पाठशाला : मानचित्र का ढाँचा

शिक्षा का अधिकार : भारत सरकार ने बालकों को निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम-२००९ लागू किया है। इस अधिनियम के अनुसार प्रत्येक बालक-बालिका को शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार है।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha

क्या तुम जानते हो ?

महात्मा जोतिराव फुले

सावित्रीबाई फुले

लड़कियों को शिक्षा प्राप्त हो, इसके लिए महात्मा जोतिराव फुले और सावित्रीबाई फुले ने बहुत परिश्रम उठाए। महात्मा जोतिराव फुले ने १ जनवरी, १८४८ को पुणे के भिडे बाड़े में लड़कियों की पाठशाला प्रारंभ की। महाराष्ट्र में लड़कियों की यह प्रथम पाठशाला है। प्रारंभ में महात्मा फुले और सावित्रीबाई फुले लड़कियों की पाठशाला में शिक्षक के रूप में पढ़ाते थे। सावित्रीबाई फुले प्रथम भारतीय स्त्री शिक्षिका थीं।

स्वाध्याय

प्र.१ सूची बनाओ :

पाठशाला में तुम्हें अच्छी लगने वाली बातें

प्र.२ दिए गए घटकों का निम्नलिखित सारिणी में वर्गीकरण करके लिखो :

(पाठशाला का भवन, शिक्षक, स्वच्छता गृह, प्रधानाध्यापक, शालेय पोषण भोजन का बावर्ची, पुस्तकालय, विद्‌यार्थी, प्रयोगशाला, रैंप, अभिभावक, मैदान, शिकायत पेटी, संगणक कक्ष)

भौतिक घटक	मानवी घटक
....	....
....	....

प्र.३ निम्नलिखित कृति पूर्ण करो :

पाठशाला के निम्नलिखित व्यक्तियों के कार्यों के बारे में एक वाक्य में लिखो :

शालेय पोषण भोजन का बावर्ची

कक्षा अध्यापक

अभिभावक

प्रधानाध्यापक

कक्षा मित्र

स्वच्छता मंत्री

प्र.४ यहाँ तुम क्या करते हो?

वाचन कोना

खेल का मैदान

पीछेवाली बाग

प्र.५ पाठशाला में सीखने को मिलने वाली बातें लिखो :

उपक्रम

- दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए कौन-सी सुविधाएँ होनी चाहिए? शिक्षकों की सहायता से जानकारी प्राप्त करके लिखो।
- 'विद्यालयीन अध्ययन के लिए तकनीकी विज्ञान का होने वाला उपयोग' इस विषय पर मित्रों के साथ चर्चा करके तकनीकी विज्ञान के उपयोग लिखो।

***

४. बाजार (हाट)

बाल आनंद मेला – बच्चे विभिन्न वस्तुएँ बेच रहे हैं। अभिभावक खरीद रहे हैं।

विद्‌यार्थियों ने बाल आनंद मेला में खरीद–विक्री के लिए लगाई हुईं दुकानें ही बाजार का छोटा–सा रूप है। इस बाल आनंद मेला में नेहा और सलिल ने स्वयं तैयार किए हुए भेंट कार्ड बेचने के लिए रखे हैं। मेला समाप्त हुआ है और वे हिसाब लगा रहे हैं।

“अरे सलिल, हमें बहुत पैसे मिले हैं मतलब हमें लाभ हुआ है।” नेहा ने आनंदित होकर कहा।

“अगली बार हम भेंटकार्डों के साथ रंग– –बिरंगे दीये भी बेचने के लिए रखेंगे।”

बताओ तो!

- क्या तुम कभी बाल आनंद मेला में गए हो ? वहाँ तुमने कुछ खरीदा है अथवा बेचा है ?
- अगली बार बाल आनंद मेला में तुम्हें कौन–सी वस्तुएँ बेचने में आनंद प्राप्त होगा ?

जहाँ विभिन्न प्रकार की वस्तुओं की खरीद-विक्री होती है; उस स्थान को बाजार कहते हैं। वस्तुओं की विक्री करने वाले को 'विक्रेता' कहते हैं। वस्तुएँ खरीदने वाले को 'ग्राहक अथवा उपभोक्ता' कहते हैं। बाजारवाले स्थान पर अनगिनत लोग इकट्ठे आते हैं।

क्या तुम जानते हो ?

बाजार अनेक तरह के होते हैं। बाजार शहर में भी लगता है और गाँव में भी होता है।

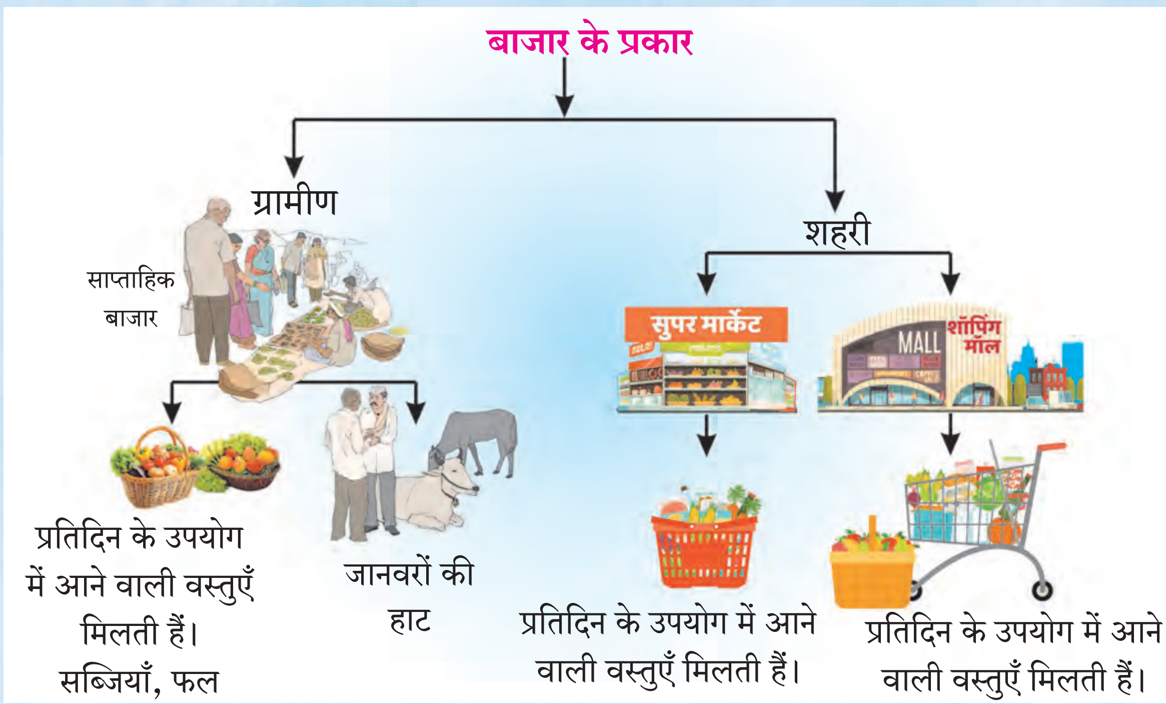

पहले हम गाँव के साप्ताहिक बाजार में जाएँगे।

यह रघु और रमा के गाँव का बाजार है। वे अपने माता-पिता के साथ बाजार में आए हैं। यह साप्ताहिक बाजार है। सप्ताह में एक निश्चित दिन को लगने वाले बाजार को साप्ताहिक बाजार कहते हैं। यहाँ प्रति बुधवार को बाजार लगता है। गाँव के लोग बड़ी उत्सुकता से साप्ताहिक बाजार की प्रतीक्षा करते हैं। आस-पास के गाँव के किसान अपने खेत की ताजा सब्जियाँ, अनाज बेचने के लिए ले आते हैं। यहाँ कई कारीगर अपनी विभिन्न वस्तुएँ बेचने के लिए लाते हैं। इन दिनों महानगरों में भी साप्ताहिक बाजार लगता है। यहाँ उपभोक्ता और विक्रेताओं के बीच अच्छा परिचय हो जाता है। साप्ताहिक बाजार के बहाने से लोग एक-दूसरे से मिलते हैं।

साप्ताहिक बाजार

गाँव के खुले स्थान में साप्ताहिक बाजार लगा था। बाजार में कुछ विक्रेता जमीन पर दरी बिछाकर बैठे थे। कुछ विक्रेताओं ने बाँस की बेंचों पर अस्थायी दुकानें लगा रखी थीं। हरीभरी सब्जियाँ, रंग-बिरंगे फूल, ताजे फल, मसालों के पदार्थ, कुरौड़ी, पापड़, नमकीन, मिठाइयों से बाजार बहुत ही सुंदर ढंग से सजा हुआ था। सूती गमछे, टोपियाँ, साड़ियाँ, मिट्टी और धातुओं के बर्तन, टोकरियाँ, खेती के औजार जैसी असंख्य वस्तुएँ विक्री के लिए रखी थीं। ग्राहकों को आकर्षित करने के लिए विक्रेता अपनी-अपनी वस्तुओं का चिल्ला-चिल्लाकर विज्ञापन कर रहे थे। कुछ स्थानों पर ग्राहक और विक्रेता के बीच वस्तुओं के मूल्यों को लेकर मोल-भाव और बहस चल रही थी। कुल मिलाकर बाजार का वातावरण उत्साह और कोलाहल से भरा हुआ था।

पिता जी के बताए अनुसार कौन-कौन-सी वस्तुएँ खरीदनी हैं; इसकी सूची रघु घर से बनाकर ले आया था।

रमा कुछ छोटी और कपड़े की बड़ी थैलियाँ अपने साथ ले आई थीं।

सोचो :

बाजार जाते समय अपने साथ हमेशा कपड़े की थैलियाँ क्यों ले जानी चाहिए?

दूसरे दिन परिवार में कुछ सदस्यों का उपवास-व्रत होने के कारण फल खरीदने थे। ताजे फलों के ठेले बाजार के प्रारंभ में ही लगे थे। ठेलों पर सभी फल बड़े अच्छे ढंग से सजा रखे थे।

''नमस्ते काका जी, एक दर्जन केले देना'' रघु ने कहा!

"पिता जी, अमरूद भी लेंगे ना।" हरे-हरे अमरूदों को देखकर रमा बोली।

"अच्छा! भाई, एक किलो अमरूद भी देना।" पिता जी ने एक दर्जन केले के साथ एक किलो अमरूद भी खरीदे।

सब्जियाँ खरीदते समय रमा ने कहा, "पिता जी करेला और सुआ की सब्जी छोड़कर कुछ भी खरीदिए।''

पिता जी ने रमा को समझाते हुए कहा, "रमा, कुछ बातें अच्छी नहीं लगतीं फिर भी वे करना आवश्यक होती हैं, इसलिए करनी होती हैं। भोजन के बारे में भी यही बात है। प्रत्येक सब्जी में कुछ विशेष पोषक मूल्य होते हैं और वे हमारे शरीर के लिए आवश्यक होते हैं। हमारे शरीर को मीठा, कड़वा, कषाय, खारा, तीखा और खट्टा जैसे सभी रस प्राप्त होने चाहिए। तभी हमारा स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। तुम्हारी पसंद की भिंडी और रघु की पसंद की पालक की सब्जी भी खरीदेंगे।

रघु ने खरीदे जाने वाले सामान की सूची देखते हुए कहा, "पिता जी, अब मनसुखलाल काका की दुकान से मीठी सेव और रेवड़ियाँ लेनी हैं। दादी ने बातियों के लिए कपास लाने के लिए कहा है। एक झाड़ू (बुहारी) भी खरीदनी है। पड़ोस की काकी बाजार आ नहीं पाएँगी, उन्होंने अचार के लिए एक किलो मिर्च लाने के लिए कहा है।

पूरी खरीदारी होने पर पिता जी ने रमा के लिए लाख की लाल-हरी चूड़ियाँ और रघु के लिए लट्टू खरीदा।

तभी रमा को सामने एक ओर रंगीन काँच के मनकों से भरी बड़ी टोकरियाँ और पीतल का घंटा दिखाई दिया। वहाँ रमा की सहेली वर्षा और उसके दादा जी खरीदारी कर रहे थे।

पिता जी ने कहा, "अरे, उनकी बड़ी गोठ (गोठा) है ना। वे अपने हीरा- मोती बैलों के और कपिला गाय के गरदनों मे मालाएँ पहनाने के लिए रंगीन मनके और घंटे ले रहे होंगे। बैलपोला (बैलों का एक त्योहार) के दिन सजावट करने के लिए उनकी आवश्यकता होती है।

क्या तुम जानते हो?

सांगोला में पशुओं की साप्ताहिक हाट

जैसे जीवन की आवश्यक वस्तुओं का बाजार होता है, वैसे ही पशुओं की भी साप्ताहिक बाजार (हाट) होती है। सोलापुर जिले के सांगोला में लगने वाली पशुओं की साप्ताहिक हाट खिल्लार नस्ल के गाय-बैलों के लिए प्रसिद्ध है। इस हाट में गाय, बैल, भैंसें, भेड़-बकरियों के स्वतंत्र विभाग बनाए गए हैं। यह हाट रविवार को लगती है। बैल की दौड़ के लिए खिल्लार नस्ल के बैलों की सबसे अधिक माँग होती है। ऐसी ही हाट कई गाँवों में भी लगती है।

गर्मी के दिनों में पक्षियों के लिए पानी की सुविधा करने हेतु रघु को मिट्टी के बर्तन की आवश्यकता थी। मल्लप्पा की दुकान में मिट्टी के सुंदर बरतन मिलते हैं। वहाँ से उसने मिट्टी का एक बड़ा सपाट बरतन लिया। बाजार में पिता जी, रघु और रमा ने गन्ने का रस पीया। उसके बाद खरीद की गईं वस्तुओं से खचाखच भरे थैले लेकर वे घर चले आए। रमा और रघु ने मिलकर खर्च का हिसाब लिखा।

सुपर मार्केट

माँ और पिता जी कभी-कभी सुपर मार्केट में जाते हैं। वहाँ एक ही दुकान में किराना (पंसारी) सामान, सब्जी-फल, ब्रेड-बिस्कुट, साबुन-शैंपू, सौंदर्य प्रसाधन की वस्तुएँ, घरेलू उपयोग की वस्तुएँ, स्टेशनरी जैसी विविध उपयोग की वस्तुएँ बेची जाती हैं। ऐसी दुकान को 'सुपर मार्केट' कहते हैं। ऐसे सुपर मार्केट सामान्यत: महानगरीय क्षेत्रों में पाए जाते हैं।

सुपर मार्केट

शॉपिंग मॉल

शॉपिंग मॉल

यह भी एक प्रकार का बाजार ही होता है। बड़े शहरों अथवा महानगरों में बहुमंजिला इमारतों में विभिन्न प्रकार की वस्तुओं की अनेक दुकानें होती हैं। आने-जाने के लिए सरकती सीढ़ियाँ, लिफ्ट होती हैं। मॉल में सब्जी-फल और अनाज के साथ खिलौने, कपड़े, फर्निचर, इलेक्ट्रीक और इलेक्ट्रोनिक्स का सामान, घरेलू उपयोग की वस्तुएँ आदि सब कुछ होता है।

लोगों को बैठने के लिए कुर्सियाँ होती हैं। अलग-अलग खाद्य पदार्थों, पेय (ड्रींक्स) के स्टॉल होते हैं। यहाँ सब कुछ एक ही छत के नीचे मिल जाता है।

सभी उत्पादनों (वस्तुओं) पर उनके मूल्यों के स्टीकर्स लगे होते हैं। खरीदारी होने के पश्चात पैसे देने के लिए मूल्यों के स्टीकर्स के ऊपर बारकोड सिस्टम का उपयोग किया जाता है। बारकोड स्कैन करके मूल्य देखा जाता है और खरीद की रसीद दी जाती है। खरीदी हुई वस्तुओं का देयक (बिल) नकद रुपये देकर अथवा ऑन लाइन पद्धति द्वारा किया जाता है।

क्या तुम जानते हो?

सामान्यत: बाजार का अर्थ वह स्थान जहाँ प्रतिदिन वस्तुओं खरीद-विक्री होती है। किसी निश्चित दिन अथवा निश्चित समय पर लगने वाले बाजार को 'हाट' कहते हैं। इसी के आधार पर 'बाजार-हाट' इस संयुक्त शब्द का भी प्रयोग किया जाता है। केवल बरतन अथवा कपड़ा जैसे एक ही तरह की वस्तुएँ जहाँ बेची जाती हैं, उस बाजार को 'गंज' कहते हैं। जैसे- कपड़ागंज।

बताओ तो!

- तुम्हारे घर के पास कौन-सा बाजार है? क्या तुम्हें बाजार जाना अच्छा लगता है?
- बाजार हमें क्या सिखाता है?

जागरूक ग्राहक बनेंगे।

वस्तुओं में की जाने वाली मिलावट, वस्तुओं के बढ़े हुए मूल्य, नाप-तोल में की जाने वाली धोखाधड़ी और दूसरे प्रकार की धोखाधड़ी से ग्राहकों/उपभोक्ताओं का संरक्षण करने के लिए ग्राहक/उपभोक्ता आंदोलन अस्तित्व में आया। ग्राहकों / उपभोक्ताओं को चाहिए कि वस्तुएँ खरीदते समय वे वस्तुओं की उचित नाप- तोल, सही दाम आदि की विश्वसनीयता की जाँच करें।

जागो ग्राहक जागो

स्वाध्याय

प्र.१ नाम लिखो :

(अ) वस्तुओं की विक्री करने वाला । ______

(आ) वस्तुओं की खरीद करने वाला । ______

(इ) वस्तुओं की खरीद-विक्री का स्थान। ______

प्र.२ बाजारों के प्रकार और उनमें विक्री की जाने वाली वस्तुओं का संकल्पना चित्र पूर्ण करो :

प्र.३ दुकान में खरीदी गई वस्तु की रसीद का चित्र देखकर प्रश्नों के उत्तर लिखो :

(१) दुकान किन वस्तुओं की है? ________________

(२) रसीद में खरीदी गई वस्तुओं के नाम लिखो। ________________

(३) रसीद के ऊपर खरीद का दिनांक लिखो। ________________

(४) रसीद के आधार पर बताओ कि दुकानदार को (विक्रेता को) कितने रुपये देने होंगे? ____________

(५) क्या विक्रेता ने कोई छूट दी है? यदि दी है तो कितने रुपयों की दी है? ________________

वस्तु खरीद का कर बीजक (टैक्स इनवाइस)

GSTIN : 27ABCDE1234S1Z5

टॉय एन जॉय

रंकाला चौपाटी, कोल्हापुर ४१६०१२

मोबाइल – ९९९९९०००००

ईमेलः toynjoy@gmail.com

इनवाइस (बीजक) नं. : 25-26/099 इनवाइस (बीजक) दिनांक : 1 जनवरी-2026

	HSN क्र	कर योग्य मूल्य	GST				कर सहित मूल्य
			CGST Rate		SGST Rate		
			Rate	Tax	Rate	Tax	
बैटरी ट्रैन	9503	₹400	9%	36	9%	36	₹472
ट्राइसिकल	9504	₹300	6%	18	6%	18	₹336
			कुल मूल्य				₹ 808

प्र.४ निम्नलिखित सारिणी पूर्ण करो : (जैसे–स्थान और मिलने वाली वस्तुएँ)

साप्ताहिक बाजार	सुपर मार्केट	शॉपिंग मॉल
----------------------------	----------------------------	----------------------------
----------------------------	----------------------------	----------------------------
----------------------------	----------------------------	----------------------------
----------------------------	----------------------------	----------------------------

प्र.५ ऐसा क्यों हुआ होगा, कारणसहित लिखो :

(१) बाजार जाते समय रमा ने अपने साथ कपड़े की थैलियाँ क्यों लीं ?

(२) कुछ बातें अच्छी नहीं लगतीं, इसलिए नहीं बल्कि आवश्यकता होती है इसलिए करनी होती हैं, ऐसा पिता जी ने रमा से कहा।

(३) विक्रेता अपनी–अपनी वस्तुओं का चिल्ला – चिल्लाकर विज्ञापन कर रहे थे।

(४) खरीद की जाने वाली वस्तुओं की सूची रघु घर से ही बनाकर ले आया था।

प्र.६ निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षेप में उत्तर लिखो :

(१) रमा के पिता जी ने बाजार में क्या–क्या खरीदा ?

(२) वस्तुएँ खरीदते समय कौन–सी सावधानी बरतनी चाहिए; इसका सूचनापत्र बनाओ।

(३) बारकोड सिस्टम का उपयोग किसलिए किया जाता है ?

उपक्रम

- अपने परिसर के बाजार में जाओ और वहाँ क्या–क्या होता है; इसकी जानकारी लिखो।
- अपने परिसर के किसी एक प्रसिद्‌ध बाजार की जानकारी इकट्‌ठी करो और लिखो।
- सुपर मार्केट, शॉपिंग मॉल में जाओ और वहाँ के अनुभवों के बारे में लिखो।

***

५. हमारी आवश्यकताएँ और समस्याएँ

ऊपर दिए चित्र का निरीक्षण करो :

प्रतिदिन का जीवनयापन करने के लिए मनुष्य को अनेक बातों की आवश्यकता होती है। ऊपर के चित्र में अन्न और पानी, ये दो बातें दी गई हैं। मनुष्य के लिए और क्या आवश्यक होता है; इसका विचार करो और चौकोनों में लिखो।

प्रतिदिन सुबह जगने से लेकर रात में सोने तक तुम क्या-क्या करते हो, वह याद करो। इसके लिए तुम्हें किन बातों की आवश्यकता होती है, उसका विचार करो । उन बातों को 'आवश्यकता' कहते हैं।

जिन बातों के बिना मनुष्य को जीना कठिन हो जाता है, उन बातों को मनुष्य की 'मूलभूत अथवा मौलिक आवश्यकताएँ' कहते हैं।

* **मूलभूत आवश्यकताएँ : भोजन, वस्त्र, आवास, स्वास्थ्य और शिक्षा**

सोचो :

हमारे घर के नल में दो दिन पानी नहीं आया तो क्या होगा ?

आवश्यकता की बातें और पसंद की बातें :

क्या इन दोनों बातों में कोई अंतर है?

जी हाँ। निश्चित ही अंतर है। आवश्यकता का अर्थ है; वे बातें जिनके बिना हमारा जीवित रहना कठिन होता है। जैसे – हम भोजन और पानी के बिना जीवित नहीं रह सकते परंतु पसंद की बातें हमारे जीवन को अधिक सुखद और आरामदायी बनाती हैं। यद्यपि ये पसंद की बातें न मिलने पर भी जीवित रहना संभव होता है।

राजू को मिठाई बहुत अच्छी लगती है। वह प्रतिदिन बहुत मिठाई खाता है। क्या यह उचित है?

सभी आवश्यकता की बातें पसंद की बातें नहीं हो सकतीं और सभी पसंद की बातें आवश्यकता की बातें होंगी ही, ऐसा नहीं है। संक्षेप में, आवश्यकताओं को पूर्ण करना ही होता है परंतु पसंद की बातों पर नियंत्रण रखना संभव होता है।

निम्नलिखित में से आवश्यकता क्या है और पसंद क्या है, यह निश्चित करो। आवश्यकता के आगेवाली चौखट में 'आवश्यकता' लिखो और पसंद के आगेवाले स्थान में 'पसंद' लिखो :

१. अनाज	२. वेफर्स/ चॉकलेट ....
३. शीतपेय (कोल्ड ड्रींक)	४. आवास ....
५. जल (पानी)	६. खिलौने ....
७. वस्त्र	८. पुस्तकें ....

अब हम अपनी मूलभूत आवश्यकताओं की जानकारी प्राप्त करेंगे :

जल : जल के कारण हमारी प्यास मिटती है। मनुष्यों की तरह जल पशु-पक्षियों और वनस्पतियों के लिए भी आवश्यक है। यदि जल नहीं मिला तो उनका भी जीवित रहना असंभव हो जाएगा। अतः जल को 'जीवन' कहते हैं।

जल का प्रमुख स्रोत वर्षा है इसलिए जल सार्वजनिक संसाधन है। उसपर सभी का अधिकार है।

करके देखो :

तुम्हारे घर में जल कहाँ से और कैसे आता है, यह संकल्पना चित्र की सहायता से निम्नलिखित चौखट में दर्शाओ :

वर्षा

↓

प्रमुख स्रोत

↓

....

जल का स्रोत – विभिन्न जलाशय

(नदी, बाँध, कुआँ, छोटा बाँध, नाला, झरना, नहर आदि।)

↓

....

कहाँ इकट्ठा किया ?

(छोटा बाँध, जल की टंकी, कुआँ आदि)

↓

....

आवास तक कैसे आया ?

(कुआँ, नलकूप, नल, सार्वजनिक हथपंप, जल शुद्धीकरण केंद्र आदि)

भोजन : मनुष्य को जीवित रहने के लिए जल के साथ ही भोजन की भी आवश्यकता होती है। सभी को पर्याप्त और पौष्टिक भोजन मिलना चाहिए। साथ ही; भोजन व्यर्थ नष्ट न हो; इसकी हम सभी पर जिम्मेदारी है।

बताओ तो!

- तुम अपने प्रतिदिन के भोजन में कौन-से खाद्य पदार्थ खाते हो ?
- वे खाद्य पदार्थ तुम्हें कहाँ से प्राप्त होते हैं ?
- परिवार में सभी को भोजन पूरा पड़ेगा, इसका ध्यान कैसे रखना चाहिए ?

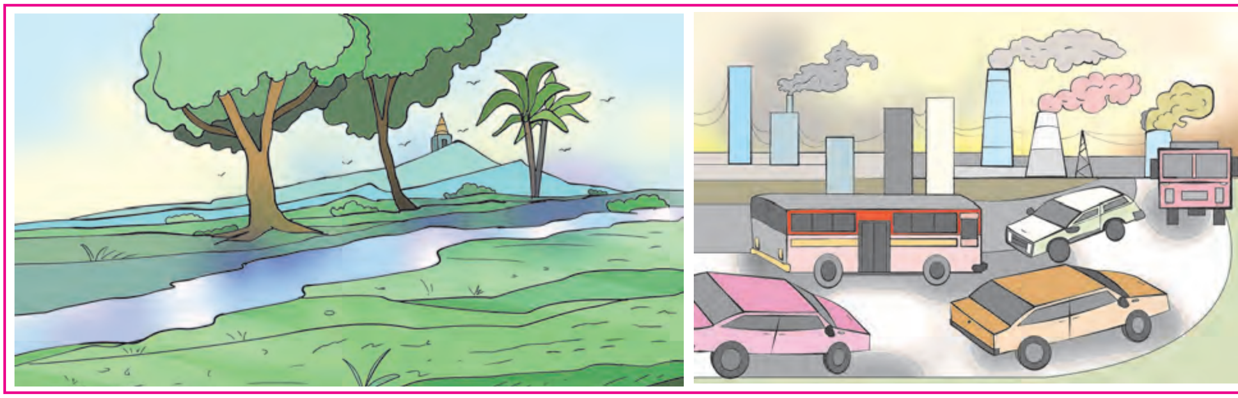

उपरोक्त स्थानों में से तुम्हें किस स्थान पर रहना अच्छा लगेगा, क्यों?

हवा : उत्तम स्वास्थ्य के लिए 'शुद्ध हवा' प्राप्त होना महत्त्वपूर्ण आवश्यकता है। शुद्ध हवा में किए जाने वाले श्वसन से शरीर और मन स्वस्थ रहते हैं। फेफड़ों का स्वास्थ्य अच्छा रहता है। हमें दौड़ने- भागने और प्रतिदिन के कार्य करने के लिए उत्साह प्राप्त होता है। कभी-कभी हवा में वाहनों का धुआँ, कारखानों का धुआँ, धूलि के कण घुल-मिल जाते हैं। परिणामतः हवा अशुद्ध हो जाती है और हमारे स्वास्थ्य के लिए संकट निर्माण हो जाता है।

बताओ तो !

- क्या तुम्हारे परिसर की हवा शुद्ध है?
- हवा की शुद्धता को बनाए रखने के लिए कौन-से उपाय किए जाते हैं?

वस्त्र : धूप, हवा, वर्षा से शरीर की रक्षा करने के लिए वस्त्र की आवश्यकता होती है। अलग-अलग ऋतुओं में हम विभिन्न प्रकार के वस्त्र पहनते हैं। अपनी आवश्यकता के अनुसार सभी को पर्याप्त कपड़े प्राप्त होना आवश्यक है।

आवास : सभी को सुरक्षित आवास प्राप्त होना आवश्यक है। आवास के कारण हमें संरक्षण प्राप्त होता है। हमारा आवास मतलब हमारा घर है। हम गाँव में रहते हैं अथवा महानगर में; हम जहाँ रहते हैं, वहाँ की जलवायु कैसी है, वहाँ कौन-से साधन उपलब्ध हैं; इसपर यह निर्भर करता है कि हमारा आवास अथवा घर कैसा होना चाहिए।

स्वास्थ्य : अच्छी आदतों और उत्तम भोजन के कारण स्वास्थ्य अच्छा रहता है। नियमित व्यायाम और योग-प्राणायाम करने से हमें स्वस्थ रहने में सहायता प्राप्त होती है। यदि हमारा स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तभी हम प्रतिदिन के कार्य कर सकते हैं। स्वयं का और अपने परिवार के सदस्यों का ध्यान रख सकते हैं। विभिन्न कारणों से लोगों को बीमारी हो सकती है। ऐसे समय सही उपचार और औषधियाँ मिलना आवश्यक होता है।

इसके लिए गाँवों में प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र होते हैं। महानगरों में छोटे-बड़े अस्पताल होते हैं। लोगों का उनकी आवश्यकता के अनुसार उपचार किए जाते हैं, औषधियाँ दी जाती हैं।

तुम्हें क्या लगता है?

उत्तम स्वास्थ्य बनाए रखने के लिए क्या किया जा सकता है?

शिक्षा : समाज में सभी के लिए 'शिक्षा' प्राप्त होना अत्यंत आवश्यक है। सभी तक शिक्षा पहुँचे; इसके लिए सरकार विविध योजनाएँ चलाती हैं। शिक्षा के कारण हम असंख्य बातों से अवगत होते हैं। शिक्षा के कारण विचार करना, समस्या हल करना, नई बातों का निर्माण करना जैसी बातें साध्य होती हैं। भोजन, वस्त्र, आवास, स्वास्थ्य और शिक्षा मानव की मूलभूत आवश्यकताएँ हैं। जीवन को उत्तम ढंग से जीने के लिए प्रत्येक मनुष्य की मूलभूत आवश्यकताएँ पूर्ण होना आवश्यक है।

बताओ तो !

- अपना, अपने परिवार का और अपने परिसर का विचार करो। इसके माध्यम से क्या तुम्हें कुछ और आवश्यकताएँ अनुभव होती हैं?
- शिक्षा एवं स्वास्थ्य के विषय में सुविचार बताओ।

स्वच्छता कर्मी, डॉक्टर, शिक्षक, किसान, पुलिस, सैनिकों के कारण हमारी कौन-सी आवश्यकताएँ पूर्ण होती हैं?

प्राकृतिक संसाधन : हमारे आस-पास के वे सभी घटक जो हमारे लिए उपयोगी होते हैं और जिनका उपयोग करके हम अपना जीवन अधिक उत्तम बना सकते हैं, उन घटकों को संसाधन कहते हैं। आवश्यकताएँ पूर्ण करने के लिए संसाधनों की जरूरत होती है। प्रकृति से प्राप्त होने वाले और हमारे परिसर में पाए जाने वाले घटकों का उपयोग हम अपनी आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिए करते हैं। उन घटकों को 'प्राकृतिक संसाधन' कहते हैं। जैसे- प्राकृतिक संसाधन जल का उपयोग हमें सावधानी और आवश्यकता के अनुसार ही करना चाहिए।

मानव निर्मित संसाधनों में धन, संपत्ति, परिवहन के साधन, यंत्र आदि का समावेश होता है।

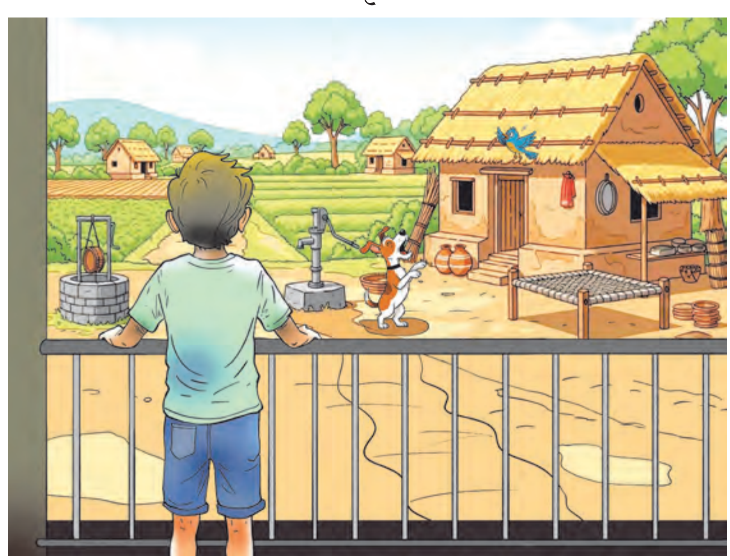

चित्र में दिखाए गए मानव निर्मित और प्रकृति निर्मित संसाधनों को पहचानो।

हमारी समस्याएँ :

हमने अपनी आवश्यकताओं को समझ लिया। अब हम समस्याओं को समझेंगे। प्रतिदिन के जीवन में उत्पन्न होने वाली रुकावटों को समस्या कहते हैं। मनुष्य को बेहतर ढंग से जीने के लिए आवश्यक बातें सहजता से उपलब्ध न होना ही समस्या है।

जगन के गाँव में जल का अभाव है। जल की टंकी में जल नहीं है। नदियाँ सूख गई हैं। कुएँ सूख गए हैं। बाँध का जल स्तर नीचे चला गया है। उसके गाँव के लोगों को प्रतिदिन के उपयोग का भी पानी नहीं मिलता है। उसके गाँव में पर्याप्त मात्रा में पानी न मिलना एक समस्या है।

अनाज का अभाव एक बहुत बड़ी समस्या है। इसके निम्न कारण हो सकते हैं। जैसे- अतिवृष्टि, सूखा, कृषिभूमि की कम मात्रा, महँगाई, युद्‌ध आदि ।

सोचो :

तुम्हारे परिसर में कौन-कौन-सी समस्याएँ पाई जाती हैं? उनपर क्या उपाय किए जा सकते हैं?

ऊपरी चित्रों में तुम्हें कौन-कौन-सी समस्याएँ दिखाई देती हैं? इन समस्याओं के कारण प्रतिदिन के जीवन में कौन-सी बाधाएँ आती हैं?

सामाजिक समस्याएँ और सुविधाएँ :

जन्मतः किसी बीमारी अथवा दुर्घटना के कारण हममें से कुछ व्यक्ति शारीरिक विकलांगता के शिकार हो जाते हैं। सार्वजनिक स्थानों पर चलते-फिरते समय उन्हें अनेक बाधाओं और असुविधाओं पर मात करनी पड़ती है। परिणामतः उन्हें विशेष सेवा- सुविधाओं और सहायता की आवश्यकता होती है।

बताओ तो !

सड़क पर एक दृष्टिहीन व्यक्ति हाथ में सफेद लाठी लेकर जा रहा है। ऐसे समय तुम क्या करोगे ?

दृष्टिहीन लोग सफेद लाठी की सहायता से सार्वजनिक स्थानों पर खुले रूप में आ-जा सकते हैं। स्पर्श लिपि (ब्रेल लिपि) का प्रयोग कर वे पढ़-लिख सकते हैं। गणितीय प्रक्रिया भी कर सकते हैं।

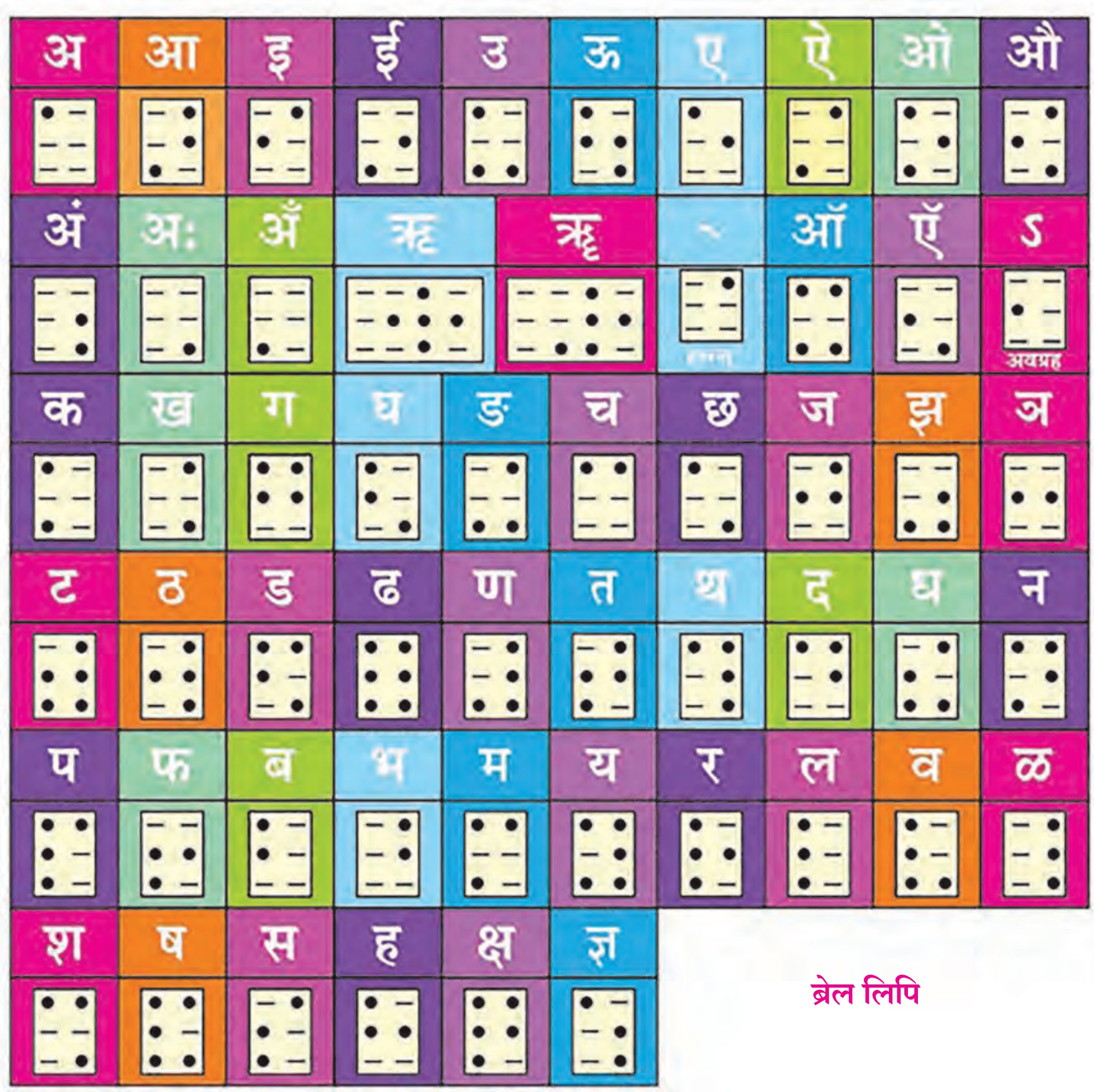

ब्रेल लिपि

बताओ तो !

पाठशाला की सीढ़ियों के एक ओर ढलान (रैंप) किसलिए है?

जन्मतः अथवा दुर्घटनाग्रस्त होने पर कई बार व्यक्ति के पैर बेकार हो जाते हैं। ऐसे समय उस व्यक्ति के लिए सीढ़ियाँ चढ़ना- उतरना संभव नहीं होता है? उसके लिए रैंप का उपयोग किया जाता है। रैंप के कारण पहियोंवाली कुर्सी का उपयोग करने वाले व्यक्ति को इमारत के अंदर-बाहर जाना-आना संभव हो जाता है। पहियोंवाली कुर्सी का उपयोग करने वाले व्यक्तियों के लिए कुछ स्थानों पर विशेष प्रकार के शौचालयों की सुविधा भी होती है।

बताओ तो !

क्या तुम सांकेतिक चिह्नों की भाषा जानते हो?

कर्णबधिर अर्थात बहरे व्यक्तियों के लिए इशारों की भाषा की सुविधा होती है। वे बोलने वाले के होंठों की हरकतों और हाव-भाव देखकर कही गई बात को समझने की तकनीक को जानते हैं। कर्णबधिरों के लिए सांकेतिक इशारोंवाले (चिह्नों) विशेष समाचार दूरदर्शन पर प्रसारित किए जाते हैं।

दिव्यांग व्यक्तियों के लिए बिना रुकावट/बाधा का वातावरण बना देना आवश्यक होता है। वे पाठशाला, विभिन्न कार्यालयों, सार्वजनिक इमारतों, स्वास्थ्य केंद्रों और मनोरंजन केंद्रों आदि स्थानों पर सहजता से आ-जा सकें, इसके लिए सरकार विविध सुविधाएँ देने का प्रयास करती है।

सांकेतिक चिह्नों की भाषा

- **पाठ्‌यपुस्तक के प्रारंभ में दिए गए QR कोड की लिंक के आधार पर सांकेतिक चिह्नों की भाषा समझ लो।**

क्या तुम जानते हो?

मुरलीकांत पेटकर : पेटकर मूलतः सांगली के निवासी हैं। जर्मनी के हाइडल बर्ग में अगस्त १९७२ में पैराऑलिंपिक का आयोजन किया गया था। इस प्रतियोगिता में उन्होंने विश्व कीर्तिमान स्थापित किया। साथ ही, मुरलीकांत पेटकर ने अपने देश के लिए स्वर्णपदक जीता था। उन्हें वर्ष २०१८ ई. में 'पद्मश्री' पुरस्कार से सम्मानिए किया गया है। वर्ष १९६५ में भारत-पाकिस्तान के बीच हुए युद्ध में गोली लगने से वे घायल हुए थे। परिणामतः उन्हें दिव्यांगत्व प्राप्त हुआ था। फिर भी उन्होंने मुक्केबाजी, भालाफेंक और गोला फेंक जैसे खेलों में विशेष निपुणता प्राप्त की थी।

शीतलदेवी : शीतलदेवी जम्मू-कश्मीर राज्य से हैं। उन्होंने दिव्यांग खिलाड़ियों के लिए आयोजित कई प्रतियोगिताओं में 'तीरंदाजी' खेल में स्वर्णपदक प्राप्त किए हैं। उनके द्‌वारा प्रदर्शित इस विशेष कार्य के लिए भारत सरकार ने उन्हें 'अर्जुन' पुरस्कार से सम्मानित किया है।

स्वाध्याय

प्र.१ रिक्त स्थानों में उचित विकल्प चुनकर लिखो :

(अ) पीने के लिए पानी .... में शुद्‌ध किया जाता है।

(१) कुएँ (२) जलशुद्‌धीकरण केंद्र

(३) पानी की टंकी (४) कारखाने

(आ) गाँव में औषधोपचार .... में होता है।

(१) ग्राम पंचायत (२) बैंक

(३) प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र (४) पाठशाला

(इ) प्राकृतिक संसाधनों का हमें .... उपयोग करना चाहिए।

(१) जैसा चाहिए वैसा (२) भरपूर

(३) कभी-कभी (४) सावधानी के साथ

प्र.२ निम्नलिखित कथन कारणसहित लिखो :

(१) देश में कभी-कभी अन्न का अभाव हो सकता है।

(२) अपनी पसंद पर नियंत्रण रखना आवश्यक होता है।

(३) जल को 'जीवन' कहते हैं।

प्र.३ नीचे कुछ कथन दिए गए हैं। उन्हें पढ़ो। उससे होने वाले लाभ लिखो।

(१) अन्न व्यर्थ में नष्ट न होने देना प्रत्येक की जिम्मेदारी है।

(२) सभी को सुरक्षित आवास प्राप्त होना आवश्यक है।

(३) सभी का स्वास्थ्य उत्तम रहे, यह आवश्यक है।

(४) समाज के प्रत्येक व्यक्ति को शिक्षा प्राप्त होनी चाहिए।

प्र.४ निम्नलिखित संकल्पना चित्र पूर्ण करो :

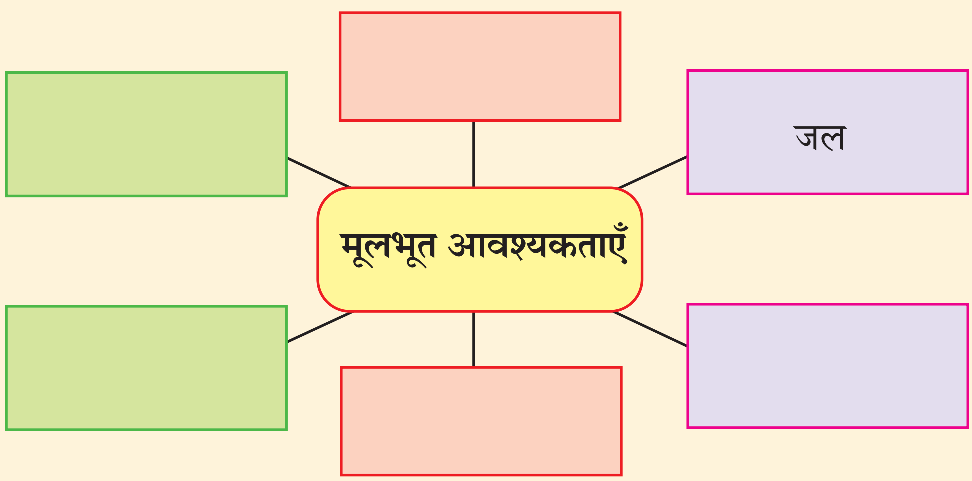

प्र.५ निम्नलिखित प्रसंग में तुम क्या करोगे?

(१) विवाह समारोह में लोग अन्न को व्यर्थ में नष्ट कर रहे हैं।

(२) दिव्यांग व्यक्ति सड़क पार कर रहा है।

(३) पड़ोस का रमेश पाठशाला में नियमित रूप से जाता नहीं है।

(४) कविता हमेशा शौक से शीतपेय (कोल्ड ड्रींक) पीती है।

प्र.६ तुम्हारी पाठशाला में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस कैसे मनाया जाता है; यह बताओ।

उपक्रम

- अलग- अलग ऋतुओं में कौन-कौन-से वस्त्र पहनते हैं। उनके चित्र एकत्रित करो और उनके नीचे नामों की सूची लिखो।
- दिव्यांग व्यक्तियों को सरकार की ओर से कौन-कौन-सी सुविधाएँ मिलती हैं, उन्हें अपने अभिभावकों की सहायता से लिखो।
- राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भारत के दिव्यांग खिलाड़ियों द्‌वारा किए गए विशेष प्रदर्शन की जानकारी अंतरजाल की सहायता से प्राप्त करो।

२१ जून – अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

***

६. जल साक्षरता

बूँद–बूँद यहाँ के पानी की,
जमीन में चलो रिसाएँगे।
जल ही हमारी सच्ची दौलत,
जल साक्षरता का पाठ दोहराएँगे ॥

जल का अर्थ पानी है। जल साक्षरता का अर्थ पानी के महत्त्व को समझना; पानी को बचाना और जमीन के नीचे जल स्तर को बढ़ाने का प्रयत्न करना है।

संत ज्ञानेश्वर ने 'ज्ञानेश्वरी' ग्रंथ में जल के महत्त्व को समझाते हुए कहा है :

"नगरे चि रचावी । जलाशये निर्मावी।
महावने लावावी । नानाविधे ॥"

संत ज्ञानेश्वर

अर्थात नगरों को बसाते समय जलाशयों का निर्माण करें। पेड़ लगाएँ जिससे उन नगरों को जल की समस्या त्रस्त नहीं करेगी।

हमें जीने के लिए जल की आवश्यकता होती है। जल का प्रमुख स्रोत वर्षा है। वर्षा की मात्रा सब ओर एक–सी नहीं होती है। वर्षा कहीं कम तो कहीं अधिक होती है। मूसलाधार वर्षा होने से कई स्थानों पर बाढ़ आती है तो कुछ स्थानों पर वर्षा न होने से अकाल की स्थिति उत्पन्न होती है। जल सभी को मिले इसलिए जल का नियोजन करना पड़ता है।

क्या तुम जानते हो ?

एक बार लातूर शहर में पानी की भयानक कमी हो गई थी। उस समय सरकार की ओर से रेलगाड़ी द्‌वारा पानी ले जाकर वहाँ पानी की आपूर्ति की गई थी।

भारत में प्रतिवर्ष निश्चित अवधि में ही वर्षा होती है। उसे हम 'वर्षा ऋतु' कहते हैं। वर्षा जल को रोककर उसे उपयोग में लाने के लिए, इकट्ठा कर रखने के लिए नदी पर बाँध का निर्माण करवाया जाता है। बाँध के जल का शुद्‌धीकरण कर उसे नल द्‌वारा लोगों तक पहुँचाया जाता है।

बताओ तो !

* जल को बचाने के लिए तुम क्या करते हो ?

भारत में प्राचीन काल से जल प्रबंधन को महत्त्व दिया गया है। सिंधु संस्कृति में घर के आँगन में कुएँ थे। उनके द्‌वारा पेयजल उपलब्ध कराया जाता था। कालांतर में गौतम बुद्‌ध के कालखंड में भिक्खुओं के आवासों के लिए अनेक विहार खुदवाए गए। यात्रा के बीच कुछ समय विश्राम करने और वर्षाकाल में कुछ दिन रहने के लिए गुफाओं का उपयोग किया जाता था। पीने के लिए वहाँ वर्षा जल का भंडारण किया जाता था। उसे 'प्याऊ' (पाणपोढ़ी) कहते हैं। महाराष्ट्र के जुन्नर के आस-पास खोदे गए विहारों में ऐसे 'प्याऊ' पाए जाते हैं। सम्राट अशोक ने कुएँ खुदवाए थे और यात्रियों के लिए जल की सुविधा करवाई थी।

शिवनेरी किले पर प्याऊ

सातारा जिले की माण तहसील में शिखर शिंगणापुर नामक स्थान है। यहाँ शंभुमहादेव का मंदिर है। इस मंदिरवाली पहाड़ी पर जल की सुविधा नहीं थी। छत्रपति शिवाजी महाराज के दादा जी मालोजीराजे भोसले ने यहाँ एक विशाल जलाशय बँधवाया।

शिखर शिंगणापुर में शिवतीर्थ जलाशय

गंगासागर जलाशय-रायगढ़ किला

'गड़ावरी आधी उदक पाहून किल्ला बांधावा'- 'जहाँ पेयजल उपलब्ध हो सकेगा, वहीं किले का निर्माण करवाए।' यह छत्रपति शिवाजी महाराज ने कहा था। छत्रपति शिवाजी महाराज ने पानी के लिए छोटे-बड़े जलाशय खुदवाएँ। इन जलाशयों में ऐसी सुविधा की गई थी कि वर्षा जल इकट्ठा किया जाएगा। जलाशयों की स्वच्छता रखें और जल का उपयोग सावधानी के साथ करें, यह भी उन्होंने कहा था।

पुण्यश्लोक अहिल्यादेवी होलकर ने कुएँ खुदवाएँ। तालाबों-जलाशयों का निर्माण करवाया। परिणामतः सबके लिए जल की सुविधा हो सकी। प्याऊ खुलवाएँ और राहगीरों के लिए जल की सुविधा करवाई। जैसे- इगतपुरी की टोप बावड़ी, जेजुरी का मल्हार गौतमेश्वर जलाशय आदि।

इगतपुरी की टोप बावड़ी

जेजुरी में गौतमेश्वर जलाशय

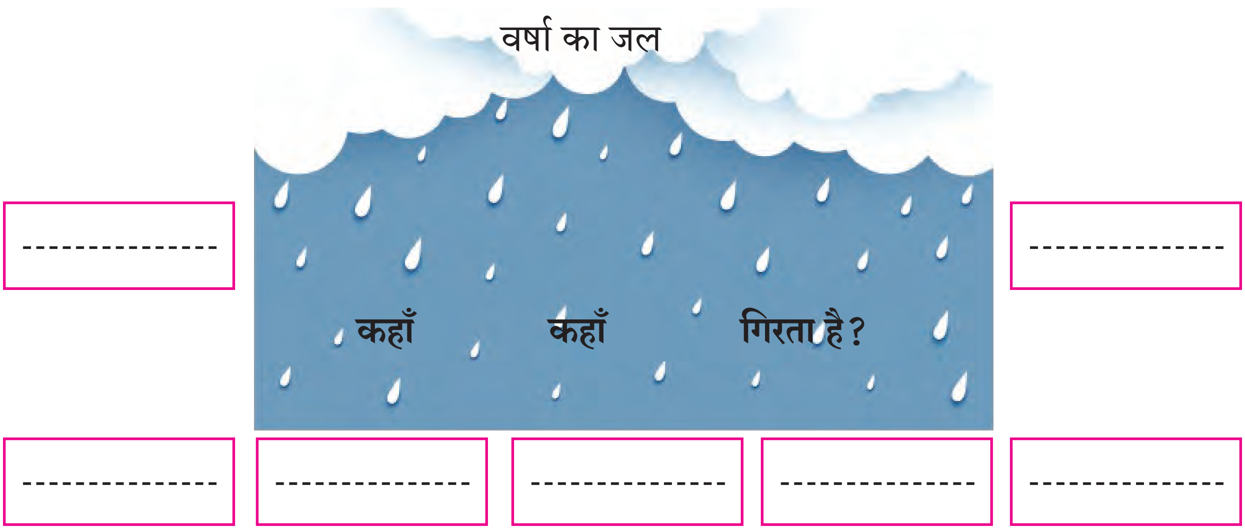

भूजल भंडारण : मकानों की छतों पर, इमारतों के छज्जों पर, पर्वतों के माथे पर और भूमि पर वर्षा का जल गिरता है। उस पानी को व्यर्थ न जाने देते हुए विशिष्ट पद्धति से उसे टंकियों में इकट्ठा किया जाता है अथवा जमीन में सोख गड्ढे तैयार कर उनमें रिसाया जाता है। परिणामस्वरूप भूजल स्तर में वृद्धि होती है। इस जल से कुएँ भर जाते हैं। भूमि की नमी बनी रहती है। पर्यावरण का संतुलन बनाकर रखा जाता है। वृक्षारोपण और वृक्ष संवर्धन करने से भूमि का कटाव रुक जाता है। पेड़ों की जड़ें जल को भूमि में रिसाने में सहायता करती है।

क्या तुम जानते हो ?

'वनराई' पूर्व केंद्रीय मंत्री मोहन धारिया द्वारा पुणे में स्थापित स्वयंसेवी संस्था है। इस संस्था द्वारा वनराई छोटा बाँध (दीवार) बाँधा जाता है। यह बाँध कम खर्च में बनाया जाता है। झरने में अथवा नाले में पानी रोककर भूमि के अंदर जलस्तर में वृद्धि होने में सहायता प्राप्त होती है। इस जल का उपयोग कृषि और पेयजल के लिए किया जाता है।

जल की बचत : पृथ्वी के ऊपर मीठे जल के स्रोत सीमित हैं। वर्षा सभी स्थानों पर समान रूप से नहीं होती है। उसकी मात्रा प्रत्येक स्थान पर न्यूनाधिक होती है। जनसंख्या बढ़ती जा रही है। अतः जल की माँग में वृद्‌धि हो रही है। इस स्थिति में जल का उपयोग बचत के साथ करना आवश्यक है। साथ ही; मीठे जल के स्रोतों को स्वच्छ रखना, जल प्रदूषण की रोक-थाम करना आवश्यक है।

क्या तुम जानते हो?

जल का पुनर्उपयोग करना समय की आवश्यकता है : सातारा जिले की जकातवाड़ी में स्वच्छतागृह से बाहर निकलने वाले पानी को छानकर तथा उसपर शुद्‌धीकरण की प्रक्रिया कर उसका उपयोग फलों के बगीचे और घर के पीछेवाली बाग तथा साफ-सफाई के लिए किया जाता है। इससे पानी का पुनः-पुन: उपयोग किया जा सकता है। पानी के पुनर्उपयोग की प्रक्रिया महानगरों में अधिक मात्रा में दिखाई देती है।

सोचो :

तुम्हारे घर में उपयोग में लाए गए पानी का पुनःउपयोग तुम कैसे करोगे?

पानी बचाने की अच्छी आदतें :

* जितना आवश्यक हो, उतने ही पानी का उपयोग करना चाहिए।
* नल को खुला, बहता न छोड़ें। टपकने वाले नलों की मरम्मत करें।

जल को शुद्‌ध करने का अर्थ जलशुद्‌धीकरण करना है। विभिन्न कारणों से जल प्रदूषित होता है अर्थात उसमें रोग के हानिकारक घटक घुल-मिल जाते हैं। यदि ऐसे प्रदूषित जल का उपयोग लोग अपने लिए अथवा खेती के लिए उपयोग में लाते हैं तो वह जल स्वास्थ्य के लिए घातक हो सकता है। अतः ऐसे जल का शुद्‌धीकरण करना आवश्यक होता है।

जल प्रदूषित होने के कारण

सोचो :

* जल प्रदूषित होने के कौन-कौन-से कारण हैं?
* जल को शुद्ध करने की कौन-कौन-सी पद्धतियाँ हैं?

डॉ. राजेंद्र सिंह

वॉटर मैन ऑफ इंडिया : (भारत का जलपुरुष) राजस्थान के मारवाड़ क्षेत्र में वर्षा शायद ही होती है। लोगों को प्रतिदिन के उपयोग के लिए, खेती के लिए पानी नहीं मिलता है। डॉ. राजेंद्र सिंह इसी क्षेत्र में छोटे से बड़े हुए। उन्होंने पानी के लिए लोगों का दूर-दूर तक भटकना अनुभव किया था इसलिए इसका उपाय करने के लिए उन्होंने 'जोहड़' बाँधना और बँधवाना आरंभ किया। 'जोहड़' का अर्थ मिट्टी का छोटा बाँध अथवा छोटी दीवार है। इन बाँधों / दीवारों द्‌वारा पानी को रोका। अतः जहाँ जोहड़ योजना चलाई, वह क्षेत्र हराभरा बन गया। इस कार्य के कारण कालांतर में वे 'वॉटरमैन ऑफ इंडिया' के रूप में विख्यात हुए।

अण्णा हजारे

महाराष्ट्र राज्य में अहिल्यानगर जिले के रालेगणसिद्‌धि गाँव में अण्णा हजारे और हिवरे बाजार नामक गाँव में पोपटराव पवार ने गाँव में भूजल स्तर बढ़ाने के लिए विविध प्रयास किए हैं।

पोपटराव पवार

क्या तुम जानते हो?

* महाराष्ट्र में १० मई को 'जल भंडारण दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

सजीवों के लिए जल महत्वपूर्ण घटक है। अतः जलरक्षण और जलसंवर्धन करना सभी का दायित्व है। 'जलसाक्षर' बनकर जल की बचत करनी चाहिए।

स्वाध्याय

प्र.१ कारणसहित लिखो :

(१) नदी पर बाँध का निर्माण किया जाता है।

(२) लातूर शहर को रेलगाड़ी द्‌वारा जल की आपूर्ति की गई।

(३) छत्रपति शिवाजी महाराज ने रायगढ़ में जल की व्यवस्था की।

(४) डॉ. राजेंद्र सिंह ने जोहड़ बाँधे और बँधवाए।

प्र.२ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो–तीन वाक्यों में लिखो :

(१) तुम्हारे परिसर का पानी प्रदूषित हुआ है, इस विषय में अपने अभिभावकों साथ विचार–विमर्श करके की जाने वाली उपाय योजना लिखो।

(२) डॉ. राजेंद्र सिंह को 'वॉटरमैन ऑफ इंडिया' क्यों कहते हैं?

प्र.३ साथवाला चित्र देखकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो।

(१) चित्र की जिल्द के ऊपर अंकित विवरण के आधार पर बोतल में कितना पानी समाएगा?

(२) इस बोतल का मूल्य कितने रुपये है?

प्र.४ भूजल भंडारण के बारे में निम्न अनुच्छेद पढ़ो और उसके नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर लिखो :

भूजल भंडारण : मकानों की छतों पर, इमारतों के छज्जों पर, पर्वतों के माथे पर और भूमि पर वर्षा का जल गिरता है। उस पानी को व्यर्थ न जाने देते हुए उसे विशिष्ट पद्धति से टंकियों में इकट्ठा किया जाता है अथवा जमीन में सोख गड्ढे तैयार कर उनमें रिसाया जाता है। परिणामस्वरूप भूजल स्तर में वृद्धि हो जाती है। इस जल से कुएँ भर जाते हैं। भूमि की नमी बनी रहती हैं। पर्यावरण का संतुलन बना रहता है। वृक्षारोपण और वृक्ष संवर्धन करने से भूमि का कटाव रुक जाता है। पेड़ों की जड़ें जल को भूमि में रिसाने में सहायता करती हैं।

(१) वर्षा जल कहाँ–कहाँ गिरता है?

(२) भूजल स्तर में किस कारण से वृद्धि होती है?

(३) वर्षा जल को भूमि में रिसाने के लिए क्या किया जाता है?

(४) इस अनुच्छेद पर आधारित दो घोषवाक्य बनाकर लिखो।

उपक्रम

- डॉ. बाबासाहब आंबेडकर ने जल से संबंधित प्रश्नों के संदर्भ में किए गए कार्य की जानकारी शिक्षकों की सहायता से प्राप्त करो।
- अपने अभिभावकों की सहायता से 'जलयुक्त कृषि योजना' और 'हर घर जल' योजनाओं की जानकारी प्राप्त करो और इन योजनाओं के लाभ संक्षेप में लिखो।

चवदार तालाब का सत्याग्रह

- अपने परिसर में होने वाली वर्षा का मापन कैसे किया जाता है? इसके उपकरण का शिक्षक की सहायता से निरीक्षण करो।
- महाराष्ट्र के बाँधों के चित्र एकत्रित करो और उन्हें चिपक कॉपी में चिपकाओ।

***

७. भारतीय परंपराएँ और सांस्कृतिक विविधताएँ

नीचे दिए चित्र में तुम्हें हमारे देश में कौन–कौन–सी विविधताएँ दिखाई देती हैं?

विविधता में एकता

हमारा भारत देश विविध संस्कृतियों से विभूषित सुंदर देश है। हमारे देश को हजारों वर्षों का इतिहास प्राप्त है।

भारत की विभिन्न भाषाएँ, साहित्य, कलाएँ, पर्व–उत्सव, धर्म आदि भारतीय संस्कृति के अंग हैं। भारत के विभिन्न क्षेत्रों के निवासी हम सभी भारतीय हैं।

संस्कृति किसे कहते हैं?

संस्कृति का अर्थ किसी भी समाज की विशिष्ट जीवन पद्धति है। इसमें उस समाज की विशिष्ट भाषा, वेशभूषा, भोजन, उत्सव, धर्म, पूजा– अर्चना पद्धति, कला– कौशल, साहित्य, तीज–त्योहार आदि घटकों का समावेश रहता है।

पर्व–उत्सव :

भारत के विभिन्न भागों में विविध पर्व– उत्सव मनाए जाते हैं। उनमें से अनेक पर्व– उत्सव खेती और ऋतुओं से संबंधित हैं। हमारे देश का मुख्य व्यवसाय कृषि (खेती) है। अत: हमारे देश को 'कृषि प्रधान देश' कहते हैं।

भारत के विभिन्न पर्व–उत्सव

बैलपोला

भारतीय संस्कृति का एक महत्त्वपूर्ण त्योहार बैलपोला है। इस त्योहार पर बैलों की पूजा की जाती है। किसानों को खेती के कार्यों और अन्य दूसरे कार्यों में भी बैलों का बहुमूल्य सहयोग प्राप्त होता है।

महाराष्ट्र की भाँति हमारे भारत देश के मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, कर्नाटक, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु आदि राज्यों में भी बैलपोला का त्योहार मनाया जाता है। प्रत्येक राज्य में यह त्योहार भिन्न–भिन्न नामों से, पद्धतियों से और अलग– अलग दिनों पर मनाया जाता है।

महाराष्ट्र में यह त्योहार बैलपोला के नाम से पहचाना जाता है। पश्चिम महाराष्ट्र में यह त्योहार भाद्रपद महीने की अमावस को मनाया जाता है। नागपुर जैसे कुछ स्थानों पर 'बड़ा पोला' और दूसरे दिन 'छोटा पोला' के रूप में यह त्योहार दो दिन मनाया जाता है। छत्तीसगढ़ और मध्य प्रदेश में इसे 'पोला', कर्नाटक में 'बेंदूर' अथवा 'भेंडी'; तेलंगाना, आंध्र प्रदेश में 'इरुवाक पूर्णिमा', तमिलनाडु में 'मट्टू पोंगल' जैसे विविध नामों से यह उत्सव देश में मनाया जाता है। उत्तर और पश्चिम भारत में कुछ स्थानों पर इस त्योहार को 'गोवर्धन' अथवा 'गोधन' कहते हैं।

समझेंगे

- महाराष्ट्र – बैलपोला / बड़ा पोला/ छोटा पोला
- छत्तीसगढ़/ मध्य प्रदेश – पोला
- उत्तर और पश्चिम भारत – गोवर्धन / गोधन
- कर्नाटक – बेंदूर / भेंडी
- तमिलनाडु – मट्टू पोंगल
- तेलंगाना / आंध्र प्रदेश – इरुवाक पूर्णिमा

इस त्योहार पर घर के द्‌वार पर तोरण बाँधा जाता है। द्‌वार के आगे रंगोली बनाई जाती है। बैलों को नहलाकर उन्हें स्वच्छ किया जाता है। उन्हें रँगा जाता है। उनकी पीठ पर नक्काशीवाली झूल डालते हैं। सींगों पर पन्नी सजाई जाती है। सिर को मौर बाँधते हैं। गले में कौड़ियों और घुँघरुओं की मालाएँ पहनाते हैं। विभिन्न बाजे बजाकर गाँव में बैलों की शोभायात्रा निकाली जाती है। शोभायात्रा पूरी होने के बाद जब बैल घर के सामने आते हैं तब उनकी पूजा कर उनकी आरती उतारी जाती है। उन्हें पुरणपोळी का भोग लगाया जाता है। उस दिन बैलों को दिन भर आराम कराया जाता है।

दीयों की सजावट कर मनाई जाने वाली 'दीवाली' भारत का सबसे बड़ा त्योहार है। दीवाली त्योहार पारिवारिक एकता और सार्वजनिक आनंद का पर्व है। गणेशोत्सव और दशहरा भी हिंदुओं के महत्त्वपूर्ण त्योहार हैं। बौद्‌ध धर्मियों का 'बुद्‌ध पूर्णिमा' त्योहार महत्त्वपूर्ण है तथा जैन धर्मियों के लिए 'महावीर जयंती' और 'पर्यूषण पर्व' का अत्यंत महत्त्व है। इस्लाम धर्मियों के लिए 'ईद-उल-फितर' अर्थात 'रमजान ईद' महत्त्वपूर्ण त्योहार है। 'नाताल' अथवा 'क्रिसमस' ईसाई लोगों का बड़ा त्योहार है। पारसी धर्मियों के लिए 'नवरोज', सिख धर्मियों के लिए 'गुरु नानक जयंती' महत्त्वपूर्ण त्योहार हैं। पर्व और उत्सव किसी भी धर्म के हों, सभी भारतीय उनमें आनंद के साथ सम्मिलित होते हैं। एक-दूसरे को शुभकामनाएँ और बधाइयाँ देते हैं।

भारत के विभिन्न पर्व-उत्सव

धर्म	त्योहार
हिंदू	दीवाली, गणेशोत्सव, दशहरा
बौद्‌ध	....
जैन	महावीर जयंती, पर्यूषण पर्व
इस्लाम	....
ईसाई	नाताल/ क्रिसमस
पारसी	....
सिख	गुरुनानक जयंती

स्वतंत्रता दिवस और गणतंत्र दिवस राष्ट्रीय त्योहार हैं। इन त्योहारों को देश में सभी नागरिक हर्षोल्लास के साथ मनाते हैं।

पर्वों - उत्सवों के कारण लोग एकत्रित आते हैं। उनमें एकता की भावना उत्पन्न होती है। उत्सवों में गीत गाना, नाचना, रंगोलियाँ बनाना, खेल- दौड़ आदि की गहमा-गहमी होती है। इससे विभिन्न कलाओं का आनंद भी लिया जाता है। भारत के अलग-अलग क्षेत्रों में और गाँव-गाँव में मेले लगते हैं। स्थानीय ग्रामदेवताओं के उत्सवों-मेलों में गाँव के तथा अन्य कारणों से गाँव से बाहर गए हुए लोग एकत्रित आते हैं।

भोजन में विविधता :

भारत के अलग-अलग प्रदेशों में रहने वाले लोगों के भोजन में विविधता पाई जाती है। इसी विविधता के कारण जलवायु और फसलों में अंतर पाया जाता हैं। पंजाबी लोगों के भोजन में प्रमुखतः दाल-रोटी का समावेश रहता है। तटीय क्षेत्र के निवासी चावल और मछली खाते हैं। इसी तरह, कुछ प्रदेशों के कुछ विशेष खाद्‌य पदार्थ प्रसिद्‌ध हैं। जैसे - महाराष्ट्र की पुरणपोळी, दक्षिण भारत का इडली-सांभर आदि व्यंजन संबंधित प्रदेशों के विशिष्ट व्यंजन होने के बावजूद ये व्यंजन पूरे देश में रुचि के साथ खाए जाते हैं।

वेशभूषा में विविधता :

भारत के विभिन्न क्षेत्रों में रहने वाले लोगों की वेशभूषा अथव पहनावा भिन्न-भिन्न हैं। कश्मीर और पंजाब की स्त्रियाँ सलवार-कमीज और दुपट्टा पहनती हैं। राजस्थान की स्त्रियाँ रंग-बिरंगी घाघरा- चोली और चुनरी ओढ़ती हैं। नागालैंड, मिजोरम जैसे पूर्वोत्तर पर्वतीय राज्यों में स्त्रियाँ पाँव तक का लबादा अथवा गाउन पहनती हैं। भारत में स्त्रियों के वस्त्र परिधान में साड़ी का अपना विशेष स्थान है।

पुरुषों की वेशभूषा में भी विविधता दिखाई देती है। कोई पाजामा पहनता है तो कोई धोती पहनता है। कोई लुंगी पहनता है तो कोई पैंट पहनता है। कुछ लोग शर्ट, कुरता, झब्बा, कमीज, जाकिट अथवा कोट पहनते हैं। कुछ लोग सिर पर पगड़ी बाँधते हैं तो कुछ साफा बाँधते हैं। कुछ लोग टोपी पहनते हैं। विभिन्न प्रदेशों में साफों और टोपियों के अनेक प्रकार देखने को मिलते हैं। वर्तमान समय में पारंपरिक वेशभूषा के साथ-साथ लोग विभिन्न प्रकार के वस्त्रों का उपयोग करते हैं।.

खेल :

भारत में विभिन्न प्रकार के खेल खेले जाते हैं। लगोरी, गुल्ली-डंडा, आट्यापाट्या, कुश्ती, कबड्डी तथा फुगड़ी जैसे पारंपरिक खेल वर्तमान समय में भी लोकप्रिय हैं। मल्लखंभ जैसे खेल के

कारण शरीर फुर्तीला और गठीला बनता है और मन की एकाग्रता बढ़ने में सहायता प्राप्त होती है। शतरंज का खेल बुद्धि की चतुराई बढ़ाता है। भारत में यह खेल प्राचीन समय से खेला जाता है।

हमारे जीवन में खेलों को असाधारण महत्त्व प्राप्त है। खेल के कारण एकजुटता और नेतृत्व जैसे गुणों का विकास होता है। खेल में हार-जीत की अपेक्षा लगन और उत्साह की भावना महत्त्वपूर्ण होती है। खेलों के विशिष्ट नियम होते हैं और खिलाड़ियों को उन नियमों का पालन करना ही होता है।

क्या तुम जानते हो?

भारतीय खेल कबड्डी को अब विश्व की मान्यता प्राप्त हुई है। ढाका में आयोजित विश्व स्तर की कबड्डी प्रतियोगिता में भारतीय महिला टीम ने विजेता पद प्राप्त किया।

विश्व विजेता भारतीय कबड्डी महिला टीम २०२५

क्या तुम जानते हो?

- खाशाबा जाधव सातारा के निवासी थे। वे भारतीय फ्री स्टाईल कुश्ती के पहलवान थे। उन्होंने वर्ष १९५२ में हुए हेलसिंकी ऑलिंपिक में कांस्य पदक जीता था। स्वतंत्र भारत को ऑलिंपिक पदक प्राप्त कराने वाले वे प्रथम भारतीय थे।

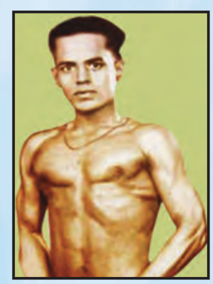

खाशाबा जाधव

कोनेरू हम्पी

- कोनेरू हंपी आंध्र प्रदेश की निवासी हैं। भारत में सबसे कम आयु में वे ग्रैंडमास्टर बनने वाली महिला हैं। उन्होंने शतरंज खेल में प्रवीणता प्राप्त की है।

- १९ वर्षीय दिव्या देशमुख नागपुर की निवासी हैं। वह शतरंज खेलती हैं। उन्होंने वर्ष २०२५ में महिला शतरंज विश्वकप जीता है। दिव्या देशमुख ने एशिया विजेतापद प्रतियोगिता, विश्व ज्यूनियर विजेतापद प्रतियोगिता, युवा शतरंज विजेतापद प्रतियोगिता में स्वर्णपदक जीते हैं।

दिव्या देशमुख

लोककला

लोककला हमारी सांस्कृतिक विरासत है। इन कलाओं द्‌वारा हमें आनंद प्राप्त होता है। बड़ी सहजता से लोक शिक्षा से हम अवगत हो जाते हैं और हमारी संस्कृति की रक्षा हो जाती है।

राष्ट्रसंत गाडगे बाबा अपने कीर्तनों के माध्यम से लोगों के मन पर शिक्षा और स्वच्छता का महत्त्व अंकित करते थे। लोकशाहीर अण्णाभाऊ साठे, शाहीर अमर शेख और द. ना. गवाणकर ने अपनी शाहीरी (जागरण गीत) द्‌वारा लोक जागृति का कार्य किया।

संतों ने लोगों को समता का संदेश दिया। उन्होंने लोगों को दया, अहिंसा, परोपकार, सेवा, समता और बंधुभाव आदि सद्‌गुणों की सीख दी। श्रीचक्रधर स्वामी, संत नामदेव, संत ज्ञानेश्वर, संत चोखामेला, संत एकनाथ, संत तुकाराम, संत गोरोबा, संत नरहरी, संत मुक्ताबाई, संत जनाबाई, संत सोयराबाई, संत कान्होपात्रा, संत बहिणाबाई शिऊरकर ने अपने कीर्तनों, अभंगों और भारूडों द्‌वारा लोकजागरण का कार्य किया।

पंजाब का भांगड़ा, कर्नाटक का यक्षगान, गोवा का घोड़े मोड़णी नृत्य, नागालैंड और मेघालय का बांबू (बाँस) नृत्य, गुजरात का गरबा और दांडिया, राजस्थान का घूमर नृत्य, असम का बिहू नृत्य, महाराष्ट्र का लावणी नृत्य । ये सारी नृत्य कलाएँ संबंधित राज्यों की विशिष्ट पहचान हैं। विभिन्न राज्यों में चित्रकला, शिल्पकला और वास्तुकला आदि के विविध प्रकार पाए जाते हैं।

महाराष्ट्र की विविध लोककला

लावणी

पोवाडा

दशावतार

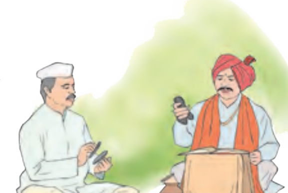
भजन, कीर्तन

भारूड

गोंधळ

तमाशा

कोळीनृत्य

पंजाब – भांगडा

कर्नाटक – यक्षगान

गोआ – घोड़े मोड़णी नृत्य

नागालैंड / मेघालय बांबू नृत्य

गुजरात – गरबा और दांडिया

राजस्थान – घूमर

असम – बिहू

महाराष्ट्र – लावणी

विविध राज्यों के नृत्य

हमारे देश में कला, भोजन, भाषा, वेशभूषा, पर्व–त्योहार परंपरा में विविधता पाई जाती है। ऐसी विविधता पाई जाने पर भी विविधता में एकता हमारे देश की विशेषता है।

स्वाध्याय

प्र.१ संकल्पना चित्र पूर्ण करो :

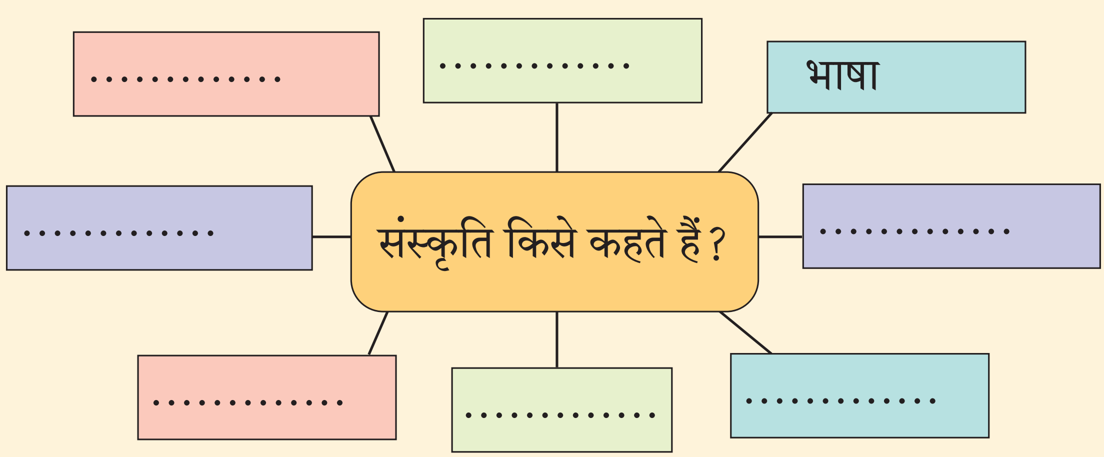

प्र.२ राज्य के आगे उस राज्य में मनाए जाने वाले त्योहार लिखो :

राज्य	त्योहार
(१) महाराष्ट्र	--
(२) आंध्र प्रदेश	--
(३) तमिलनाडु	--
(४) केरल	--

प्र.३ निम्नलिखित सारिणी पूर्ण करो :

राज्य	वेशभूषा	भोजन
पंजाब	--------------- ---------------	--------------- ---------------
--------------- ---------------	--------------- ---------------	पुरणपोळी
राजस्थान	--------------- ---------------	--------------- ---------------

प्र.४ महाराष्ट्र में कौन–कौन–से खेल खेले जाते हैं?

(१) --

(२) --

(३) --

(४) --

उपक्रम

- परिवार के बड़े–बुजुर्गों की सहायता से परिसर की विविध लोककलाएँ, वेशभूषा, भोजन और खेल आदि की जानकारी चित्रों की सहायता से प्राप्त करो।
- महाराष्ट्र की विविध लोककलाओं के संदर्भ में अंतरजाल की सहायता से वीडियो ढूँढ़ो।

***

८. संचार

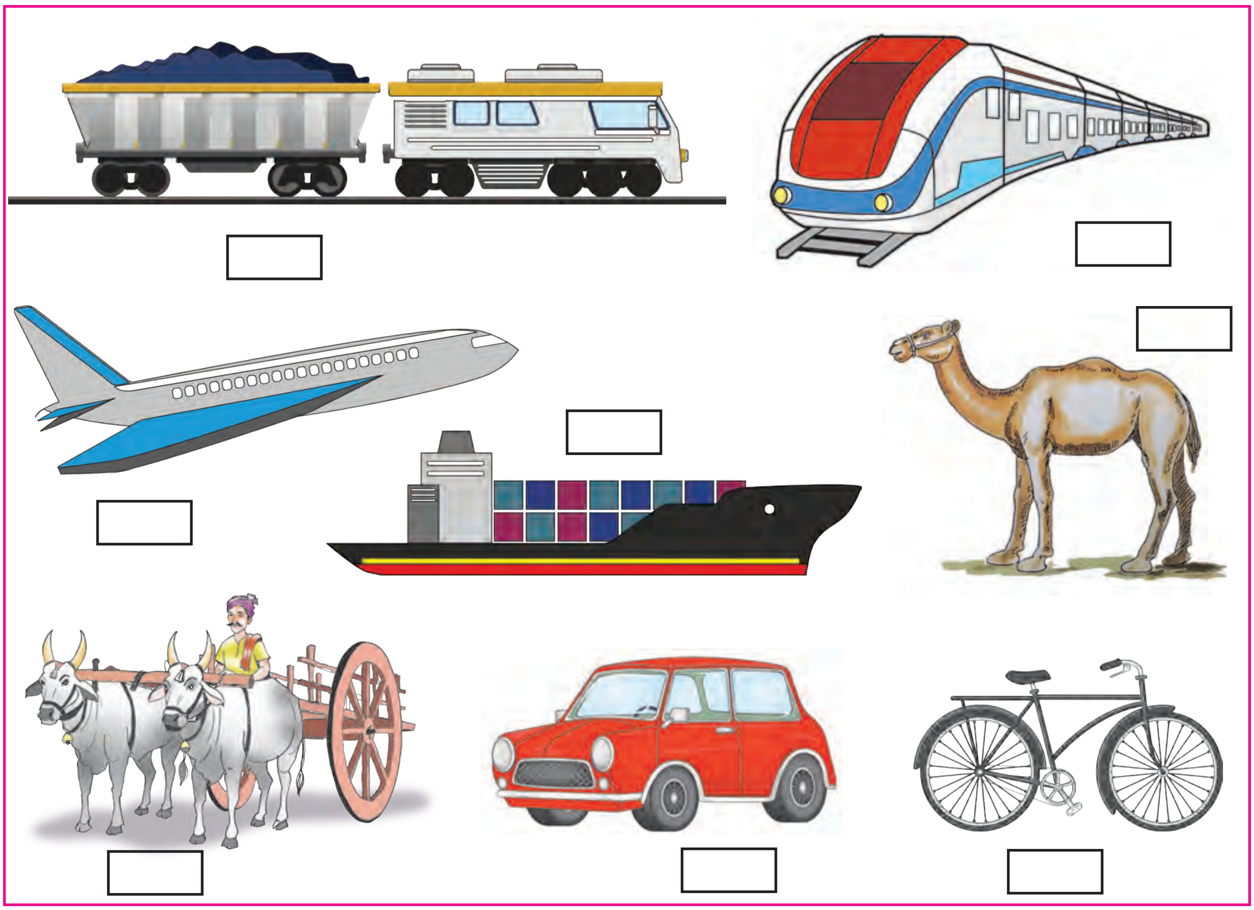

बच्चो, ऊपरी चित्र का ध्यान से निरीक्षण करो। तुम्हारे देखे हुए अथवा तुम्हारे द्‌वारा उपयोग में लाए गए परिवहन के साधन ढूँढ़ो और चित्र के समीपवाली चौखट में ✓ ऐसा चिह्न लगाओ :

- पृथ्वी के ऊपर बहुत दूर जाने के लिए उपयोग में आने वाले साधन पहचानो। उसके पासवाली चौखट में ◯ ऐसा चिह्न बनाओ।
- बचे हुए साधनों को तुमने कभी और कहीं क्या देखा है? वे किस समय उपयोग में लाए गए होंगे; ऐसा आपको लगता है? इस विषय में तुम अपने मित्रों, शिक्षकों के साथ चर्चा करो।

ऊपरी कृति द्‌वारा तुम्हारे ध्यान में यह आएगा कि अलग-अलग समय में हमने परिवहन के लिए विभिन्न साधनों का उपयोग किया है। वर्तमान समय में हम जिन साधनों का उपयोग कर रहे हैं; वे पूर्व के परिवहन साधनों की तुलना में अधिक वेगवान और सुरक्षित हैं।

परिवहन

परिवहन कैसे चलता है, इसे हम समझेंगे।

प्राचीन समय में मनुष्य वाहन के रूप में प्राणियों का उपयोग करता था। कालांतर में पहियों की गाड़ी बनाकर उसे खींचने के लिए उसमें किसी पालतू पशु को जोता जाने लगा। आज भी कुछ स्थानों पर पशुओं द्वारा खिंची जाने वाली गाड़ियों का उपयोग किया जाता है।

तकनीकी विज्ञान का विकास होने के बाद प्राणी/पशुओं का स्थान यंत्रों ने ले लिया। अब वाहनों की यात्रा आसान, सुखद और वेगवान होने लगी है।

क्या तुम जानते हो ?

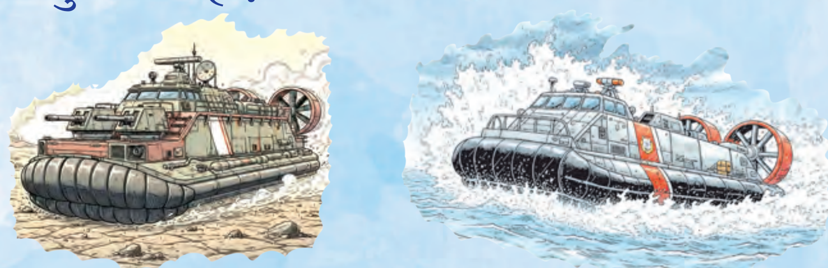

हॉवरक्राफ्ट – पानी और जमीन पर चलने वाला वाहन

करके देखो :

परिवहन और संचार के मार्ग

- थल मार्ग
  - सड़क मार्ग
  - रेल मार्ग
- जल मार्ग
  - अंतर्गत
  - समुद्री
- वायु मार्ग
  - देशांतर्गत वायु मार्ग
  - अंतर्राष्ट्रीय वायु मार्ग

नीचे दिए वाहनों के नाम उचित स्थानों में लिखो :

बस, कार, हेलीकॉप्टर, फेरी बोट, रिक्शा, विमान, नाव, साइकिल, मेट्रो, रेलगाड़ी, किश्ती, जहाज।

निम्नलिखित कृतियाँ पूर्ण करो :

सिग्नल पर लगे रंगीन दीयों के अर्थ लिखो :

(१) --

----

(२) --

----

(३) --

सड़क पर दिखाई देने वाले संकेत, चिह्न और उनके अर्थ की जोड़ियाँ मिलाओ :

गुट 'अ'	गुट 'ब'
	यहाँ वाहन खड़ा न करें।
	हॉर्न न बजाएँ।
	गतिअवरोधक
	कर्मचारी काम कर रहे हैं/ कार्य प्रगति पर है।
	आगे पाठशाला है।

माल ढुलाई

वस्तु, माल अथवा कच्चा माल एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाने की प्रक्रिया को माल ढुलाई कहते हैं। भारी सामान से लेकर काँच के नाजुक सामान तक मालढुलाई होती है। यह मालढुलाई आवश्यकतानुसार ट्रक, रेल, जहाज अथवा विमान जैसे वाहनों द्‌वारा की जाती है। मालढुलाई करने वाली रेलगाड़ी को 'मालगाड़ी' कहते हैं।

महानगरों में पानी और गैस की ढुलाई पाइप द्‌वारा की जाती है।

अभिभावकों की सहायता से समझेंगे :

- जिस वाहन में किसी भी ईंधन की आवश्यकता नहीं होती है, वह वाहन कौन–सा है?
- दुर्गम पर्वतीय क्षेत्रों में यात्रा के लिए किन प्राणियों का उपयोग किया जाता है?

आधुनिक समय के इलेक्ट्रीक (EV) वाहन

जहाँ सड़कों का निर्माण करवाना कठिन होता है, वहाँ 'रोप–वे (रज्जुमार्ग) का उपयोग किया जाता है। जैसे पर्वतीय और दुर्गम क्षेत्रों में अथवा खदानों में रोप–वे का उपयोग किया जाता है। जैसे– रायगढ़ रोप–वे।

लोग पहले यात्रा के लिए पालकी अथवा मियाना का उपयोग करते थे।

मेट्रो

सोचो :

तुम्हें चंद्रपुर में ताड़ोबा व्याघ्र प्रकल्प देखने जाना है। वहाँ तुम दो दिन रहने वाले हो। इस यात्रा की तैयारी तुम कैसे करोगे?

- यात्रा के लिए कब निकलोगे? ....
- यात्रा का साधन ....
- यात्रा के लिए लगने वाला समय ....
- यात्रा के लिए लगने वाली सामग्री ....
- यात्रा मार्ग पर आने वाले प्रमुख स्थान ....

क्या तुम जानते हो ?

- १६ अप्रैल, १८५३ ई. को भारत में पहली रेलगाड़ी मुंबई से ठाणे के बीच चली। वह कोयले पर चलने वाली रेलगाड़ी थी।
- भारत में पहली मेट्रो रेल कोलकाता में आरंभ हुई।
- बाढ़ की परिस्थिति उत्पन्न होने पर किसी भी प्रकार का परिवहन साधन संपर्क कर नहीं पाता है। ऐसी स्थिति में पैराशूट की सहायता से संपर्क किया जा सकता है और जीवनावश्यक वस्तुएँ पहुँचाई जा सकती हैं।

संचार माध्यम

जानकारी, सूचना तथा संदेश का आदान-प्रदान करने का अर्थ 'संचार माध्यम' है।

सोचो :

तुम्हारा मित्र दूसरे गाँव/शहर में रहता है और उसके जन्मदिन के अवसर पर उसे शुभकामनाएँ/बधाई देनी हों तो निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प तुम्हारे लिए संभव है?

- तुरंत उसके घर जाना।
- उसे डाक द्‌वारा पत्र अथवा भेंटकार्ड भेजना।
- दूरभाष द्‌वारा उसके साथ संपर्क करना।
- उसे मोबाईल द्‌वारा शुभकामनाओंवाला संदेश भेजना।
- ई-मेल करना।
- कबूतर के पैरों में चिट्‌ठी बाँधकर कबूतर को उसके पास भेजना।

क्या तुम जानते हो ?

पूर्व समय में कबूतर द्‌वारा संदेश भेजे जाते थे। इस कार्य के लिए कबूतरों को पाला जाता और उन्हें प्रशिक्षित किया जाता। पूर्व समय में राजाओं के संदेशवाहक/दूत घोड़ों पर अथवा ऊँट पर सवार होकर संदेशवहन का कार्य करते थे। यह कार्य परिश्रम और संकटों से भरा होता था। कालांतर में डाकसेवा का आरंभ हुआ।

डाक : डाक द्‌वारा हम पूरे देश में और विदेशों में भी पत्र और वस्तुएँ भेज सकते हैं। महत्त्वपूर्ण पत्र शीघ्रातिशीघ्र भेजने के लिए 'स्पीड पोस्ट' सुविधा का उपयोग किया जाता है। देश-विदेश में अपनी वस्तुएँ भेजने के लिए बस, रेल, जलपोत और विमान आदि वाहनों का भी उपयोग किया जाता है।

क्या तुम कभी डाकघर गए हो? वहाँ क्या देखा, यह बताओ।

टेलीफोन : टेलीफोन के आविष्कार के कारण विश्व में बहुत बड़ा परिवर्तन हुआ है। दूरस्थ व्यक्ति बड़ी सहजता से बातचीत करने लगे हैं। विश्व एक-दूसरे के बहुत समीप आ गया है। उसी का अत्याधुनिक रूप 'मोबाईल-फोन' है।

ड्रोन

संचार माध्यम और सूचना प्रसारण के अन्य साधन :

रेडियो, टीवी, पत्रिकाएँ और समाचारपत्र, ड्रोन आदि द्‌वारा सूचना का वहन किया जाता है। अलग-अलग प्रकार की जानकारी दी जाती है।

क्या तुम जानते हो?

- डाक के टिकट हमें बहुत-सारी जानकारी देते हैं। टिकटों पर महत्त्वपूर्ण घटनाओं और व्यक्तियों के चित्र छपे होते हैं। कुछ विशेष अवसरों पर डाक द्‌वारा विशेष टिकट और लिफाफे भी जारी किए जाते हैं।
- कुछ लोग देश-विदेश के टिकटों का संग्रह करते हैं।
- भारत में प्रथम डाक कार्यालय १७७४ ई. को कोलकाता में आरंभ हुआ।
- भारत में प्रथम नगरीय विमान परिवहन कंपनी टाटा एयरलाइंस की स्थापना मुंबई में वर्ष १९३२ में हुई।
- पूरे विश्व में संचार माध्यम के लिए उपग्रहों का उपयोग किया जाता है।

बिरसा मुंडा

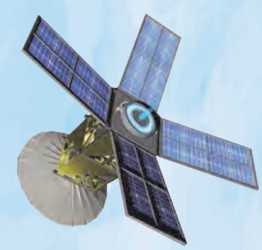
उपग्रह

खोजो तो :

- टेलीफोन का आविष्कार किसने किया?
- संगणक का आविष्कार किसने किया?

स्वाध्याय

प्र.१ नाम लिखो :

(अ) सड़क पर चलने वाले वाहन ....

(आ) जल मार्ग द्‌वारा चलने वाले वाहन ....

(इ) रेल मार्ग पर चलने वाले वाहन ....

(ई) वायु मार्ग से जाने वाले वाहन ....

प्र.२ संकल्पना चित्र पूर्ण करो :

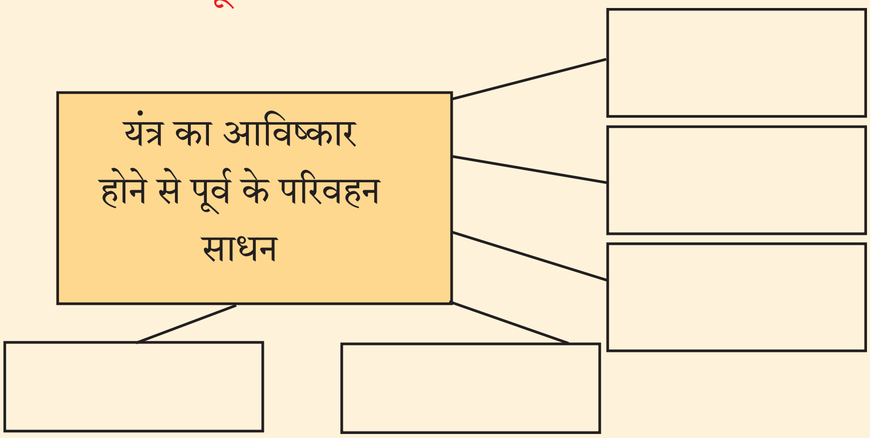

प्र.३ उचित विकल्प को गोल बनाओ :

(१) मालढुलाई करने वाली रेलगाड़ी (मेट्रो रेल, मालगाड़ी, लोकल ट्रेन)

(२) दुर्गम क्षेत्र और खदानों में उपयोग में आने वाला वाहन (मियाना, रिक्शा, रोप-वे)

(३) शीघ्रातिशीघ्र पत्र पहुँचाने की सुविधा (डाक, स्पीड पोस्ट, टेलीग्राम)

(४) पूर्व समय में संदेश भेजने के लिए उपयोग में आने वाला पक्षी (गरुड़, कबूतर, तोता)

प्र.४ पाठ्यपुस्तक के प्रारंभ में QR कोड में दिया हुआ महाराष्ट्र का पर्यटन मानचित्र सामने रखो। तुम्हें अपने निवास स्थान से अपनी पसंद के किसी पर्यटन स्थल को देखने जाना है :

(१) किस वाहन से जाओगे ?

(२) बीच रास्ते में कौन-से गाँव/स्थान लगेंगे ?

(३) वहाँ मुख्य रूप से क्या देखने को मिलेगा ?

प्र.५ मोबाईल फोन के विषय में कक्षा में चर्चा करो। उसके लाभ और हानियों के बारे में जानकारी लिखो :

लाभ	हानियाँ
--	--
--	--
--	--

उपक्रम

- प्राचीन समय में परिवहन के लिए उपयोग में लाए जाने वाले साधनों के चित्र प्राप्त कर चिपक कॉपी में चिपकाओ और नाम लिखो।
- सार्वजनिक परिवहन व्यवस्था में दिव्यांग व्यक्ति के लिए कौन-सी सुविधाएँ उपलब्ध होती हैं ? अभिभावकों की सहायता से जानकारी प्राप्त करके लिखो।

***

९. ऐतिहासिक वास्तुएँ

'जीवन शिक्षण विद्‌या मंदिर' पाठशाला में दूसरा सत्र आरंभ हुआ। बहन जी कक्षा में आईं। उन्होंने विद्‌यार्थियों से पूछा, "बताओ, छुट्‌टियों में तुमने क्या-क्या किया? बाहर गाँव कौन-कौन गए थे?" कुछ विद्‌यार्थियों ने हाथ ऊपर किए। बहन जी ने पूछा, "तुम जहाँ गए थे; वहाँ की गुफाएँ, किले, बाड़े, महान व्यक्तियों के जन्मस्थान, वस्तुसंग्रहालय, स्तंभ आदि ऐतिहासिक वास्तुओं के फोटो मुझे मोबाईल पर भेजो। हम अगले सप्ताह इन फोटोओं की प्रदर्शनी लगाएँगे।''

सोचो :

छुट्‌टियों में तुम कौन-कौन-से नये उपक्रम कर सकते हो?

बहन जी कक्षा में आईं और उन्होंने सभी विद्‌यार्थियों से आँखें बंद करने के लिए कहा। कोई भी विद्‌यार्थी अपनी आँखें नहीं खोलेगा और ना ही मिचमिचाएगा। ये सूचनाएँ देकर बहन जी ने कक्षा के श्यामपट्ट पर कागज चिपकाए। बच्चों को कागज चिपकाने की आवाज सुनाई दी। सूचना मिलते ही बच्चों ने अपनी आँखें खोलीं। विस्मय से उनकी आँखें खुली रह गईं। विद्‌यार्थी एक स्वर में बोल पड़े, "वाह! वाह !!"

सामने लगभग दो-तीन बड़े कागजों पर बच्चों ने छुट्‌टियों में देखी हुई वास्तुओं, वस्तुओं के फोटो थे। स्वयं के खींचे हुए फोटो देखकर विद्‌यार्थी हर्षित हुए। बहन जी ने कहा, "अब प्रत्येक विद्‌यार्थी उसने खींचे हुए फोटो की जानकारी देगा। सबसे पहले कौन विद्‌यार्थी जानकारी देगा?"

करके देखो :

तुम जिन ऐतिहासिक स्थानों की सैर पर गए हो; उन स्थानों की सैर के फोटोओं की सारिणी बनाओ। कक्षा में उन सारिणियों की प्रदर्शनी लगाओ।

उमा ने हाथ ऊपर उठाया और कहा "बहन जी, मैं अपने माता जी- पिता जी के साथ **शिवनेरी** किले पर गई थी। जिस किले पर श्री शिवराय का जन्म हुआ, वहाँ मेरे माता-पिता जी ने कहानी बताई। मैंने शिवनेरी किले पर गुफा, प्याऊ, शिवाई देवी का मंदिर, परकोटा, खाई और बुर्ज देखें। मैं इस सैर को कदापि भूल नहीं पाऊँगी।

छत्रपति शिवाजी महाराज का जन्मस्थान – शिवनेरी किला

नंदीवर्धन (नगरधन) जमीनी किला

रामटेक में श्रीराम मंदिर

उसी समय नंदू खड़ा हो गया। वह बोला, "मैं विदर्भ में **रामटेक** स्थान पर गया था। रामटेक नागपुर जिले में एक शहर है। रामटेक में प्रभु रामचंद्र का मंदिर है। यहाँ रामनवमी के अवसर पर बहुत बड़ा मेला लगता है। यहीं पर महाकवि कालिदास ने 'मेघदूत' महाकाव्य की रचना की।" रामटेक के समीप नंदीवर्धन (नगरधन) जमीनी किला है। सभी विद्यार्थी उत्सुकता से देख रहे थे।

अब बहन जी ने एक फोटो दिखाया और पूछा, "क्या इस बाड़े में कोई गया है?" गार्गी ने हाथ ऊपर उठाया। गार्गी बताने लगी, "हम छुट्टियों में पुणे गए थे। पुणे में महात्मा फुले और सावित्रीबाई फुले का निवास स्थान देखा। उनके निवास स्थान के अहाते में एक छोटा कुआँ है। उस समय महात्मा फुले ने इसी कुएँ से सभी धर्मों-जातियों के लोगों को पानी भरने की अनुमति दी थी। महाराष्ट्र सरकार ने **फुले बाड़ा** को 'विरासत धरोहर' के रूप में घोषित किया है।"

महात्मा फुले बाड़ा-कुआँ

माँ ने मुझसे कहा, "फुले पति-पत्नी के कारण हम पढ़ सके हैं। माँ ने मुझे वह कहानी बताई। इसके बाद हमने उनके ही नाम का **सावित्रीबाई फुले पुणे विद्यापीठ** देखा। इस विद्यापीठ अर्थात विश्वविद्यालय का परिसर देखते हुए हम थक ही गए। इस परिसर में संग्रहालय, बगीचे, प्रतिमाएँ, प्रयोगशालाएँ, पुस्तकालय, सुरंग मार्ग जैसे दर्शनीय स्थान देखे।"

"वहाँ से हम सेनापति बापट मार्ग पर **भारतरत्न डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर संग्रहालय** देखने गए। डॉ. बाबासाहब आंबेडकर ने कितना सारा अध्ययन किया और इस कारण वे कैसे महान बने, यह मुझे

माँ ने बताया। इस संग्रहालय में उन्हें प्राप्त 'भारतरत्न' सम्मान पदक रखा गया है। मेरे लिए यह नई जानकारी थी। वहीं से समीप हम **बालभारती** वास्तु में पहुँचे जहाँ हमारी पाठ्‌यपुस्तकें बनाई जाती हैं।"

भारतरत्न पदक

जाफर बोला, "मैं बुलढाणा गया था। वहाँ मैंने उल्कापात होने से निर्मित **लोणार सरोवर** (झील) देखा। मेरे पिता जी ने कहा, ''इस सरोवर का पानी क्षारयुक्त होने से पीते नहीं है। यह सुनकर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। लौटते समय राजमाता जिजाऊ का जन्मस्थान **सिंदखेड़ राजा** नाम का गाँव देखा।"

लोणार सरोवर

फातिमा ने कहा," मैं मुंबई गई थी। जीवन में पहली बार समुद्र देखा। समुद्र के किनारे **गेट वे ऑफ इंडिया** वास्तु भी देखी।""

अमृता ने कहा, "मैं कोकण गई थी। वहाँ मैंने **सिंधुदुर्ग** नामक जलदुर्ग देखा। इस किले को देखने के लिए हमें बोट से समुद्र की यात्रा करनी पड़ी। बोट डोल रही थी। मैंने पहली बार पानी में बनाया हुआ किला देखा। इस किले में मीठे पानी का कुआँ है।

सिंधुदुर्ग

आगे चलकर हम 'रोप-वे' की सहायता से रायगढ़ पहुँचे। रोप-वे देखा और उसमें बैठ गए। **रायगढ़** बड़ा भव्य गढ़ है। इसी गढ़ पर छत्रपति शिवाजी महाराज का राज्याभिषेक हुआ था। यह गढ़ स्वराज्य की राजधानी बना। मुझे यह गढ़ बहुत पसंद आया। इसी गढ़ पर छत्रपति शिवाजी महाराज की समाधि है।"

रायगढ़ किला

बताओ तो!

- उस ऐतिहासिक स्थान की संक्षेप में जानकारी दो; जहाँ तुम सैर के लिए गए थे।
- ऐतिहासिक स्थान की सैर करने पर वहाँ कौन-सी सावधानी रखनी चाहिए?
- 'विश्व विरासत धरोहर' की सूची में समाविष्ट हुए महाराष्ट्र के गढ़ / किलों की जानकारी अपने अभिभावकों की सहायता से प्राप्त करो और कक्षा में बताओ।

बहन जी ने कहा, "देखो तो! हमें कितनी सारी बातें मालूम हुईं! प्राचीन वास्तुएँ देखना, उनके बारे में जानकारी प्राप्त करना। उन स्थानों अर्थात विरासत धरोहर की सैर करना। आज हमने केवल फोटो के माध्यम से विरासत धरोहर की सैर की। ऐसे ऐतिहासिक स्थानों की कई विरासत सैर का आयोजन किया जाता है। सैर करने से पुरानी वस्तुओं और वास्तुओं की बहुत जानकारी प्राप्त होती है। हमें वहाँ उद्‌देश्यपूर्वक जाना चाहिए।

हमें इन स्थानों का ध्यान रखना चाहिए अथवा नहीं? इन ऐतिहासिक वास्तुओं पर हमें अपने नाम नहीं लिखने चाहिए। वहाँ कूड़ा-कचरा फेंकना नहीं चाहिए। प्लास्टीक की बोतलें फेंकनी नहीं चाहिए। हमें अपनी इस विरासत का बड़ी सावधानी से संरक्षण करना चाहिए।"

स्वाध्याय

प्र.१ संकल्पना चित्र पूर्ण करो :

(१) शिवनेरी
- गुफा
-
-
-
-

(२) सिंधुदुर्ग
- जलदुर्ग
-
-

(३) रायगढ़
- छत्रपति शिवाजी महाराज का राज्याभिषेक
-
-
-

प्र.२ उचित जोड़ियाँ मिलाओ :

'अ' गुट	'ब' गुट
(१) रामटेक मंदिर	(अ) सिंदखेड़ राजा
(२) राजमाता जिजाऊ का जन्मस्थान	(आ) सेनापति बापट मार्ग, पुणे
(३) डॉ. बाबासाहब आंबेडकर संग्रहालय	(इ) नागपुर

प्र.३ उचित उत्तर लिखो :

(१) सावित्रीबाई फुले के नाम से विद्‌यापीठ – ____________

(२) पाठ्‌यपुस्तक निर्मिति केंद्र – ____________

प्र.४ निम्नलिखित वाक्य सुधारकर लिखो :

(१) सिंधुदुर्ग गिरिदुर्ग है।

(२) शिवनेरी किले पर रोप–वे द्‌वारा जाना पड़ता है।

प्र.५ कौन-सी सावधानी रखेंगे ?

ऐतिहासिक वास्तुएँ

- कूड़ा-कचरा फेंकना नहीं चाहिए।
-
-
-

उपक्रम

- तुम अपने परिसर की ऐतिहासिक वास्तुओं की सैर पर जाओ और उनके बारे में जानकारी लिखो।
- किलों के चित्रों का संग्रह करो और उन्हें अपनी चिपक कॉपी में चिपकाओ।
- महात्मा फुले के संदर्भ में 'किशोर' पत्रिका में उद्धृत कहानी के लिए पाठ्यपुस्तक के आरंभ में दिए गए QR कोड की लिंक देखो।

***

१०. कहानी : वीरता और क्रांति की

छत्रपति शिवाजी महाराज	महात्मा जोतिराव फुले	सावित्रीबाई फुले
महाराजा सयाजीराव गायकवाड	राजर्षि शाहू महाराज	पंडिता रमाबाई
महर्षि धोंडो केशव कर्वे	डॉ. बाबासाहब आंबेडकर	डॉ. पंजाबराव देशमुख

करके देखो :

चित्रों में दर्शाए महान व्यक्तियों की जानकारी अंतरजाल की सहायता से एकत्रित करो। इसके लिए आगे कर्मवीर भाऊराव पाटील का उदाहरण दिया गया है।

कर्मवीर भाऊराव पाटील

भारत में 'रयत शिक्षण संस्था' एक पुरानी और व्यापक स्तर पर शिक्षा का कार्य करने वाली शिक्षण संस्था है। इस संस्था के संस्थापक कर्मवीर भाऊराव पाटील ने सभी जाति-धर्मों के विद्‌यार्थियों को शिक्षा प्राप्त हो; इसके लिए प्रयास किए। उन्होंने विद्‌यार्थियों के लिए छात्रावास आरंभ करके 'कमाओ और पढ़ो' योजना आरंभ की।

बहन जी कक्षा में आईं। सभी विद्‌यार्थी खड़े हो गए। बहन जी ने कहा, "आज मैं तुम विद्‌यार्थियों को महान व्यक्तियों के बारे में बताने वाली हूँ। "

बहन जी बताने लगीं।

शिरीषकुमार

अंग्रेज सरकार भारतीयों के साथ अन्याय करते थे। अंग्रेजों के शासनकाल में भारतीयों का शोषण किया जाता था। अतः भारतीय जनता ने अंग्रेजों के विरुद्‌ध क्रांति कर दी थी। 'जीतेंगे अथवा मरेंगे' घोषणा सभी ओर गूँज रही थी। १९४२ ई. में गांधीजी ने अंग्रेजों को 'भारत छोड़ो' की चेतावनी दी थी।

शिरीषकुमार

हमारे देश में अंग्रेजों के विरुद्‌ध आक्रोश व्याप्त हो चुका था। पूरे देश में आंदोलन चरम सीमा पर था। शालेय विद्‌यार्थी भी इस आंदोलन में पीछे नहीं थे। खान्देश के नंदुरबार में १६ वर्षीय शिरीषकुमार ने अंग्रेजों के विरोध में जुलूस का आयोजन करना निश्चित किया। वह और उसके सहयोगी शशिधर, लालदास, घनश्याम और धनसुखलाल ने अंग्रेजों के विरोध में जुलूस निकाला। नंदुरबार के 'झेंडा चौक' पर यह जुलूस बड़ी शांति के साथ आगे बढ़ रहा था। इस जुलूस के आगे ये शालेय विद्‌यार्थी चल रहे थे। पुलिस ने शिरीषकुमार और उसके मित्रों को जुलूस विसर्जित करने का आदेश दिया। शिरीषकुमार और उसके मित्रों ने इस आदेश को नहीं माना। यह दिन ९ सितंबर १९४२ ई. का था। पुलिस ने इस जुलूस पर गोलियाँ चलाईं। इस गोलीबारी में इन चारों विद्‌यार्थियों ने अपने देश के लिए बलिदान दिया।

खोजो तो :

वस्ताद लहुजी सालवे, राजगुरु और क्रांतिसिंह नाना पाटील के कार्यों की जानकारी देने वाली पुस्तकें खोजो और पढ़ो।

शांति घोष, सुनीति चौधरी

शांति घोष

सुनीति चौधरी

यह कहानी बंगाल की दो शालेय छात्राओं की है। उनके नाम शांति घोष और सुनीति चौधरी हैं। ये दोनों कक्षा सहपाठिनियाँ थीं। शांति के पिता देवेंद्रनाथ प्राध्यापक थे। उन्होंने अपनी बेटी पर देशभक्ति के संस्कार किए थे। शालेय आयुवाली शांति यही जानती थी कि अंग्रेज हमारे शत्रु हैं। उन्हें पराजित कर हमें स्वतंत्रता प्राप्त करनी चाहिए। वर्ष १९३१ में इन दोनों ने सुभाषचंद्र बोस का भाषण सुना। वे दोनों इस भाषण से बहुत प्रभावित हुईं। शांति घोष ने अपनी कॉपी में नेताजी सुभाषचंद्र बोस के हस्ताक्षर लिए।

आगे चलकर वह 'युगांतर' नाम के क्रांतिकारी संगठन में कार्य करने लगीं। इसी समय बंगाल के कोमिल्ला क्षेत्र में अंग्रेज अधिकारी स्टीवन्स भारतीयों पर अत्याचार कर रहा था। जुलूस निकालने वाले लोगों पर लाठियाँ चलवाता था। वह लोगों के साथ सिर फटने तक मार-पीट करता था। हम इस अन्याय को नहीं सहेंगे। अतः दोनों ने निश्चय किया कि इस दुष्ट अंग्रेज अधिकारी को सबक सिखाकर रहेंगे।

स्टीवन्स को अपने प्राणों का बड़ा भय लगता था। अतः उसने अपने घर में ही अपना कार्यालय बना रखा था। घर के चारों ओर पुलिस का पहरा लगा रखा था। उनसे नागरिक भी मिल नहीं सकते थे। इन दोनों ने उससे मिलने का निश्चय किया। दोनों को पिस्तौल चलाने का प्रशिक्षण दिया गया था। दोनों निर्भीक होकर स्टीवन्स से मिलने उसके घर गए। वह स्वयं इन दोनों से मिलने घर से बाहर आया। बातचीत होने के पश्चात सुनीति ने छुपाकर ले आई पिस्तौल निकाला और उसपर गोलियाँ चलाईं। वह घटना स्थल पर ही नीचे गिर गया। दोनों को बंदी बनाया गया। उन्हें आजीवन कारावास का दंड दिया गया। कालांतर में वर्ष १९३९ ई. में उन दोनों को रिहा किया गया।

समझेंगे :

सन १८१८ ई. में अंग्रेजों ने संपूर्ण भारत को अपने अधिकार में कर लिया था। उस समय महाराष्ट्र में आदि क्रांतिकारी उमाजी नाईक ने अंग्रेजों के विरुद्‌ध सशस्त्र संघर्ष प्रारंभ किया। उमाजी नाईक ने अंग्रेजों के विरुद्‌ध लड़ने और अंग्रेजी सत्ता को पलट देने का लोगों से आवाहन किया । उनका यह कार्य पुणे, सातारा, अहिल्यानगर आदि क्षेत्रों में फैल गया।

आगे चलकर उनका यह कार्य क्रांतिकारी वासुदेव बळवंत फडके, चापेकर बंधु ने आगे बढ़ाया। चापेकर भाइयों से प्रेरणा लेकर स्वातंत्र्यवीर विनायक दामोदर सावरकर ने स्वतंत्रता युद्‌ध की ज्वाला को धधकाए रखा।

क्या तुम जानते हो ?

पुणे जिले की आंबेगाँव तहसील के महालुंगे गाँव में बाबू गेनू सैद नाम का युवक था। वह मुंबई की कपड़ा मिल में काम करते थे। १९३० ई. में मुंबई में विदेशी वस्तुओं पर बहिष्कार आंदोलन चल रहा था। इस आंदोलन में बाबू गेनू सबसे आगे थे। एक बार एक मालवाही ट्रक में विदेशी वस्त्र चोरी-छुपे ले जाया जा रहा था। उस समय अपने हाथ में तिरंगा झंडा लेकर बाबू गेनू ने विदेशी वस्त्रों से लदे ट्रक के सामने स्वयं को झोंक दिया। ट्रक का ड्राइवर बाबू गेनू के शरीर को कुचलता हुआ ट्रक को आगे ले गया। देश के लिए बाबू गेनू ने अपने प्राणों का बलिदान दिया।

बाबू गेनू सैद

समझेंगे :

संविधान सभा के अध्यक्ष डॉ. राजेंद्र प्रसाद को भारतीय संविधान का मसौदा सौंपते हुए डॉ. बाबासाहब आंबेडकर

९ दिसंबर १९४६ को डॉ. राजेंद्र प्रसाद की अध्यक्षता में संविधान समिति की स्थापना हुई। भारत को १५ अगस्त १९४७ को स्वतंत्रता प्राप्त हुई। उसके बाद २१ अगस्त १९४७ को मसौदा समिति का गठन किया गया। इस मसौदा समिति के अध्यक्ष डॉ. बाबासाहब आंबेडकर थे। उनके मार्गदर्शन में संविधान का अंतिम मसौदा २६ नवंबर १९४९ को संविधान समिति को सौंपा गया और २६ जनवरी १९५० से संविधान का कार्यान्वयन प्रारंभ हुआ। अतः २६ नवंबर को 'संविधान दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

स्वाध्याय

प्र.१ नीचे दिए व्यक्तियों से संबंधित स्थानों के नाम कोष्ठक में दिए गए हैं। उन नामों के आगे लिखो:

(नंदुरबार, कोमिल्ला, पुणे, महालुंगे)

(१) बाबू गेनू सैद --------------------------

(२) शिरीषकुमार --------------------------

(३) स्टीवन्स --------------------------

(४) आदि क्रांतिकारी उमाजी नाईक --------------------------

प्र.२ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में लिखो :

(१) शिरीषकुमार द्‌वारा अंग्रेजों के विरोध में निकाले गए जुलूस में कौन-कौन सहभागी हुए थे ?

(२) शांति घोष और सुनीति चौधरी किस क्रांतिकारी संगठन में काम करती थीं ?

(३) रयत शिक्षण संस्था की स्थापना किसने की ?

प्र.३ लिखो तो!

(१) गांधीजी द्‌वारा अंग्रेजों के विरुद्‌ध दिया गया नारा -

(२) शांति घोष पर देशभक्ति के संस्कार करने वाले -

(३) चापेकर बंधु से प्रेरणा लेकर स्वतंत्रता युद्‌ध का आरंभ करने वाले -

(४) कर्मवीर भाऊराव पाटील द्‌वारा आरंभ की गई योजना -

प्र.४ नाम लिखो :

(१) डॉ. राजेंद्र प्रसाद की अध्यक्षता में स्थापित की गई समिति ....

(२) मसौदा समिति के अध्यक्ष ....

प्र.५ तीन-चार वाक्यों में जानकारी लिखो :

(१) शिरीषकुमार

(२) बाबू गेनू सैद

उपक्रम

- तुम्हारी पाठशाला में कौन-कौन-से महान व्यक्तियों के फोटो लगे हैं, उनकी सूची बनाओ।
- भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में हिस्सा लेने वाली महिलाओं की जानकारी प्राप्त करो और सूची बनाओ।
- तुम अपने परिसर के किसी महान व्यक्ति के जीवन का कोई प्रेरणादायी प्रसंग चुनकर उसे लिखो। संभव हो तो उस व्यक्ति का चित्र चिपकाओ।

***

११. पर्यावरण की रक्षा : मेरी जिम्मेदारी

महात्मा गांधी जयंती मनाने के लिए सभी विद्‍यार्थी २ अक्तूबर को मैदान पर उपस्थित हुए थे। प्रधानाचार्या की सूचना के अनुसार पाठशाला में स्वच्छता अभियान प्रारंभ हुआ। विनय साफ-सुथरे और व्यवस्थित कपड़े पहनकर प्रथम पंक्ति में खड़ा था। यों तो विनय काम करने से ऊब जाता था। वह पेट पकड़कर पेट दर्द का नाटक करता हुआ अलग जाकर बैठ गया। प्रधानाचार्या ने विनय का स्वच्छता अभियान में सहभागी न बनने का कारण पहचान लिया। उन्होंने विनय को अपने ऑफिस में बुला लिया और अपने पास बिठाया। उसे कुछ चित्रकार्ड दिखाए और प्रश्न पूछे। विनय चित्रों का निरीक्षण करने लगा।

करके देखो :

चित्रों का उचित क्रम लगाओ :

नि:शुल्क वितरण के लिए

बताओ तो!

सभी लोग खुशी–खुशी फुटपाथ के ऊपर क्यों चलने लगे?

विनय ने प्रधानाचार्या से प्रश्न किया, "स्वच्छता किसे कहते हैं और वह क्यों करनी चाहिए?"

प्रधानाचार्या कहने लगीं, " स्वच्छता का अर्थ है – स्वास्थ्य बनाए रखने और रोग न बढ़ें; इसके लिए रखी जाने वाली सावधानी। इसके लिए स्वयं की, सार्वजनिक स्थानों और पर्यावरण की स्वच्छता बनाए रखना बहुत महत्त्वपूर्ण होता है। स्वयं की स्वच्छता के साथ–साथ घर और परिसर की स्वच्छता बनाए रखने में कूड़ा–कचरा उचित स्थानों पर डालना, धोवनजल का सही ढंग से निपटान करना जैसी बातों का समावेश होता है। परिणामतः सभी ओर स्वच्छता दिखाई देती है। स्वच्छता के कारण वातावरण आनंददायी और प्रसन्नतापूर्ण रहता है।"

सोचो और बताओ :

- शरीर की स्वच्छता नियमित रूप से नहीं रखी तो क्या होगा?
- हमारे आस– पास कूड़ा–कचरा और दुर्गंध रही तो क्या होगा?
- हमारा घर, पाठशाला, परिसर और शहर की स्वच्छता कौन बनाकर रखता है?

विनय के मस्तिष्क में अनेक प्रश्न उत्पन्न हुए थे। उसने कहना आरंभ किया "हम २ अक्तूबर को महात्मा गांधी जयंती के अवसर पर प्रतिवर्ष स्वच्छता अभियान चलाते हैं। तो फिर क्या इसके पहले स्वच्छता का महत्व नहीं था? क्या स्वच्छता के लिए किसी ने कोई कार्य नहीं किया है?" प्रधानाचार्या विनय को स्वच्छता के विषय में बताने लगीं।

क्या तुम जानते हो?

हमारे भारत देश में स्वच्छता की पुरानी परंपरा रही है। पूर्व समय के लोग भी स्वच्छता का महत्त्व जानते थे। हजारों वर्ष पूर्व मोहेंजोदडो और हड़प्पा जैसे सुंदर नगर थे। इन प्राचीन समय के नगरों में सड़कें,धोवनजल के निपटारे का प्रबंधन और सार्वजनिक स्नानगृह थे। लोग अपने मकान, सड़कें और जलाशयों को स्वच्छ रखते थे।

क्या तुम जानते हो ?

राष्ट्रसंत गाडगे बाबा

राष्ट्रसंत गाडगे बाबा का जन्म अमरावती जिले के शेणगाँव में हुआ। उनका नाम डेबूजी झिंगराजी जानोरकर था। वे निरंतर एक झाड़ू अपने साथ रखते थे। शरीर पर फटी-पुरानी गुदड़ी और हाथ में एक मटका (गाडगे) होता था। यही उनकी वेशभूषा थी। इसीलिए लोग उन्हें 'गाड़गे बाबा' कहते थे। वे जिस गाँव में पहुँचते; उस गाँव को झाड़ू से बुहारकर स्वच्छ करते । महाराष्ट्र में 'संत गाडगे बाबा ग्राम स्वच्छता अभियान' चलाया जाता है। इस अभियान के अंतर्गत शुद्ध और सुरक्षित पेयजल, अपने मकान, स्वयं और परिसर की स्वच्छता, साथ ही; धोवनजल का नियोजन, कूड़ा-कचरे का निपटारा जैसी बातें करना अपेक्षित है।

"स्वच्छता का आरंभ स्वयं की स्वच्छता से होता है। साथ ही; परिसर और सार्वजनिक स्थानों की स्वच्छता बनाए रखना भी उतना ही महत्वपूर्ण होता है। अपनी और परिसर की स्वच्छता को बनाए रखने की जिम्मेदारी प्रत्येक मनुष्य की है।"

बाहर सभी विद्‌यार्थी परिसर की स्वच्छता कर रहे थे। कुछ विद्‌यार्थी उग आई घास-फूस निकाल रहे थे तो कुछ विद्‌यार्थी पेड़ों से गिरे सूखे पत्ते और खर-पतवार एकत्रित कर रहे थे । यह देखकर विनय ने कहा, "हमारे मैदान पर बहुत पेड़ हैं। बड़े पेड़ों के सूखे पत्ते गिरकर कूड़ा-कचरा हो जाता है। हम उन पत्तों से खाद तैयार करते हैं।"

प्रधानाचार्या ने कहा, "प्रतिवर्ष हम जून महीने में वृक्षारोपण करते हैं।" विनय ने पूछा, "बहन जी, वृक्षारोपण किसे कहते हैं?" बहन जी ने कहा, "वृक्षारोपण मतलब नये पेड़ लगाना। इस वर्ष तुमने कहाँ और कितने पेड़ लगाए?" विनय ने कहा, "मैंने हमारे घर की पीछेवाली बाग में दो पेड़ लगाए।"

बताओ तो!

- पूरे वर्ष सदाबहार रहने वाले पेड़ कौन-से हैं?
- यदि पेड़ न होते तो क्या होता?

करके देखो :

- छुईमुई के पौधे के पत्तों को धीरे से छूकर देखो।
- एक गमले में पौधा लगाकर उसका निरीक्षण करो।

प्रधानाचार्या कहने लगीं, ''पेड़ों के भी प्राण होते हैं । उन्हें जीवित रहने के लिए पानी, हवा और सूर्यप्रकाश की आवश्यकता होती है। भारतीय वैज्ञानिक डॉ. जगदीशप्रसाद बोस ने विश्व में पहली बार सिद्‌ध कर दिखाया कि पेड़ों के भी प्राण होते हैं। उन्हें भी हमारी तरह संवेदनाएँ होती हैं। अर्थात उन्हें भी हर्ष होता है, दुख होता है। धूप और ठंड अनुभव होती है और उन्हें स्पर्श किए जाने की भी अनुभूति होती है।"

हमें नये पेड़ लगाने चाहिए। उन्हें बढ़ाने चाहिए। पेड़ों की होने वाली कटाई की रोक-थाम करनी चाहिए क्योंकि पेड़ हमें बहुत कुछ देते हैं।

सोचो और लिखो :

पेड़ हमें क्या देते हैं?

हम पेड़ों को क्या देते हैं।

क्या तुम जानते हो?

- **चिपको आंदोलन १९७३ :** जंगल बचाने के लिए किया गया संघर्ष। हिमालय की तलहटी में बड़े स्तर पर वृक्ष काटे जाने वाले थे। इसके विरोध में चंडीप्रसाद भट्ट और सुंदरलाल बहुगुणा ने आंदोलन किया। वृक्ष काटे नहीं जाने चाहिए इसलिए महिलाएँ वृक्षों से लिपट गईं और वृक्षों को बचाया।
- प्रतिवर्ष ५ जून को 'विश्व पर्यावरण दिवस' के रूप में मनाते हैं।

समझेंगे :

'देवराई' का अर्थ है ईश्वर के नाम पर आरक्षित रखा गया पवित्र वन अथवा जंगल। ये वन (देवराई) प्राकृतिक और सांस्कृतिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं। जैवविविधता को बचाए रखने के लिए वनों का संरक्षण करना आवश्यक है। इन वनों के पेड़ काटने पर प्रतिबंध लगा होता है।

अहिल्यानगर जिले की संगमनेर तहसील में पेमगिरि किले के परिसर में एक विशाल बरगद का वृक्ष है। यह वृक्ष 'महावटवृक्ष' के रूप में प्रसिद्ध है। यह वृक्ष महाराष्ट्र में सबसे बड़ा और विशाल वृक्ष माना जाता है। इस वृक्ष को लोकसहभागिता के माध्यम से संरक्षित रखा गया है। स्वराज्य संकल्पक शहाजी राजे ने पेमगिरि किले पर स्वराज्य स्थापना का प्रयास किया था।

महावटवृक्ष-पेमगिरि

सालुमरदा थिमक्का

सालुमरदा थिमक्का : सालुमरदा थिमक्का कर्नाटक की पर्यावरणवादी कार्यकर्ता थीं। उन्होंने अपनी आयु के सौ वर्ष पूरे किए हैं। सालुमरदा का अर्थ वृक्षों की पंक्ति है। उन्होंने जीवन भर वृक्ष लगाए। प्रारंभ में उन्होंने ३८५ बरगद के वृक्ष लगाए। उनकी वृद्‌धि का ध्यान रखा। आगे चलकर उन्होंने पीपल, गुलर जैसे हजारों वृक्ष लगाए । वह कहती थीं – वृक्ष ही हमारी संतानें हैं। भारत सरकार ने उनके इस वृक्षारोपण कार्य के लिए उन्हें पद्‌मश्री सम्मान प्रदान किया।

संत तुकाराम

संत तुकाराम ने अभंग (सबद अथवा पद) में कहा है :

"वृक्षवल्ली आम्हा सोयरी वनचरे ।
पक्षी ही सुस्वरे आळविती ॥"

तुकाराम महाराज कहते हैं– "वृक्ष, लताएँ, वन के पशु–पक्षी ही हमारे सच्चे सगे–संबंधी हैं। पक्षी अपनी मधुर ध्वनि में गीत गा रहे हैं।"

प्रधानाचार्या विनय के साथ बातें करती हुई चौथी कक्षा में चली गईं। वहाँ चौथी कक्षा की पुस्तक निकाली और उसमें छपा छत्रपति शिवाजी महाराज का 'आदेशपत्र' दिखाती हुई विनय से बोलीं,' "छत्रपति शिवाजी महाराज के 'आदेशपत्र' द्‌वारा वृक्ष संवर्धन की उनकी नीति स्पष्ट होती है। वृक्षों के कारण हवा शुद्‌ध रहती है। भूमि के कटाव की रोक–थाम होती है। प्रदूषण कम होता है। वर्षा का जल रोका जाता है। हमें वृक्षों के कारण फल, सब्जियाँ, औषधि वनस्पतियाँ, लकड़ी आदि वस्तुएँ प्राप्त होती हैं। साथ ही, विविध पशु–पक्षियों को आश्रय मिलता है। वृक्षारोपण और वृक्षसंवर्धन करना प्रत्येक नागरिक का जिम्मेदारी है।"

यह सब कुछ सुनकर विनय ने कहा, "मैं स्वच्छता का कार्य करने से बचता था परंतु अब मैं स्वच्छता का महत्त्व समझ गया हूँ। साथ ही, वृक्षारोपण के लाभों की जानकारी भी मिल गई है। इसके आगे मैं व्यक्तिगत स्वच्छता के साथ–साथ परिसर की स्वच्छता और वृक्षारोपण के कार्यों में सबसे आगे रहूँगा।"

स्वाध्याय

प्र.१ उचित शब्द लिखकर वाक्य पूर्ण करो:

(१) २ अक्तूबर को .... जयंती मनाई जाती है।

(२) हजारों वर्ष पूर्व भारत में मोहेंजोदड़ो और .... सुंदर नगर थे।

(३) राष्ट्रसंत गाड़गे बाबा का जन्म अमरावती जिले के .... में हुआ।

(४) भारत सरकार ने .... को वृक्षारोपण कार्य के लिए पद्‌मश्री सम्मान प्रदान किया।

प्र.२ निम्नलिखित सारिणी पूर्ण करो :

स्वच्छता

व्यक्तिगत स्वच्छता	सार्वजनिक स्वच्छता
(१) ----------------------------	----------------------------
(२) ----------------------------	----------------------------
(३) ----------------------------	----------------------------
(४) ----------------------------	----------------------------
(५) ----------------------------	----------------------------

प्र.३ उचित जोड़ियाँ मिलाओ :

'अ' गुट	उत्तर	'ब' गुट
(१) विश्व पर्यावरण दिवस		(अ) वृक्षारोपण
(२) देवराई		(आ) आदेश पत्र
(३) छत्रपति शिवाजी महाराज		(इ) ५ जून
(४) सालुमरदा थिमक्का		(ई) ईश्वर के नाम पर आरक्षित वन

प्र.४ परिसर के वृक्षों के उदाहरण लिखो :

वृक्ष

- औषधि
- फल
- सब्जियाँ
- फूल

उपक्रम

- अभिभावकों की सहायता से बीजमाता राहीबाई पोपेरे की जानकारी एकत्रित करो।
- तुम अपने परिसर के स्वच्छता कर्मियों से मिलकर उनका साक्षात्कार लो।
- अंतरजाल की सहायता से महाराष्ट्र की देवराइयाँ और अभयारण्य की जानकारी इकट्ठा करो।
- हम जिन दलहनों का उपयोग करते हैं; वे और उनके बीज एकत्रित कर उनसे पौधे तैयार करो।

***

१२. राष्ट्रीय एकात्मता

प्रसंग १

पता है; एक दिन क्या हुआ? अलग-अलग रंग एक-दूसरे के साथ झगड़ा करने लगे। लाल रंग ने कहा, "मैं ही सबसे सुंदर रंग हूँ। मेरा रंग गुड़हल की तरह, उगते सूरज के समान है।" श्वेत रंग ने कहा, "नहीं.. मैं ही सुंदर हूँ। मैं शांति का रंग हूँ।" हरा रंग बोला, "बिल्कुल नहीं, मैं पेड़ों का रंग हूँ, पत्तों का हूँ। मेरे बिना तुम पृथ्वी की भी कल्पना नहीं कर सकते।" नीला रंग कहने लगा, "अरे वाह! तो क्या फिर तुम आकाश के बिना, समुद्र के बिना दुनिया की कल्पना कर सकते हो ?"

उसी समय हवा का झोंका उनसे बोला, "अरे। इस तरह झगड़ा मत करो। हमारे भारत देश के राष्ट्रध्वज को देखो। किस तरह अलग-अलग रंग एक-दूसरे के साथ रहते हैं। उनसे कुछ तो सीखेंगे। भारत का राष्ट्रध्वज हमारे देश की एकता, स्वतंत्रता और संप्रभुता का प्रतीक है।"

हमारे देश के विभिन्न प्रतीक हैं। ये प्रतीक हमारे बीच एकता की भावना को जगाए रखने में सहायता करते हैं। हमारे राष्ट्रीय मूल्यों की हमें याद दिलाते हैं। राष्ट्रध्वज की भाँति ही हमारा 'राष्ट्रगान' हमारी राष्ट्रीय एकात्मता का प्रतीक है। भारत का राष्ट्रगान 'जनगणमन' है। हम सभी भिन्न-भिन्न भाषाएँ बोलते हैं फिर भी यह राष्ट्रगान सभी को कंठस्थ है। राष्ट्रगान के चलते समय सभी को सावधान की स्थिति में खड़े रहकर राष्ट्रगान का सम्मान करना हम सभी का कर्तव्य है। साथ ही 'वंदेमातरम्' हमारा राष्ट्रीय गीत है।.

क्या तुम जानते हो?

भारतीय राष्ट्रध्वज के रंगों के अर्थ खोजो और लिखो :

केसरिया - ---

श्वेत - ---

हरा - ---

अशोक चक्र - यह गति और प्रगति का प्रतीक है। इसमें चौबीस आरे हैं।

हमारे देश में अलग-अलग लोग विभिन्न राज्यों में रहते हैं। भिन्न-भिन्न भाषाएँ बोलते हैं। विविध पर्व-त्योहार मनाते हैं। हम सब एक हैं और एक ही देश के नागरिक हैं।

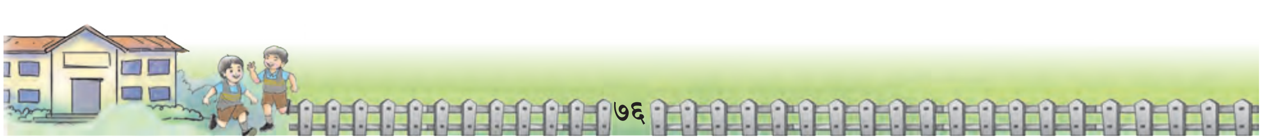

प्रसंग २

राष्ट्रीय एकात्मता के विषय में बहन जी ने कहा "कक्षा में चारों ओर देखो। हम एक-दूसरे से अलग दिखाई देते हैं फिर भी इस कक्षा में इकट्ठे पढ़ते हैं। कहानियाँ कहते हैं। गीत गाते हैं। कभी-कभी एक-दूसरे के साथ झगड़ते भी हैं। फिर भी हम उन्हें हल करते हैं। एक-दूसरे का ध्यान रखते हैं। एक-दूसरे का आदर-सम्मान करते हैं। हमारा भारत देश भी इसी कक्षा के समान 'विविधता से विभूषित' है। इस तरह हम अलग- अलग होकर भी एक देश में हमारा प्रेम-अपनापन से रहने, हम सब की पहचान 'भारतीय' के रूप में होने को ही 'राष्ट्रीय एकात्मता' कहते हैं।"

पढ़ो :

अनेक अंगों का मिलकर, बनता एक मनुष्य
अनेक रंगों का मिलकर, बनता एक इंद्रधनुष
अनेक फूलों से सजता यह फूलदान
अनेक भाषाओं में गाते, हम यह गान
अनेक संस्कृतियाँ और उत्सव, भिन्न हैं वेश
अनेक लोग मिलकर, बनाएँगे भारत देश।

बताओ तो!

प्रसंग ३

कल्पना करो, पाठशाला का नया वर्ष आरंभ हो गया है। तुम्हारी कक्षा में एक नये विद्‌यार्थी ने प्रवेश लिया है। उसकी मातृभाषा बांग्ला भाषा है। तुम उसके साथ किस प्रकार बातचीत करोगे? उसकी सहायता कैसे करोगे? कक्षा में उसे अपना बनाने के लिए क्या करोगे? इसपर शिक्षकों की सहायता से चर्चा करो।

चित्र रँगो :

राष्ट्रीय ध्वज

राष्ट्रीय पक्षी

राष्ट्रीय फल	राष्ट्रीय फूल
	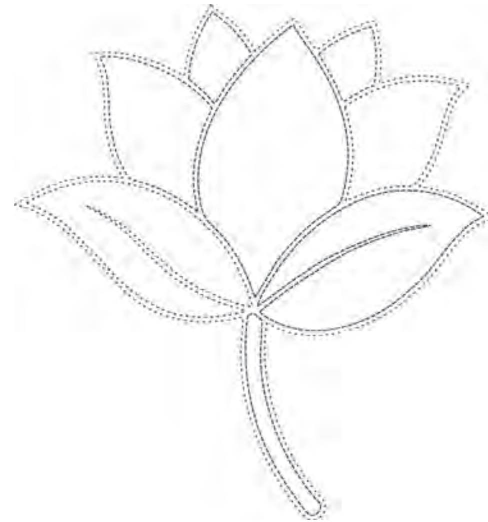

खोजो तो :

राज्यपक्षी, राज्यफल, राज्यपशु और राज्यफूल की जानकारी अंतरजाल की सहायता से खोजो।

१ मई १९६० ई. को महाराष्ट्र राज्य की निर्मिति हुई। १ मई को महाराष्ट्र में राज्यदिन के रूप में मनाया जाता है। जैसे राज्य का राज्यदिन होता है। वैसे ही राज्यगीत, राज्यपक्षी, राज्यफल, राज्यपशु और राज्यफूल आदि होते हैं।

जिस प्रकार राष्ट्रीय एकात्मता के रूप में भिन्न-भिन्न चिह्न और प्रतीक महत्वपूर्ण हैं, वैसे ही राष्ट्रीय पर्व-त्योहार भी महत्वपूर्ण हैं। १५ अगस्त १९४७ ई. को हमें स्वतंत्रता प्राप्त हुई। इसलिए १५ अगस्त के दिन को हम 'स्वतंत्रता दिवस' के रूप में मनाते हैं। २६ जनवरी १९५० ई से भारतीय संविधान को लागू किया गया। अतः २६ जनवरी के दिन को हम 'गणतंत्र दिवस' के रूप में मनाते हैं। ये सभी दिवस हम सभी भारतीय एकत्रित आकर मनाते हैं। इस दिवस पर देश भर में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है।

क्या तुम जानते हो ?

राकेश शर्माः वर्ष १९८४ में राकेश शर्मा भारत के प्रथम अंतरिक्षयात्री बने । उनसे तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने पूछा, "अंतरिक्ष से भारत कैसे दिखाई देता है?" राकेश शर्मा ने उत्तर दिया, "सारे जहाँ से अच्छा!"

(पाठ्यपुस्तक के आरंभ में दिए QR कोड़ के लिंक द्वारा राकेश शर्मा का video देखो)

स्वाध्याय

प्र.१ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो :

(१) भारत के राष्ट्रध्वज का वर्णन लिखो।

(२) भारत के प्रथम अंतरिक्षयात्री का नाम क्या है?

(३) राष्ट्रीय फूल कौन-सा है?

प्र.२ उचित विकल्प चुनकर लिखो :

(१) तिरंगा ध्वज पर ---------------------- है।

(अ) सुदर्शन चक्र (आ) अशोक चक्र (इ) परमवीर चक्र (ई) जल चक्र

(२) १५ अगस्त ----------------------

(अ) स्वतंत्रता दिवस (आ) संविधान दिवस (इ) महाराष्ट्र दिवस (ई) गणतंत्र दिवस

प्र.३ जोड़ियाँ मिलाओ :

'अ' गुट	'ब' गुट
(१) राष्ट्रीय पक्षी	(अ) जनगणमन
(२) राष्ट्रीय फल	(आ) वंदे मातरम्
(३) राष्ट्रीय गीत	(इ) आम
(४) राष्ट्रगान	(ई) मोर

प्र.४ अपनी मातृभाषा का नाम बताकर महाराष्ट्र के पड़ोसी राज्यों की भाषाओं के नाम लिखो।

प्र.५ पाठ्यपुस्तक के मुखपृष्ठ का निरीक्षण करो और उसमें भारत की विविधता को स्पष्ट करो।

उपक्रम

- राष्ट्रीय प्रतीकों की जानकारी प्राप्त करो और उनके चित्रों का संग्रह करो।
- देशभक्ति पर गीतों का संग्रह करो और उनका संग्रह चिपक कॉपी में करो ।
- हम जिस जिले में रहते हैं; उस जिले की सीमा पर स्थित २-३ जिलों में कौन-सी बोली भाषाएँ बोली जाती हैं, इसकी जानकारी अंतरजाल की सहायता से लिखो।

***

१३. चलो, सुनेंगे, बोलेंगे और समझेंगे

बताओ, चित्र में क्या दिखाई देता है?

- तुम्हारी पाठशाला में कौन-कौन-से दिनांकों पर ध्वजारोहण करते हैं?
- तुम ध्वजारोहण के लिए क्या-क्या तैयारी करते हो, इसकी गुट में चर्चा करो।
- दस रुपये का नोट लो। नोट पर छपे चित्र के बारे में अपने माता-पिता, शिक्षकों और अन्य लोगों के साथ चर्चा करो।

विद्‌यार्थी मित्रो, हमें दूसरों के माता-पिता और शिक्षकों के विचार शांतिपूर्वक सुनने चाहिए। हमें अपने विचार दृढ़तापूर्वक व्यक्त करने चाहिए। अपने विचार व्यक्त करते समय हमें दूसरों के विचारों का भी आदर करना चाहिए। परिणामतः हमारे नेतृत्व गुणों का विकास होता है।

सुनेंगे और बोलेंगे :

- राज्यगीत सुनो और एक सुर-ताल में गाओ ।
- ध्वजारोहण के समारोह में तुम कौन-कौन-सी घोषणाएँ देते हो, यह बताओ ।

निम्नलिखित प्रसंगों में तुम क्या करोगे?

- तुम्हारा मित्र बीमार है।
- मित्र की दादी को कम दिखाई देता है। उन्हें सड़क के उस पार जाना है।
- तुम्हारे परिवार का एक सदस्य लगातार मोबाईल देखता है।

समझो :

एकता में बल :

गौरैयाँ और शिकारी

बाल मित्रो, क्या तुमने यह कहानी सुनी है?

एक घने जंगल में एक बड़े बरगद के पेड़ पर कई गौरैयाँ रहती थीं। उस बरगद के वृक्ष को लालसुर्ख बरगद के फल लगते। गौरैयाँ उन फलों को चट कर जातीं। इस कारण वहाँ अनगिनत गौरैयाँ रहतीं। उन गौरैयाँ में एक बुद्धिमान और अनुभवी गौरैया थी। वह सदैव सभी से इकट्ठा रहने को कहती थी।

एक दिन जंगल में एक शिकारी आया। उसने देखा, उस बरगद के पेड़ पर अनगिनत गौरैयाँ हैं। उसने सोचा कि वह इन गौरैयों को पकड़ेगा। इसके लिए उसने एक युक्ति सोची। उसने उस पेड़ के नीचे गौरैयों के लिए बहुत सारे दाने बिखेर दिए और उनपर जाल बिछाकर वह समीप ही गौरैयों की राह देखता हुआ छुपकर बैठ गया।

कुछ समय के बाद गौरैयाँ दाना चुगने के लिए नीचे उतर आईं। वे सारी गौरैयाँ अब दाना चुगने में मग्न हो गईं। अनजाने ही गौरैयाँ शिकारी के बिछाए हुए जाल में फँस गईं। अरे रे! अब क्या करें? उन्हें कुछ नहीं सूझ रहा था। अब गौरैयाँ जाल में से बाहर निकल आने के लिए छटपटाने लगीं परंतु सब व्यर्थ था। सारी गौरैयाँ भयभीत हुईं और एक-दूसरे को देखने लगीं।

गौरैयों के प्रयास जारी थे परंतु वे उनमें सफल नहीं हो पा रही थीं। अंत में बुद्धिमान गौरैया ने सबसे कहा, ‘‘हम सभी अपनी चोंचों से जाल पकड़कर एक ही समय में उड़ेंगी। उसकी बात सभी को जँच गई।” सभी गौरैयों ने पूरी शक्ति लगाई और जाल लेकर एक ही समय में आकाश में उड़ने लगीं।

शिकारी चक्कर में पड़ गया। वह जाल पकड़ने के लिए उनके पीछे दौड़ने लगा परंतु गौरैयाँ उसके हाथ नहीं आईं। दौड़ते -दौड़ते वह नीचे गिर गया। गौरैयाँ थोड़ी दूरी पर बैठे चूहा भैया के पास गईं और

सहायता के लिए उसे बुलाने लगीं। चूहा भैया उन्हें देखकर अपने मित्रों के साथ गौरैयों की सहायता करने दौड़ा। सभी चूहों ने पूरा जाल कुतरकर संकट में फँसीं उन गौरैयों को कुछ ही क्षणों में मुक्त किया। सभी गौरैयों ने चूहों को धन्यवाद दिया।

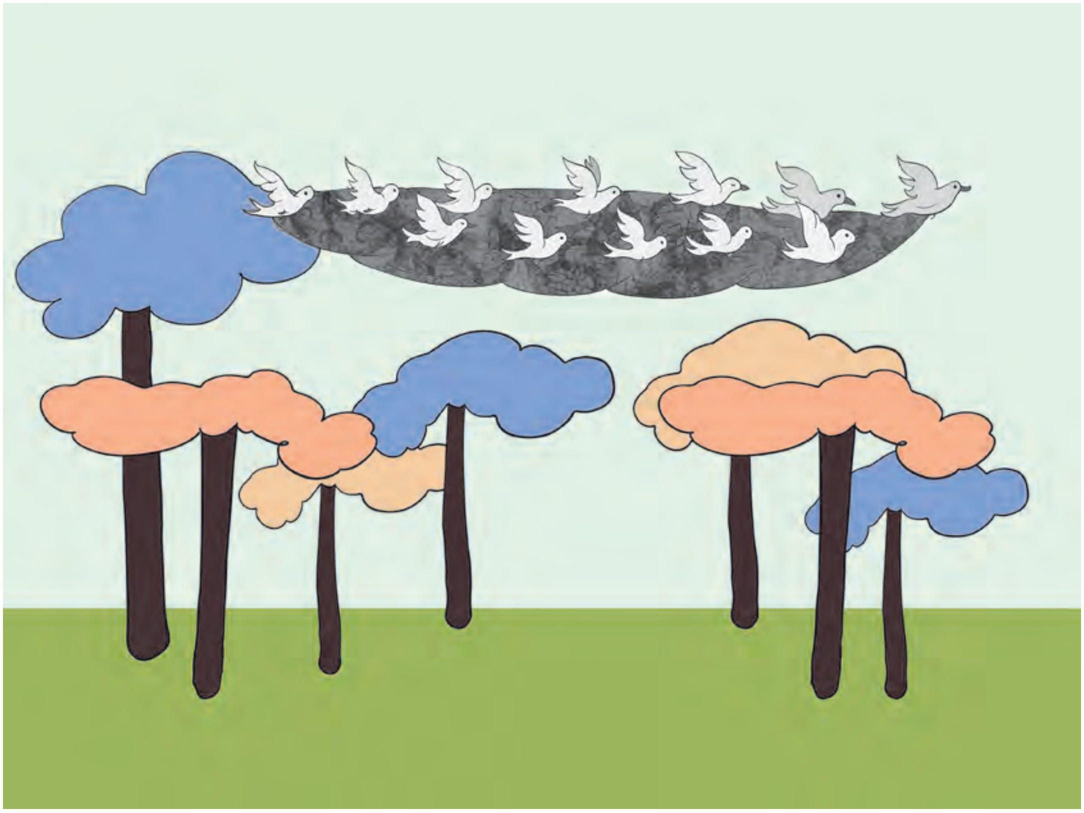

बताओ तो!

इस कहानी से हमने क्या सीखा?

इस चित्र को शिक्षकों की सहायता से समझो :

यह चित्र कोल्हापुर के निकट खिद्रेश्वर मंदिर में बनाए गए शिल्प का है। दो हंसों ने अपनी चोंचों में एक लकड़ी पकड़ रखी है। है। उस लकड़ी को एक कछुए ने भी पकड़ रखा है। ऊपरी मुद्दों के आधार पर क्या कोई कहानी बताई जा सकती है? शिक्षक-अभिभावकों की सहायता से कहानी तैयार करो।

खिद्रेश्वर मंदिर में शिल्प

यही बात हमपर भी लागू होती है। हमारे देश में यदि हम एकजुट होकर रहेंगे तो असंभव प्रतीत होने वाली बातें हम सहजता से और शीघ्र कर सकेंगे, सकेंगे न?

क्या तुम जानते हो ?

१९ वर्ष से कम विश्वविजेता महिला क्रिकेट टीम

भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने विश्वकप क्रिकेट विजेतापद प्राप्त किया

वैश्विक दृष्टिहीन विश्वकप क्रिकेट प्रतियोगिता –भारतीय महिला विजेता टीम

वर्ष २०२५ में विश्व स्तर पर महिला क्रिकेट विश्वकप की विविध प्रतियोगिताओं में भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने देदीप्यमान प्रदर्शन करते हुए विजेतापद प्राप्त किया है। यह उपलब्धि हमारे देश के लिए गौरव की बात है। क्रिकेट जैसे खेल में एकजुट होकर यश प्राप्त करके देश का सिर गर्व से ऊँचा किया जा सकता है; ये उसके उदाहरण हैं। साथ ही; क्रिकेट खेलते समय दृष्टिहीन महिलाओं द्वारा यह उपलब्धि पाना बहुत ही प्रशंसनीय कार्य है।

स्वाध्याय

प्र.१ निम्नलिखित प्रसंगों में तुम कैसा आचरण करोगे, यह लिखो :

(१) अपने विचार व्यक्त करते समय– ....

(२) जब बड़े–बुजुर्ग हमें मार्गदर्शन करते हैं – ....

(३) पाठशाला में राष्ट्रगान के चलते समय – ....

(४) बिस्कुट, चॉकलेट खाने के पश्चात उसके रैपर्स (कागज) तुम्हारे पास हैं – ....

(५) तुम्हारे संपर्क में दिव्यांग व्यक्ति के आने पर – ....

प्र.२ निम्नलिखित चित्रों में क्या दिखाई देता है, उसपर अपने विचार लिखो।

(१) गीला कूड़ा और सूखा कूड़ा डिब्बों के आस–पास कूड़ा इकट्‌ठा हुआ है।

....

....

कूड़ा

(२) बच्चा वृक्षारोपण कर रहा है।

....

....

वृक्षारोपण

(३) दिव्यांग विद्‌यार्थिनी को उसके मित्र व्हील चेयर से पाठशाला से ले जा रहे हैं।

....

....

दिव्यांग विद्‌यार्थी

उपक्रम

- भारतीय महिला खिलाड़ियों के चित्र एकत्रित करो। चिपक कॉपी में चिपकाओ और उनके नाम लिखो।
- ईसप नीति और पंचतंत्र पुस्तकों की कहानियाँ प्राप्त करो। कक्षा में शिक्षकों और अपने अभिभावकों से उन कहानियों को बताओ।
- मूल्यवर्धन उपक्रमों में जो प्रसंग तुम्हें अच्छा लगा,म उसकी जानकारी लिखो।

***

प्रिय विद्यार्थी मित्रो और सहेलियो,

यदि तुम्हें कोई अयोग्य ढंग से स्पर्श करता है और तुम असमंजस या असहज अनुभव करते हो तो तुम कदापि चुप मत रहो । ऐसी घटना होने पर तुम्हें निम्न बातें करना आवश्यक है ।

१) स्वयं को दोष मत दो ।

२) जिन लोगों पर तुम्हें विश्वास है ; उनसे घटित घटना के बारे में बताओ ।

३) तुम पॉक्सो ई-बॉक्स के माध्यम से तुम्हारे अधिकारों की रक्षा हेतु स्थापित राष्ट्रीय आयोग को भी सूचित कर सकते हो ।

जब कोई तुम्हें अनुचित/अयोग्य ढंग से छूता है/स्पर्श करता है तब तुम्हें बुरा लग सकता है । तुम परेशान और भ्रमित हो सकते हो । तुम स्वयं को असहाय महसूस कर सकते हो परंतु तुम्हें 'बुरा' लगने का कोई कारण नहीं होना चाहिए क्योंकि ऐसी घटना में तुम्हारा कोई दोष नहीं होता है ।

इस बटन को दबाओ ।

POCSO यह e-box ncpcr@gov.in इस वेबसाईट पर उपलब्ध है ।

यदि तुम्हारी आयु १८ वर्ष से कम है और तुम्हें किसी ने सताया है/ तंग किया है और तुम कुछ समझ नहीं पा रहे हो, चिंतित अथवा तनावग्रस्त महसूस कर रहे हो अथवा इस प्रकार की परेशानी अनुभव करने वाले किसी लड़का/लड़की को जानते हो तो तुम १०९८ (दस नौ आठ) पर संपर्क करो । ऐसा करने से तुम्हारा और तुम्हारे मित्रों/सहेलियों का जीवन बदल सकता है ।

चाइल्ड लाइन १०९८ (दस नौ आठ) : यह २४ घंटे टोल फ्री राष्ट्रीय आपातकालीन फोन सेवा है । महिला एवं बालविकास मंत्रालय द्वारा पीड़ित लड़कों/लड़कियों के लिए यह उपक्रम चाइल्ड लाइन फाउंडेशन ने प्रारंभ किया है ।

नए समाज की ओर
Towards a new dawn

विद्यार्थियों को उनके आयुगुट के अनुसार अच्छा स्पर्श और बुरा स्पर्श पहचानने के लिए शारीरिक एवं भावनिक दृष्टि से मार्गदर्शन करें ।

महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व
अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे.

आपल्या सभोवतालचे जग भाग-२
इयत्ता तिसरी (हिंदी माध्यम)

(नि:शुल्क वितरण के लिए)

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha